ग्वालियर राज्य
के
अभिलेख

लेखक

हरिहर निवास द्विवेदी, एम. ए., एल. एल. बी.

प्रकाशक :—

मध्य भारत पुरातत्व विभाग,

ग्वालियर.

वि० सं० २००४-१९४७ ई०.

मा वृत्ति
० प्रति

मूल्य ५)

मुद्रक.—

सुलेमानी प्रेस, मछोदरी पार्क,

बनारस.

ग्वालियर-राज्य के अभिलेख

लेखक—

हरिहरनिवास द्विवेदी एम० ए०, एल०-एल० बी०

विद्यामंदिर, मुरार (ग्वालियर)

लेखक—'ग्वालियर राज्य में मूर्तिकला', 'कलयन विहार या बाघगुहा', 'मध्यकालीन कला', 'विक्रमादित्यः ऐतिहासिक विवेचन', 'प्राचीन भारत की न्याय-व्यवस्था', 'महात्मा कबीर', 'पंत और गुंजन', 'लक्ष्मीबाई' आदि । सम्पादक —विक्रम—स्मृति—ग्रन्थ ।

मूल्य १०)

पुरातत्त्व विभाग ग्वालियर-राज्य के तत्वावधान में प्रकाशित

मुद्रक—
सुलेमानी प्रेस, मछोदरी पार्क, बनारस।

ग्वालियर-राज्य के अभिलेख

समर्पण

भारती और भारत की उपासना के
उत्तराधिकारदाता पुण्यश्लोक पिता
पं० पन्नालाल द्विवेदी की
पवित्र स्मृति में।

भूमिका

पुरातत्त्व-शास्त्रियों के अथक और सतर्क प्रयास से कण-कण एकत्रित की हुई सामग्री पर इतिहास के भवन की भित्तियों का निर्माण होता है। प्राचीन मुद्राएँ, अभिलेख, स्थापत्य आदि के भग्नावशेष वे सामग्रियाँ हैं, जिनके सहारे इतिहास का वह ढाँचा तयार होता है, जिसको दृढ़ आधार मान एवं पुराण, काव्य, अनुश्रुति आदि का सहारा लेकर इतिहासकार अत्यन्त धुँधले अतीत के भी सजीव एवं विश्वसनीय चित्र प्रस्तुत करता है। पुरातत्व की सामग्री में अभिलेखों को विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

अपने पश्चात् भी अपने अथवा अपने किसी प्रियजन के किसी कार्य की स्मृति का अस्तित्व रहे तथा उसका साक्ष्य संसार के सामने स्थायी रूप से रहे इसी मनोवृत्ति ने अभिलेखों की प्रथा को जन्म दिया। कोई समय था जब राजाज्ञाएँ भी अमिट अक्षरों में प्रस्तर-पटों पर अंकित कर दी जाती थीं और चन्द्र-सूर्य के प्रकाशमान रहने तक किसी दान को स्थायी रखने के लिए दान-पत्रों को भी ताम्रपत्र आदि स्थायी आधार पर अंकित किया जाता था। इन विविध अभिलेखों में जहाँ हमें जन-मन के इतिहास का ताना-बाना मिलता है, वहाँ देश के राजनीतिक इतिहास का निर्माण भी होता है। जनहित के कार्यों के साक्षीभूत अभिलेखों के उत्कीर्ण करानेवाले अनेक व्यक्ति उस राजा की प्रशंसा एवं राजवंश का वर्णन भी कर देते थे, जिनके समय में वह कार्य हुआ और इस प्रकार इन अभिलेखों के सहारे राजवंशों के इतिहास की अनेक गुत्थियाँ अनायास सुलझ जाती हैं। अस्तु।

यहाँ पर यह स्पष्ट कर देना नितान्त आवश्यक है कि किसी भी भौगोलिक सीमा के भीतर पाये गये अभिलेखों का अध्ययन कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता; विशेषतः ग्वालियर के अभिलेखों का, जहाँ का पुरातत्व विभाग सक्रिय है और प्रतिवर्ष अनेक नवीन अभिलेखों की खोज कर डालता है। अतएव हमने अपने अध्ययन की एक सीमा निर्धारित कर ली है। विक्रमीय संवत् के जहाँ २००० वर्ष समाप्त हुए हैं हमने उसी किनारे पर खड़े होकर, उस समय तक देखे गये अभिलेखों पर दृष्टिपात किया है।

यह दृढ़तापूर्वक कहा जा सकता है कि यह अभिलेख-सम्पत्ति ग्वालियर की सीमाओं में आबद्ध भूखण्ड की दृष्टि से ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण भारतवर्ष

के राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्व-पूर्ण है। विगत अर्धशताब्दी से इन मूक प्रस्तर एवं धातु-खण्डों को खोजकर उन्हें वाणी प्रदान करने का कार्य चल रहा है। जब से भारतवर्ष में पुरातत्त्व विभाग स्थापित हुआ है तभी से इन अभिलेखों की खोज प्रारम्भ हुई है। वास्तव में जिस भू-सीमा के भीतर अवन्तिका, विदिशा, दशपुर, पद्मावती आदि के भग्नावशेष अपने अंक में प्राचीन भारत की गौरव-गाथा को लिये सोये पड़े हों उसकी ओर पुरातत्त्ववेत्ताओं की प्रारम्भ से ही दृष्टि जाना अत्यन्त प्राकृतिक है।

यद्यपि संवत् १९८० से ग्वालियर-राज्य का पुरातत्त्व विभाग अपने वार्षिक विवरण में प्रतिवर्ष के खोज किये हुए अभिलेखों की सूची दे देता है, परन्तु उसके पूर्व भी अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य हो चुका है। कनिंघम, फ्लीट प्रभृति अनेक पुरातत्त्व शास्त्री इसके पूर्व भी अत्यन्त महत्वपूर्ण अभिलेखों की खोज कर चुके थे जो तत्सम्बन्धी अनेक रिपोर्टों, नियतकालिकों आदि में प्रकाशित हो चुके थे।

इस सब के अतिरिक्त संवत् १९७० से संवत् १९७९ तक खोज किये गये अभिलेखों की सूचियाँ ग्वालियर पुरातत्त्व विभाग में अप्रकाशित रखी हुई हैं।

जितनी भी सामग्री मुझे प्राप्त हो सकी उन सबके सहारे मैंने समस्त अभिलेखों की सूची तयार करने का संकल्प किया। यह तो निश्चित ही है कि इस कार्य में मुझे सफलता मिलना असंभव था यदि ग्वालियर पुरातत्त्व विभाग के अधिकारी उस ज्ञानराशि के द्वार मेरे लिए उन्मुक्त न कर देते, जो उनके विभाग में सुरक्षित है।

सबसे पहले मैंने तिथियुक्त अभिलेखों को छाँट कर उन्हें तिथिक्रम से लगाया। मेरे संमुख पाँच संवत्सरों युक्त अभिलेख थे—विक्रमीय, गुप्त, शक, हिजरी एवं ईसवी। जिन अभिलेखों में विक्रमीय संवत्सर के साथ शक अथवा हिजरी संवत था उन्हें मैंने विक्रमीय संवत्सर के क्रम में ही सम्मिलित कर लिया। इनकी संख्या १ से ५५० तक हुई। उसके पश्चात् के तीन अभिलेख लिए गये जिन पर गुप्त संवत् पड़ा है। केवल शक संवत् युक्त १ अभिलेख था, वह भी अत्यन्त महत्वहीन था, अतः उसे छोड़ दिया।

तत्पश्चात् हिजरी सन् युक्त अभिलेख लिये गये। केवल ईसवी सन् युक्त अभिलेख इतने आधुनिक हैं कि उन्हें इस संग्रह में एकत्रित करने की उपयोगिता मेरी समझ में न आ सकी।

तिथिहीन अभिलेखों में कुछ तो तिथियुक्त अभिलेखों से भी अधिक महत्त्व के हैं। उनमें अनेक ऐसे हैं, जिनमें किसी शासक या अन्य इतिहास में ज्ञात व्यक्तियों के नाम आये हैं। अनेक ऐसे भी हैं, जिनमें राजाओं के शासन के वर्ष दिये हुये हैं। इनमें कुछ शासकों या व्यक्तियों का समय ज्ञात है, कुछ के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं। अतएव यह संभव नहीं हुआ कि इन्हें काल-क्रम में रखा जा सकता। अतः इन अभिलेखो को पहले तो प्राप्ति-स्थान के जिलों के अनुसार बाँटा गया। जिलों को अकारादि क्रम में लिखकर फिर उनके प्राप्ति-स्थान के अकारादि क्रम से सब अभिलेखों को लिख दिया गया है।

अब वे अभिलेख बचे जिनमें न तो तिथि थी और न किसी शासक या प्रसिद्ध व्यक्ति का नाम। उनमें से अनेक ब्राह्मी तथा गुप्त लिपि के हैं यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इन लिपियों का उपयोग नागरी के पूर्व होता था, अतः पहले ब्राह्मी तथा गुप्त लिपियों वाले अभिलेखों को लिया गया। मोटे रूप से यह कह सकते हैं कि सम्राट् अशोक से लेकर पिछले गुप्तों तक के समय के ये अभिलेख हैं।

शेष अभिलेखों में से केवल २५ को मैंने इस सूची में संग्राह्य समझा। उन्हें जिलों और प्राप्ति-स्थानों के अकारादि क्रम से रखा गया है। इस प्रकार इस सूची में ७५० अभिलेख हैं।

यहाँ एक बात सूचित कर देना उपयोगी होगा। संवत् १९७० से संवत् २००० वि० तक के ग्वालियर-पुरातत्त्व विभाग की सूचियों में कुल अभिलेखों की संख्या ११४० है। इनके अतिरिक्त प्रायः ५० अभिलेख ऐसे भी हैं जिनकी सूचना अन्य स्रोतों से मिली है। फिर भी इस सूची में केवल ७५० अभिलेख होने के दो कारण हैं। एक तो उक्त सूचियों में अभिलेख दोहरायें गये हैं, दूसरे कुछ ऐसे अभिलेख भी सम्मिलित हैं जिनकी पूरी जानकारी नहीं मिली और जिनका किसी प्रकार का महत्व नहीं है। इन सबको निकाल कर ही यह सूची बनी है।

इस सूची की सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि मैं सब अभिलेख या उनका पाठ स्वयं नहीं देख सका हूँ। यह कार्य तभी पूर्ण हो सकेगा जब कि प्रायः सभी अभिलेखों के प्रामाणिक पाठ भी प्रकाशित किये जा सकेंगे। ग्वालियर पुरातत्त्व विभाग के उत्साही अधिकारियों के होते यह कार्य असंभव नहीं है।

अंत में छह परिशिष्ट दिये गये हैं। पहले परिशिष्ट में अभिलेखों के प्राप्ति-स्थान अकारादि क्रम से दिये गये हैं। इन स्थानों पर किस किस क्रम-संख्या के

अभिलेख प्राप्त हुए हैं, यह भी सूचित कर दिया गया है। दूसरे परिशिष्ट में उन स्थलों का उल्लेख है जहाँ मूल स्थलों से हटे हुए अभिलेख रखे हुए हैं। तीसरे परिशिष्ट में वे सब भौगोलिक नाम दिये गये हैं, जो इन सूचियों में आये हैं। इस प्रकार ग्राम, नदी, नगर, पर्वत आदि के प्राचीन नाम इसमें आ गये हैं। चौथे परिशिष्ट में प्रसिद्ध राजवंशों के अभिलेखों की संख्याएँ दी गई हैं। पाँचवें परिशिष्ट में राजा, दाता, दानग्रहीता, निर्माणक, लेखक, कवि, उत्कीर्णक आदि व्यक्तियों के नामों की सूची दी गयी है। छठवें परिशिष्ट में एक मानचित्र है।

इस सूची के पूर्व एक प्रस्तावना भी लगा दी है। इस प्रस्तावना के चार खण्ड हैं: प्रथम खण्ड में इन अभिलेखों के विषय में व्यापक जानकारी देने का प्रयास किया है। दूसरे खण्ड में प्राप्त अभिलेखों के आधार पर ग्वालियर का प्रादेशिक राजनीतिक इतिहास संक्षिप्त रूप में दिया गया है। इस अंश को लिखने में मैंने अन्य पुस्तकों के अतिरिक्त स्व० डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल एवं श्री जयचन्द्रजी विद्यालंकार के ग्रंथ 'अन्धकारयुगीन भारत' तथा 'भारतीय इतिहास की रूप-रेखा' से सहायता ली है। ग्वालियर पुरातत्त्व विभाग के अवकाश-प्राप्त डायरेक्टर श्री मा० वि० गर्दे के बीस वर्ष के स्तुत्य प्रयास का भी उपयोग इस पुस्तक में है। यह इतिहास तोमरवंश पर लाकर समाप्त कर दिया गया है। राजपूत राज्यों के समाप्त होकर सुलतानों और मुगलों के राज्य के स्थापन की कहानी मैंने अन्यत्र के लिए सुरक्षित रखी है। तीसरे खण्ड में उन भौगोलिक नामों का विवेचन दिया गया है, जो अभिलेखों में आये हैं। यह भाग मराठी 'विक्रम स्मृति-ग्रंथ' में लेख के रूप में भी छप चुका है। चौथे खण्ड में धार्मिक इतिहास का संक्षिप्त विवेचन है। यह सब प्रयास केवल सूचक है, अभी इसको अधिक विस्तार की आवश्यकता है।

इस प्रकार के प्रादेशिक अध्ययन के महत्त्व पर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। इससे न केवल एक प्रदेश के सांस्कृतिक गौरव का प्रदर्शन होगा वरन् भारतीय इतिहास के निर्माण में भी सहायता पहुँचेगी।

यह पुस्तक इस क्रम की मेरी चार पुस्तकों में से एक है। ग्वालियर की पुरातत्त्व सम्बंधी सामग्री के अध्ययन के फलस्वरूप मैंने चार पुस्तकें लिखने का संकल्प किया। 'ग्वालियर-राज्य के अभिलेख' यह प्रकाशित हो रही है; 'ग्वालियर राज्य की मूर्तिकला' का आधा अंश 'ग्वालियर राज्य में प्राचीन मूर्तिकला' के नाम से निकल चुका है। बाघ-गुहा सम्बंधी पुस्तक के अंश लेख

रूप में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निकल रहे हैं। चौथी पुस्तक स्थापत्य पर अवकाश मिलने पर लिखूँगा।

संयोग ऐसा आया कि हिन्दी की सेवा का अवसर देखकर मुझे ग्वालियर-शासन की नौकरी में जाना पड़ा। अधिक काम करके भी उसमें इतना अवकाश मिलता था कि पिछले सार्वजनिक जीवन की व्यस्तता की पूर्ति उससे न हो पाती थी और उन सूने क्षणों में दुर्वह भार को कम करने के लिए मैंने पुरातत्त्व की ओर दृष्टि डाली और मुझे समय के सार्थक उपयोग का अत्यन्त सुन्दर साधन प्राप्त हो गया। इस प्रकार इस दिशा में जो कुछ जैसा भी मैं कार्य कर सका हूँ उसके लिए मैं ग्वालियर-शासन का आभारी हूँ।

विक्रम-स्मृति-ग्रंथ के संचालकों का स्मरण मैं यहाँ अत्यन्त आभार पूर्वक कर देना अपना सौभाग्य मानता हूँ। मेजर सरदार कृष्णराव दौलतराव महाडिक के कृपापूर्ण सहयोग ने उक्त ग्रन्थ में आदि से अन्त तक कार्य करने का मेरा उत्साह अक्षुण्ण रखा और उसके साथ साथ इस कार्य को भी प्रगति मिलती रही।

अपने इस प्रयास की सफलता मैं उसी अनुपात में मानूँगा, जिसमें कि यह पुस्तकें भारतीय सांस्कृतिक गौरव के प्रदर्शन एवं उसमें मेरे इस प्रदेश द्वारा दिये गये अंशदान की महत्ता पर प्रकाश डाल सकें।

मैं अपने अनेक कृपालु एवं समर्थ मित्रों के, इस पुस्तक को अंग्रेजी में लिखने के, आग्रह को पूरा न कर सका। उनकी आज्ञा का पालन न कर सकने का मुझे खेद है, परंतु अपने संकल्प के औचित्य का विश्वास है।

अंत में मैं अपने सहयोगियों को धन्यवाद देता हूँ जिनके द्वारा मुझे इस सूची को तयार करने में प्रोत्साहन अथवा सहयोग मिला है। पुरातत्व विभाग के भूतपूर्व डायरेक्टर श्री मो० ब० गर्दे बी० ए० व श्री कृष्णराव घनश्यामराव बक्शी, बी० ए० एल-एल० बी० ने मुझे इस दिशा में पूर्ण सहायता एवं प्रोत्साहन दिया हैं और वर्तमान डायरेक्टर श्री डा० देवेन्द्र राजाराम पाटील एम० ए०, एल-एल० बी०, पी० एच-डी० के सुझावों ने इस अभिलेख-सूची को अधिक उपयोगी बना दिया है। मेरे अनुज श्री उदय द्विवेदी 'साहित्य-रत्न' तथा मेरे प्रिय शिष्य श्री ननूलाल खन्डेलवाल 'साहित्यरत्न' ने इसके कार्य में मेरा बहुत हाथ बटाया है।

विद्यामंदिर,
मुरार
विजयादशमी सं. २००४ वि०

हरिहरनिवास द्विवेदी

विषय-सूची

———

प्रस्तावना

प्रारंभिक

किसी प्रदेश की अभिलेख-सम्पत्ति पर एक व्यापक दृष्टि डालने से ज्ञान-वर्धन के साथ साथ मनोरंजन भी कम नहीं होता। इन मूक प्रस्तरों की भाषा को समझ लेने के पश्चात् न केवल राजवंशों के क्रम को ही जाना जा सकता है वरन् तत्कालीन सामाजिक आचार-व्यवहार आदि पर भी प्रकाश पड़ता है। ग्वालियर राज्य में अभिलेख बहुत अधिक संख्या में पाए गए हैं और उनका पूर्ण उपयोग होने पर इस प्रदेश का प्राचीन इतिहास दृढ़ आधारों पर निर्मित होगा।

अभिलेखों के आधार—ईंट, पत्थर ताम्रपत्र आदि का अध्ययन एवं उनके खोज की कहानी भी अनेक तथ्यों पर प्रकाश डालती है। तुमेन की एक पुरानी मस्जिद के खंडहरों में गुप्त संवत् ११६ का अभिलेख (५५२) प्राप्त हुआ है, जिसमें 'देवनिकेतन' के निर्माण का उल्लेख है। इस प्रस्तर-खंड का लेख जहाँ गुप्त-राजवंश पर प्रकाश डालता है, वहाँ इसके प्राप्तिस्थान की मध्यकालीन धार्मिक उथल-पुथल की कहानी कहता है। इसी प्रकार भेलसे की बीजामंडल मसजिद में मिले अभिलेखों में चर्चिका देवी का उल्लेख (५५ ,६५) है जिससे ज्ञात होता है कि वह कभी चर्चिका देवी का मन्दिर था। इस देवी का नाम 'विजया' भी होगा और यह विजया का मन्दिर 'बीजा मण्डल' मसजिद बन गया। इस पर रत्नसिंह (७४५), देवपति (७४६) आदि हिन्दू यात्रियों के लेख भी मिले हैं।

अभिलेखों को उत्कीर्ण करने के कारण भी अनेक हैं। पवाया को गुप्त-कालीन ईंट पर संभवतः कारीगर का नाम लिखा है। उस श्रमजीवी को अपने नाम को बहुत समय तक जीवित रखने की आकांक्षा की पूर्ति का यही साधन दिखाई दिया। यशोधर्मन-विष्णुवर्धन के विजय-स्तंभ केवल विजय-गाथाओं को अमरत्व प्रदान करने के लिए शिव-मन्दिर के द्वार पर खड़े किए ज्ञात होते हैं। अशोक ने इन प्रस्तर-खण्डों की दृढ़ता का उपयोग प्रजा को राजाज्ञाएँ विज्ञापित करने के लिए किया था। इस प्रणाली पर राजाज्ञाओं के रूप में अधिक प्राचीन अभिलेख इस राज्य में नहीं मिले हैं। प्रस्तर स्तम्भों पर कुछ मनोरंजक राजाज्ञाएँ आगे मध्यकाल में मिली हैं। वि० सं० १८४४ के अभिलेख (५२३) में बेगार बन्द किए जाने की आज्ञा है। इस सम्बन्ध में भेलसे का तिथि रहित स्तंभलेख (७५७) अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसमें कोलियों से बेगार न ली जाने के विषय में शाही फरमान है। जनश्रुति यह है

कि यह फरमान आलमगीर बादशाह ने खुदवाया है। दस्तकारों के संरक्षण की प्रथा का जो उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलता है, उसका रूप इस मुगल सम्राट् के फरमान में भी मिलता है। शिवपुरी का 'पातशाह' का 'हुकुम फरमान' (७०७ तथा ५८२ भी उल्लेखनीय है। उस समय यह राजाज्ञाएँ फारसी के साथ-साथ लोकवाणी हिन्दी में भी लिखी जाती थी। नरवर का महाराज हरिराज का यात्रियों के साथ सद्व्यवहार करने का आदेश (५२४) भी यहाँ उल्लेखनीय है।

अभिलेखों के प्राप्तिस्थल स्तूप, मंदिर, मूर्तियाँ, यज्ञस्तंभ, मसजिद, मकबरे, शिलाएँ, मकान, महल, किले, सतीस्मारक, तालाब, कुएँ, बावड़ी, छत्री आदि हैं। कहीं-कहीं केवल आदेश देने के लिए भी प्रस्तर-स्तंभों पर लेख खोद दिये गए हैं। अत्यधिक व्यापक रूप में अभिलेख स्तूप, मन्दिर मस्जिद आदि धार्मिक स्थानों से सम्बन्धित मिलते हैं। किसी मन्दिर के निर्माण का उल्लेख करने के लिए, किसी मूर्ति की स्थापना का उल्लेख करने के लिए, किसी दान की घटना को शताब्दियों तक स्थिर करने के लिए लिखे गए अभिलेख मिले हैं। देवालय राजाओं ने, उनके अधीनस्थ शासकों अथवा धनपतियों ने बनवाये और उनके सम्बन्धित अभिलेखों में शासक का नाम तथा उसका वंश-वृक्ष भी दे दिया। उदयगिरि एवं तुमेन के मन्दिर-निर्माण-कर्ता सामन्त और श्रेष्ठियों ने पुण्यलाभ तो किया ही साथ ही अपने नरेशों के प्रति अज्ञात रूप से बड़ा उपकार किया। आज के इतिहास-प्रेमी उनके उल्लेखों के आधार पर राजवंशों एवं घटनाओं का क्रम निश्चित करते हैं। बेसनगर के विष्णुमन्दिर के स्तंभ-लेखों (६६२ तथा ६६३) ने राजनीतिक एवं धार्मिक इतिहास में प्रकाश-स्तम्भों का कार्य किया है।

आगे चलकर मुसलमानों के अधिकांश अभिलेख मस्जिद, ईदगाह, मकबरे आदि के बनवाने से ही सम्बन्धित हैं। पहले कुरान या हदीस की आयत देकर फिर मस्जिद आदि के निर्माण का हाल लिखने की साधारण परिपाटी थी।

दानों का उल्लेख दो चार स्थलों पर अत्यधिक पाया जाता है। इसमें सबसे आगे उदयपुर का उदयेश्वर मन्दिर है। वहाँ अनेक दिशाओं के भक्त आकर श्रद्धानुसार दान देते रहे और संभवतः दान के परिमाण में ही मन्दिर के पुजारी दाता का उल्लेख मन्दिर की दीवारों पर तथा स्तंभों आदि पर करने की अनुमति देते रहे।

मन्दिरों के निर्माण के पश्चात् हम उन दानों को ले सकते हैं जो राजाओं ने अक्षयतृतीया, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण आदि अवसरों पर पुण्यार्जन करने के लिए दिये। इन से दान प्राप्त करनेवालों का तो कुछ समय के लिए उपकार हुआ

ही होगा, परन्तु आज यह ताम्रपत्र हमारे इतिहास की अनेक गुत्थियाँ सुलझा देते हैं। माहिष्मती के राजा सुबंधु और उनके द्वारा दान किया गया दासिलक पल्ली ग्राम और दानगृहीता भिक्षु सब चले गये परन्तु उनके ताम्र-पत्र (६-८) ने हमें यह बतला दिया कि हमारी बाघ की गुहाएं जहाँ यह ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है, सुबन्धु के समय के पूर्व की हैं। मालवे के परमारों ने तो अनेक ताम्रपत्रों में अपना वंश-वृक्ष आगे के इतिहासज्ञों के उपयोग के लिए छोड़ दिया। वास्तव में उस दानी वंश के ये दान-पत्र (जिनमें आज अनेक विदेशी पुरातत्व संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं) तथा कुछ प्रस्तरों पर अङ्कित उनकी प्रशस्तियाँ उनके इतिहास के ज्ञान के हमारे दृढ़ आधार हैं।

कूप, वापी, तड़ाग आदि का निर्माण भी धार्मिक दृष्टि से ही होता रहा है। भारत में परोपकार या सार्वजनिक हित करना धर्म के भीतर ही आता है। इनके निर्माण के उल्लेखयुक्त भी अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

पत्नी-धर्म का अत्यन्त हृदय-द्रावक रूप भारत की सती-प्रथा है। भारत की नारी का आदर्श-पत्नित्व संसार के सांस्कृतिक इतिहास में अपनी सानी नहीं रखता। सारे जीवन सुख-दुख में साथ देकर पति के साथ ही चिता में जीवित जल मरने की भावना भारतीय नारी के पातिव्रत का ज्वलन्त प्रमाण है। उसको आदरपूर्ण आश्चर्य से देखकर भी उसके औचित्य को अनेक लोग स्वीकार नहीं करते और यह मीमांसा पुरातत्व सम्बन्धी विवेचन की सीमा में आती भी नहीं है। यहाँ इतना लिखना ही पर्याप्त होगा कि हमारे अभिलेखों में सब से अधिक संख्या सती-स्तम्भों पर अङ्कित लेखों की ही है।

इन सतियों की जातियों पर ध्यान देना भी मनोरंजक है—ब्राह्मण, कायस्थ, अहीर, चमार आदि जातियों की स्त्रियों के सती होने के उल्लेख हैं। इनमें से अनेक जातियों में विधवा-विवाह बहुत प्राचीन काल से प्रचलित है, फिर भी इन जातियों की स्त्रियाँ सती हुई हैं।

इस राज्य की सीमाओं के भीतर स्थित सभी सती-स्तम्भ देखे जा चुके हैं, यह नहीं कहा जा सकता है। इसके विपरीत यह कहा जा सकता है कि उन सबका देखा जाना असंभव ही है। जो देखे गए हैं उनमें प्राचीनतम खरौ (गुना) का संवत् ११२० का अभिलेख (४४) है, परन्तु उसका संवत् का पाठ असंदिग्ध नहीं है। रतनगढ़ के संवत् ११४२ के सतीस्तंभ (५३) का पाठ स्पष्ट है और उसमें गंगा नामक स्त्री के सती होने का उल्लेख है। हमारे तिथि-युक्त अभिलेखों में सबसे अंतिम वि० संवत् १८८० का नरवर का अभिलेख (५४२) है, जिनमें सुन्दरदास की दो पत्नियों के सती होने उल्लेख है। सती होने की घटनाएँ हो तो आज कल भी जाती हैं, परन्तु उनके स्मारक बनाना राजनियम के विरुद्ध है। अस्तु।

इन सती-स्तभों के द्वारा अनेक राजनीतिक घटनाओं पर भी प्रकाश पड़ता है। इन पर अंकित अभिलेखों में तिथि के साथ साथ कभी कभी उस समय के शासक का भी नामोल्लेख रहता है, जिससे यह ज्ञात होता है कि उक्त संवत् में अभिलेख के स्थान पर उल्लिखित शासक का अधिकार था। संवत् १३२७ में राई में आसल्लदेव के शासन का (१२८), संवत् १३३४ वि० थुसई में (१३१) किसी राजा गयासिंह के राज्य का संवत् १३४१ वि० में सकरों में रामदेव के शासन का (१४८) प्रमाण सती-स्तंभों पर मिलता है। आगे मुसलमानों के शासन-काल में सती प्रस्तरों पर उन शासकों का उल्लेख मिला है। (३५३ तथा ३६४)

राजाओं के नाम के साथ-साथ इन सती-स्तंभों पर उनके प्राप्तिस्थानों के प्राचीन नाम भी मिलते हैं (देखिए संवत् १३३१ वि० का थुसई का अभिलेख, जिसमें थुसई को थोपवतो लिखा है।) और इस प्रकार स्थानों के प्राचीन नाम ज्ञात किए जा सके हैं।

सती-स्तंभों की बनावट भी विषिष्ट प्रकार की होती है। इसमें पति पत्नी दोनों का अंकन होता है। वे या तो एक दूसरे का हाथ पकड़े खड़े हुए दिखाये जाते हैं या बैठे हुए शिवजी की पूजा करते हुए दिखाये जाते हैं। ऊपर की ओर सूर्य-चन्द्र एवं तारों का अंकन भी होता है जो इस बात का द्योतक है कि सूर्य चन्द्र के अस्तित्व तक सती का यश रहेगा। कभी कभी पति की मृत्यु का कारण भी अङ्कित होता है, जो प्रायः युद्ध होता है। एक सती-स्तंभ में बने अङ्कन में यह ज्ञात होता है कि पति सिंह द्वारा मारा गया (७३७)।

राज्य में स्मारक-स्तम्भ संख्या एवं महत्व दोनों दृष्टि से अधिक हैं। तेरही का स्मारक-स्तम्भ, बँगला के युद्ध-क्षेत्र के स्मारक-स्तम्भ बहुत बहुमूल्य ऐतिहासिक जानकारी देते हैं। इसके विभिन्न पट्टों (खनों) पर बने हुए दृश्य भी सार्थक होते हैं। इसमें एक मृत योद्धा को युद्ध करते हुए दिखाया जाता है, एक पट्ट में उस योद्धा को स्वर्ग में सिंहासन या पर्य्यंक पर बैठा दिखाया जाता है, जहाँ अप्सराएँ उसकी सेवा करती हैं। सबसे ऊपर के पट्ट में उसका देवत्व प्राप्त रूप दिखाया जाता है। कुछ स्तम्भों में एक पट्ट में गायों का झुंड भी होता है। एक स्तम्भ के अभिलेख से प्रकट होता है कि यह स्तम्भ ऐसे योद्धा के स्मारक स्वरूप बनवाया गया था जो गो-ग्रहण (गायों की चोरी) रोकते समय हत हुआ। (१६४) एक विशिष्ट प्रकार का स्मारक-स्तम्भ सेसई में मिला है इसमें अपने युवा पुत्रों के युद्ध में मारे जाने के कारण एक ब्राह्मण माता के जल मरने का उल्लेख है। (७२५)

एक अभिलेख (३९४) के लेख के नीचे दो कुल्हाड़ियों के चित्र बने हुए

है। यह लेख कूप निर्माण सम्बन्धी है। इन कुल्हाड़ियों का क्या अर्थ है समझ में नहीं आता।

दान सम्बन्धी लेखों में एक प्रवृत्ति और पायी जाती है। दान का मान आगे के राजा तथा अन्य व्यक्ति करें इसका भी प्रयास दाता करते रहे हैं। प्रायः सभी दानों में इस प्रकार का उल्लेख रहता है कि दान को कायम रखने वाले स्वर्ग के अधिकारी होंगे और उसके आच्छेता को नर्क का भय बतलाया है। (६१८)। यह एक रूढ़ि सी पड़ गयी थी और एक-दो श्लोक एक ही रूप में लिखे जाते रहे।

सर्व साधारण पर अपनी इच्छा को मान्य कराने की प्रणाली आगे अन्य प्रकार की हो गयी। वि स० १५१० के 'गधागाल' अभिलेख (२७९) पर एक गर्दभ की आकृति बनी हुई है जो दान में हस्तक्षेप न करने की शपथ है। दान में हस्तक्षेप न करने की शपथ का उल्लेख भौंरासा के १५४० के अभिलेख (३२०) में भी है और पठारी के वि० स० १७३३ के अभिलेख (४५८) में दान दिये हुए बाग पर अधिकार न करने के लिए हिन्दुओं को गाय की और मुसलमानों को सुअर की सौगन्ध दिलायी है। यही अर्थ सम्भवतः ओड के स्तम्भ लेख के (७४६) सूर्य चन्द्र तथा बछड़े को चाटते हुये गाय के अंकन का है।

गर्दभ केवल ऊपर लिखे लेख में ही नहीं आया है। उदयेश्वर मन्दिर के एक भित्ति-लेख (७४०) पर गर्दभ और स्त्री की आकृति बनी हु है। यह व्यभिचार के लिए दिये गये किसी दण्ड का अंकन है।

कुछ तोपों पर लिखे हुए लेख भी मिले हैं। इनमें नरवर में प्राप्त जयपुर के महाराज जयसिंह जू देव की शत्रुसंहार तथा फतेजंग तोपों के लेख (४७० तथा ४७१) उल्लेखनीय हैं। इन तोपों का नरवर में होना किसी सामरिक पराजय का चिह्न है।

इन अभिलेखों से प्राप्त ऐतिहासिक एवं भौगोलिक तथ्यों का विवेचन आगे किया गया है। परन्तु यहाँ अत्यन्त संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हमारी अभिलेख-सम्पत्ति बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसके द्वारा भारतीय इतिहास की अनेक ग्रन्थियाँ सुलझी हैं तथा अनेक नवीन राजवंश प्रकाश में आये हैं। अशोककालीन बेसनगर के स्तूप पर बौद्ध-भिक्षुओं के दानों के अभिलेखों (७१५—७२१) से उनका प्रारम्भ होता है। बेसनगर के हेलियोदोर (६६२) और गोमती पुत्र के लेख (६६३) पवाया के मणिभद्र यक्ष की प्रतिमा का लेख (६२५), उदयगिरि के चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य तथा कुमारगुप्तकालीन लेख (८२, ८३, ६४५) महाराज सुलन्का धुनाथ का ताम्रपत्र (६०८), पठारी का महाराज जयसिंह

का लेख ६११) मन्दसौर के नरवर्मन –(१) कुमारगुप्त (३) बन्धुवर्मन (२) गोविन्दगुप्त (३) तथा प्रभाकर, यशोधर्मन विष्णुधर्मन (४) के शिलालेख (५), सोंदनी के स्तम्भ-लेख, (६७८—६७९), तुमेन का कुमारगुप्त और घटोत्कचगुप्त का लेख (५५३), हासलपुर का नागवर्मन का लेख, (७१८) तेरही का हर्षकालीन स्मारक-स्तम्भ-लेख (००), महुआ का वत्सराज का लेख (७०१) पठारी का परवल राष्ट्रकूट का लेख ६), अवन्तिवर्मन (७०२) चामुण्डराज (६५९, ६६०) त्रैलोक्यवर्मन (११) आदि के लेख, रामदेव एवं भोजदेव प्रतिहारों के लेख (८, ९, ६१८, ६२६) तेरही के उन्दभट्ट तथा गुणराज के लेख (१३), शैव साधुओं सम्बन्धी रन्नोद तथा कदवाहा आदि के लेख विक्रमीय प्रथम सहस्त्राब्दी और उसके पूर्व के इतिहास के निर्माण में अत्यधिक सहायक हुए हैं।

ग्वालियर सुहानियाँ, तिलोरी नरेसर तथा दुबकुन्ड के कच्छपघातों के लेख, जीरण के गुहिलपुत्र तथा चाहमानों के लेख, प्रतिहारों के कुरैठा के ताम्रपत्र मालवा के परमारों के उदयपुर उज्जैन भेलसा, कर्णावद, बलीपुर बाग तथा घुसई के लेख, अणहिलपटक के चालुक्यों के उदयपुर और उज्जैन के लेख, चन्देरी के प्रतिहारों के लेख नरवर के जज्वपेल्लों के लेख, ग्वालियर, बरई, पढ़ावली सुहानियाँ और नरवर में मिले तोमरों के लेख मध्यकाल के अनेक राजवंशों के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं।

चन्देरी में अलाउद्दीन खिलजी, फिरोज तुगलक तथा इब्राहीम लोदी के, उदयपुर के मुहम्मद तुगलक के तथा नरवर के सिकन्दर लोदी एवं आदिलशाह सूर के लेख दिल्ली के सुलतानों के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं। साथ ही मालव (माण्डू) के सुलतानों के महत्त्वपूर्ण उल्लेख चन्देरी, शिवपुरी, मियाना, कदवाहा, उदयपुर, भेलसा, उज्जैन, मन्दसौर तथा जावद में मिलते हैं। मुगल बादशाहों के उल्लेख बहुत प्रचुर हैं जिनमें से प्रधानतः नूराबाद ग्वालियर, आँतरी नरवर, कोलारस, रन्नोद, चन्देरी, उदयपुर, भेलसा उज्जैन, तथा मन्दसौर में प्राप्त हुए हैं।

जिन अभिलेखों पर तिथि नहीं है उनके समय का निर्णय उनकी लिपि तथा भाषा को देखकर होता है। हमारे अभिलेखों पर ब्राह्मी, गुप्त, प्राचीन नागरी एवं नागरी (जो सब एक ही लिपि के विकसित रूप हैं) नास्तालिक, नस्ख तथा रोमन लिपियों, में अभिलेख मिले हैं। प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, मराठी फारसी, अरबी अगरेजी फ्रेंच पोर्चुगीज भाषाओं में यह लेख हैं। इस सूचीमें रोमन लिपि तथा अंग्रेजी फ्रेंच और पोर्चुगीज भाषाओं के लेख एकत्रित नहीं किये गये।

संवत् के स्थान पर या उसके साथ ही कुछ लेखों में राजाओं के राज्यारोहण के संवत् लिखे मिलते हैं। भागभद्र के राज्यकाल के १४ वें वर्ष ६६२) शिवनन्दी के राज्य के चौथे वर्ष (६२५), औरंगजेब के राज्यकाल के चौथे (६७०) सत्त इसवें (६३८) तथा पैतालिसवें (६०२) वर्षों के उल्लेख हैं।

इन अभिलेखों को आधार मानकर राजपूत राज्यों के पतन तक का संक्षिप्त इतिहास आगे के प्रकरण में दिया गया है। इस बात की अत्यधिक आवश्यकता है कि इतिहास के अन्य स्रोतों का समन्वय कर इस प्रदेश का बहुत विस्तृत इतिहास लिखा जाय। इस समय अभिलेख सूची की प्रस्तावना के रूप में इससे अधिक की आवश्यकता भी नहीं है।

टिप्पणी—इस प्रस्तावना में जो अंक कोष्ठक मे दिये गये हैं, वे अभिलेख-सूची के क्रमांक हैं।

ऐतिहासिक विवेचन

मौर्य—कालक्रम में हमारे अभिलेख मौर्यकाल से प्रारंभ होते हैं, ऐसा माना जा सकता है। मौर्यकाल के इतिहास में इस प्रदेश को महत्त्व प्राप्त था।

चन्द्रगुप्त ने मगध के सम्राट् महापद्मानन्द को मार कर उत्तर भारत में विशाल मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी। पाटलिपुत्र-पुरवराधीश्वर सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य तथा बिन्दुसार अमित्रघात के समय में भी उज्जयिनी एवं विदिशा को गौरव प्राप्त था। जब अशोक युवराज थे, तब वे राज-प्रतिनिधि के रूप में उज्जयिनी में रहे थे और विदिशा की श्रेष्ठि-दुहिता 'देवी' से उनके संघमित्रा नामक कन्या तथा महेन्द्र एवं उज्जयनीय नामक दो पुत्र थे[1]। इन वैश्या महारानी की स्मृति को जनश्रुति ने 'वैश्या-टेकरी' के नाम में अब भी जीवित रखा है।

प्रद्योत, उदयन और अजातशत्रु के समय में शाक्यमुनि गौतमबुद्ध ने अहिंसा-मय धर्म का विस्तार उत्तर भारत में किया था। कलिंग-विजय में जो अगणित नरबलि देनी पड़ी, उसने अशोक का हृदय बौद्ध-धर्म की ओर आकर्षित किया। वह बौद्ध-धर्म का प्रबल प्रचारक बन गया। उसने उसे अपने साम्राज्य का राजधर्म बनाया और भारत के बाहर भी प्रचार किया। कहते हैं कि उन्होंने ८४००० बौद्ध स्तूप बनवाए[2]—और अपने आदेशों से युक्त अनेक स्तम्भ खड़े किये। इन स्तूपों के चारों ओर वेदिका (रेलिंग) होती थी। यह वेदिका (बाड़) या तो काठ की होती थी या पत्थर की। उन पर बुद्ध के जीवन-सम्बंधी अनेक चित्र अंकित किये जाते थे।

मौर्य सम्राटों का विदिशा एवं उज्जैन से राजनीतिक सम्बंध था। अशोक का बौद्ध धर्म यहाँ पनपा था। उज्जैन की वैश्या-टेकरी के उत्खनन से उसका अशोकीय स्तूप होना ज्ञात हो गया है, परन्तु वहाँ कोई अभिलेख नहीं मिला। विदिशा (बेसनगर) के पास एक स्तूप की बाड़ के कुछ अंश प्राप्त हुए हैं। सन् १८७४ में जनरल कनिंघम ने इन्हें देखा था। उसने लिखा है, "बेसनगर ग्राम के बाहर पूर्व की ओर मुझे एक बाड़ के कुछ अंश मिले जो कभी बौद्ध स्तूप को घेरे हुए थी।...चारों अभिलेख युक्त हैं जिनमें अशोककालीन लिपि में दाताओं के छोटे छोटे लेख हैं। इस कारण से इस स्तूप की तिथि ईसवी पूर्व तीसरी शताब्दी के मध्य के पश्चात् को नहीं मानी जा सकती[3]।

---

१ मार्शल: गाइड टु साँची, पृष्ठ १०।

२ फाह्यान-यात्रा विवरण।

३ आ० स० ई० रि० ,भाग १०, पृ० ३८।

इस वेदिका के विभिन्न अंशों पर उत्कीर्ण ये अभिलेख कुछ भिक्षु एवं भिक्षुणियों के दानों का उल्लेख करते हैं। इनमें हमें 'असम' 'धर्मगिरि' 'सोमदास' नदिका आदि भिक्षु-भिक्षुणियों के नाम ही अवगत होते हैं। ज्ञात यह होता है कि उस समय कुछ श्रद्धालु भिक्षु एवं भिक्षुणियाँ मिलकर धन-दान देते थे और उससे स्तूप या उसकी वेदिका का निर्माण किया जाता था।

मौर्यकालीन अभिलेख-सम्पत्ति, विशेषतः अशोक के आदेश, भारत में इतने अधिक प्राप्त हैं कि उनकी तुलना में यह एक एक पंक्ति के सात या आठ अभिलेख कुछ महत्त्व नहीं रखते, परन्तु हमारे लिए उनका महत्त्व बहुत अधिक है, क्योंकि हमारे यह प्राचीनतम प्राप्त अभिलेख हैं।

शुङ्ग—अन्तिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ को लगभग १८४ ई० पू० में मारकर विदिशा निवासी पुष्यमित्र शुङ्ग ने साम्राज्य की बागडोर अपने हाथ में सँभाली। ये शुङ्ग लोग मूलतः विदिशा के रहने वाले थे। पुष्यमित्र ने अश्वमेध और राजसूय यज्ञ किये। ये यज्ञ—यागादि बौद्ध धर्म के प्रभाव के पश्चात् से बन्द पड़े थे। हरिवंश पुराण के अनुसार राजा जनमेजय के बाद पुष्यमित्र ने ही अश्वमेध यज्ञ का पुनरुद्धार किया। इस काल में बौद्ध एवं जैन धर्म के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई। इसी काल में सुमति भार्गव ने मनुस्मृति का सम्पादन किया। महाभारत एवं वाल्मीकि रामायण का सम्पादन भी इसी काल में हुआ। भविष्यपुराण में पुष्यमित्र को हिन्दू समाज और धर्म का रक्षक कहा है, और उसे कलिके प्रभाव को मिटाने वाला तथा गीता का अध्ययन करने वाला लिखा है[१]। इसी समय दक्षिण में सातवाहनों का राज्य प्रबल हो रहा था। शुंगों की तरह सातवाहन भी ब्राह्मण थे। इसी प्रकार इस काल में हिन्दुओं के भागवतधर्म को अत्यधिक महत्ता मिली।

इस काल में हिन्दू धर्म का प्रभाव इतना बढ़ा हुआ था कि पश्चिम में कलिंग का विजयी सम्राट् खारवेल यद्यपि जैन धर्मावलम्बी था फिर भी उसने राजसूय यज्ञ किया[२]! हिन्दूधर्मके इस कालके प्राबल्य का प्रमाण इससे भी मिलता है कि इस काल के पश्चिमोत्तर प्रदेश के ग्रीक राजाओं के राजदूतों तक ने भागवत धर्म स्वीकार किया था। शुंग काल में यवनों (ग्रीकों) से भी संघर्ष होकर अन्त में मैत्री स्थापित हो गयी ऐसा ज्ञात होता है। पुष्यमित्र के समय में उसके पौत्र वसुमित्र ने सिंधु के किनारे यवनों को हराया था। पुराणों के अनुसार शुंगवंश में दस राजा हुए। नवें राजा भाग (भागवत) के राज्यकाल में तक्षशिला के ग्रीक राजा ने विदिशा में अपना राजदूत भेजा था, जो भागवत धर्म को मानता था।

१—जायसवालः मनु और याज्ञवल्क्य, पृ० ५२।

२ जयचन्द्र विद्यालंकारः भारतीय इतिहास की रूपरेखा, पृष्ठ ८०१, द्वितीय संस्करण

उसने अपनी श्रद्धा के प्रदर्शन के लिए वह प्रसिद्ध गरुड़ध्वज स्थापित कराया, जो अपने अभिलेख के कारण विश्व-विश्रुत है और आज भी बेस गाँव में खड़ा हुआ उस सुदूर इतिहास का साक्षी बना हुआ है। इस स्तम्भ को लोगों ने खाम बाबा (खाम=खंभा) कहकर पूजना प्रारम्भ कर दिया है। उस पर ब्राह्मी लिपि एवं प्राकृत भाषा में निम्नलिखित अभिलेख (६६२) खुदा हुआ है—

१—देवदेवस वासुदेवस गरुड़ ध्वजे अयं
२—कारिते इअ हेलिओदरेण भाग
३—वतेन दियस पुत्रेण तखसिलाकेन।
४—योनदूतेन आगतेन महाराजस।
५—अन्तालिकितस उंपता सकासं रञो।
६—कासीपु (त्र) स (भा) ग (भ) द्रस त्रातारस।
७—वसेन (चतु) दसेन राजेन वधमानस।

ग्रीक राजा अन्तालिकित (Antialkidas) का समय ई०पू० १४० निश्चित है। काशीपुत्र भागभद्र पुराणों में वर्णित शुंगवंश का नवां राजा था, ऐसा अनुमान है[१]। यह अभिलेख न केवल राजनीतिक इतिहास में विदिशा के शुंगों का महत्त्व प्रदर्शित करता है, परन्तु साथ ही धार्मिक इतिहास में भी यह सिद्ध करता है कि उस प्राचीनकाल में भागवत धर्म का इतना प्रचार हो गया था कि उसे यवनों (ग्रीकों) ने भी अपनाया था।

खामबाबा के इस प्रसिद्ध लेख के नीचे दो पंक्तियाँ और लिखी हैं—
१—त्रीनि अमुत पदानि (सु) अनुठितानि
२—न यंति (स्वगं) दमो चाग अपमाद

---

१ श्री जयचन्द्र जी विद्यालङ्कार ने भारतीय इतिहास की रूपरेखा (द्वि० सं०) पृष्ठ ८२३ पर पुराणों के आधार पर शुंगों की वंशावली और राज्यकाल नीचे लिखे अनुसार दिये है :—

१. पुष्यमित्र—३६ वर्ष
२. अग्निमित्र—८ वर्ष
३. वसुज्येष्ठ (सुज्येष्ठ)—७ वर्ष
४. वसुमित्र (सुमित्र)—१० वर्ष
५. ओद्रक, आर्द्रक, अन्ध्रक या भद्रक—२ या ७ वर्ष
६. पुलिन्दक—३ वर्ष
७. घोष—३ वर्ष
८. वज्रमित्र—९ या ७ वर्ष
९. भाग (भागवत)-३२ वर्ष
१०. देवभूति—१० वर्ष

यहाँ पर एक अठपहलू स्तम्भ पर एक अभिलेख (६६३) इसी काल का और खुदा हुआ मिला है। यह स्तम्भखण्ड आजकल ग्वालियर पुरातत्त्व विभाग के गूजरीमहल संग्रहालय में सुरक्षित है। इसमें एक एक पहलू पर एक एक पंक्ति में खुदा हुआ है—

१. गोतम (ी) पुतेन
२. भागवतेन
३. ....
४. (भ) गवतो प्रासादोत
५. मस गरुड़ध्वज कारि (त)
६. ... .
७. (द्व) दस-वस-अभिसित (ते)
८. ......भागवते महाराजे

'गोमती के पुत्र भागवत ने भागवत के उत्तम प्रासाद के लिए गरुड़ध्वज बनवाया, जब कि भागवत महाराज को अभिषिक्त हुए बारह वर्ष हो चुके थे।"

इन अभिलेखों से यह सिद्ध है कि बेसनगर (विदिशा) में वासुदेव का एक प्रासादोत्तम था, जिसमें गोमतीपुत्र भागवत तथा दिय-पुत्र अन्तालिकित ने गरुड़ध्वज स्थापित किए थे।

बेस नगर की खुदाई में पाये गये यज्ञकुण्ड, उनसे सम्बन्धित भवनों के भग्नावशेष तथा वहाँ पर प्राप्त हुई मुद्राओं पर पड़े गये लेख इस काल के इतिहास पर बहुत अधिक प्रकाश डालते हैं। इनका वर्णन आ० स० इ० की० १४-१५ की वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित है उसका संक्षेप नीचे दिया जाता है।

ज्ञात यह होता है कि यहाँ कोई महान् यज्ञ हुआ था। दो भवनों में एक तो ऋषि-मुनियों के शास्त्रार्थ का स्थान ज्ञात होता है, दूसरा भोजन-शाला। शुंगों के समय में वैदिक धर्म एवं यज्ञादि की जो पुनर्स्थापना हुई थी उसका प्रत्यक्ष प्रमाण ये यज्ञ-कुण्ड हैं।

इन यज्ञों का आयोजन किस प्रकार एवं किसके द्वारा हुआ होगा यह वहाँ प्राप्त ३१ मिट्टी के टुकड़ों से ज्ञात होता है, जिन पर मुद्राओं की छापें लगी हुई हैं। इन ३१ टुकड़ों में ५ अस्पष्ट होने के कारण पढ़ी नहीं जातीं। इनके पीछे पट्टी पर चिपकाने के चिह्न हैं और दूसरी ओर मुद्रा-चिह्न और लिखावट है। शेष २६ में १७ विभिन्न प्रकार की मुद्रायें और ८ उन्हीं की पुनरावृत्ति हैं। एक टुकड़े के पीछे चिपकाने का चिह्न नहीं है।

ज्ञात यह होता है कि पहले संदेश काठ की पटिया पर लिखा जाता था,

उसके ऊपर दूसरी पटिया रखकर ाा या ऐसे ही किसी पदार्थ से उन्हें बाँधकर गाँठ पर दोनों पटियों को जोड़ती हुई गीली मिट्टी लगाकर उस पर मुद्रा लगा दी जाती थी। कभी-कभी मिट्टी इस बन्धन से दूर लगाई जाती थी।

इनमें जिस टुकड़े के पीछे पटिया पर चिपकाने का चिह्न नहीं है वह प्रवेश पाने के लिए अधिकार देने का पासपोर्ट ज्ञात होता है। उस पर ऊपर बायीं ओर बैठा हुआ साँड है, उसके सामने किसी लांछन (Symbol) का चिह्न है। एक लकीर के नीचे ये दो पंक्तियाँ हैं:—

टिमित्र दातृस्य [स] हो [ता]
प (ो) तामंत्र सजन (ो ?)

इसमें आया शब्द टिमित्र' ग्रीक 'डिमिट्रिअस' (Demetrius) का संस्कृत रूप ज्ञात होता है जो इस यज्ञ का दाता अथवा यजमान था। एक भागवत यवन हीलीयोदोर ने विष्णु-मन्दिर में गरुड़ध्वज स्थापित किया और एक यवन डिमिट्रिअस ने इस यज्ञ का यजन किया। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में हुई ग्रीकों की राजनीतिक एवं सामरिक पराजय आज शुंगों के काल में सांस्कृतिक एवं धार्मिक पराजय में परिणत हो गयी थी।

इनमें दो टुकड़ों पर दो राजाओं के नाम हैं। एक का लेख (६६४) है—
...स्य मह (ा) र (ा) ज श्री विश्व (ा) मित्रस्य स्वाम-(िनः) और उस पर नन्दी एवं त्रिशूल के चिह्न हैं।

दूसरी मुद्रा पर दो पंक्तियों में अस्पष्ट लेख है—
...र (ज्ञो)......पस
(यज्ञश्र) (ी) (होत्) (ृ) (नि)—
इसके ऊपर नन्दी बना हुआ है।

यह विश्वामित्र और यज्ञश्री राजा कौन हैं, कुछ ज्ञात नहीं। संभवतः यह 'विश्वामित्र' शुंगवंशी नरेश हो। इतना अवश्य है कि डिमिट्रिअस के यज्ञ को राजा का संरक्षण प्राप्त था और उसका प्रबन्ध उनके 'दण्डनायक' एवं 'हय-हस्त्याधिकारी' भी कर रहे थे। यह बात वहाँ पाए गए इन अधिकारियों की मुद्राओं के चिह्न युक्त तीन मिट्टी के टुकड़ों से ज्ञात होती है।

एक मुद्रा पर ऊपर की ओर हाथी खड़ा हुआ है जो सूँड में पत्तों एवं फूल युक्त डाली लिये है। हाथी के नीचे दो लकीरों के नीचे लिखा है—

'हयहस्त्याधिका [ि] र'
दो दण्डनायकों की मुद्राएँ हैं जिनमें से एक पर दो पंक्तियों में लिखा है—
...पर नु गु—

...दण्डनायक विलु
दूसरों पर दो पँक्तियों में लिखा है-
"चे ागिरिक पुत्र
(द) ए (ड) नायक श्रीसेन"
(इस प्रकार के दो टुकड़े मिले हैं।)

चेतगिरिक का पुत्र 'सेन' और 'विल...' दो दण्डनायक (पुलिस अधिकारी) एवं हयहस्त्याधिकारियों के संदेश प्रबन्ध के संबन्ध में ही आए होंगे।

१२ मिट्टी के टुकड़ों पर साधारण नागरिकों की मुद्राओं के चिह्न हैं। इनमें से कुछ पर नीचे लिखे नाम अंकित हैं:—

१' सूर्यभर्तृ वरपुत्रस्य
(त्र) स्य विष्णुगुप्तस्य"
'सूर्यभर्तृ वर ुत्र विष्णुगुप्त का"
(इस प्रकार के चार टुकड़े मिले हैं।'
२ "(स) कन्द घोष पु [त्र]
स्य भवघोषस्य"
'स्कंदघोष के पुत्र भवघोष को।'
(इस प्रकार के दो टुकड़े मिले हैं।)
३- श्री विजय (तीन टुकड़े)
४—कुमारवर्मन
५—विष्णुपिय......
आदि।

इन नागरिकों ने संभवतः अपनी भेंटें भेजी होंगी।

इस काल के अभिलेखों से इस प्रदेश के राजनीतिक, धार्मिक, एवं सामाजिक इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। परन्तु हमारे शुङ्गकालीन अभिलेख विदिशा के खंडहरों तक ही सीमित रहे हैं।

नाग--विदिशा के शुंग धीरे-धीरे मगध के हो चुके थे, विदिशा केवल प्रांतीय राजधानी रह गई थी। शुंगों का मगध का राज्य कण्वों के हाथ आया। परन्तु विदिशा में शुङ्गों के राज्यकाल में ही एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राजवंश का प्रभाव बढ़ रहा था। विदिशा के नागों द्वारा शासकों की जिस परम्परा का विकास हुआ उसने अपने प्रचंड प्रताप कला-प्रेम और शिव-भक्ति की स्थायी छाप भारतीय इतिहास पर छोड़ी है। इन नागों का प्रभाव-क्षेत्र यद्यपि बहुत विस्तृत था, मध्यप्रांत के वनाक्रांत भू-खण्डों से लेकर गंगा-यमुना का दोआब तक

उसमें सम्मिलित था, परन्तु इन नागों का समय ग्वालियर-प्रदेश के लिए अनेक कारणों से महत्त्व का है। ग्वालियर-राज्य के उत्तरी प्रांत के गिर्द एवं शिवपुरी जिलों में इनका राज्य था जहाँ नरवर पवाया कुतवाल आदि स्थलों पर इनका प्रभाव था और उधर दक्षिण में मालवा (धार) तक इनका राज्य था १।

उनका प्रधान केन्द्र अधिक समय तक इस राज्य के तीन नगर रहे-- विदिशा पद्मावती और कांतिपुरी (वर्तमान कुतवाल) २।

१—देखिए श्री जायसवाल कृत अंधकार युगीन भारत में पृष्ठ ८१ पर उद्धृत भाव शतक' जिसमें 'भवनाग' को धाराधीश लिखा है।

नागों के साम्राज्य की सीमा के विषय में कनिंघम ने लिखा है-- (आ० स० ई० रि० भाग २ पृष्ठ ३०८ ३०९):--

The kingdom of the Nagas would have included the greater part of the present territories of Bharatpur, Dholpur Gwalior and Bundelkhand and perhaps also some portions of Malwa, as Ujjain, Bhilsa and Sagar. It would thus have embraced nearly the whole of the country lying between the Jumuna and the upper course of Narbada,from the chambal on the west to the Kayan, or Kane River, on the east,—an extant of about800 (0) square miles...'

श्री अल्तेकर ने 'ए न्यू हिस्ट्री ऑफ इण्डियन पीपुल' में पद्मावती और मथुरा के नागों के राज्य के विषय में लिखा है :—The two Naga houses, among themselves, were ruling over the territory which included Mathura, Dholpur, Agra, Gwalior, Cawnpore, Jhansi and Banda.

(Page39)

२—कुतवाल को श्री मो० ब० गर्दे, भूतपूर्व डाइरेक्टर, पुरातत्व-विभाग, ग्वालियर ने विलसन तथा कनिंघम (आ० स० रि०, भाग २, पृष्ठ ३०८) से सहमत होते हुए प्राचीन कांतिपुरी माना है (ग्वा० पु० रि०, संवत् १९८७, पृष्ठ २२)। श्री जायसवाल ने कन्तित की प्राचीन नाग-राजधानी से अभिन्नता स्थापित की है (अन्धकारयुगीन भारत, पृष्ठ ४९-६६) और ए न्यू हिस्ट्री ऑफ दि इण्डियन पीपुल में डा० अल्तेकर ने कंतित को ही कांतिपुरी होना दुहराया है (पृष्ठ २६) और इस कारण वे भी नागों के सम्बन्ध में भ्रामक परिणाम पर पहुँचे हैं। वीरसेन की मुद्राएँ कंतित में भले ही न मिली हों कुतवाल पर अवश्य मिली हैं। श्रीगर्दे ने अपनी स्थापना के पक्ष में कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किये। जायसवाल ने जो तर्क कन्तित के पक्ष में प्रस्तुत किए हैं, वे कुतवाल से भी सम्बन्धित किये जा सकते हैं। जनश्रुति है कि किसी समय पद्मावली, कुतवाल और सुहानियाँ बारह कोस के विस्तार में फैले हुए एक ही नगर के भाग थे (आ० स० ई० रि०, भाग २, पृष्ठ ३२९ तथा भाग २०, पृ० १०७)। कुतवाल

हिन्दू इतिहास के स्वर्णकाल—'प्रसिद्ध गुप्तवंशीय श्रीसंयुत एवं गुणसम्पन्न राजाओं के समृद्धिमान राज्यकाल' १ की महत्ता को नाग लोगों ने ही दृढ़ आधार पर स्थापित किया था। जिस प्रकार छोटी नदी बड़ी नदी में मिलती है तथा वह बड़ी नदी महानद में, उसी प्रकार नागवंश ने अपने साम्राज्य को अपनी सांस्कृतिक सम्पत्ति के साथ वाकाटकों को समर्पित कर दिया। भवनाग ने अपनी कन्या वाकाटक प्रवरसेन के लड़के गौतमीपुत्र को ब्याह कर वाकाटाकों का प्रभुत्व बढ़ाया था। उसी प्रकार वाकाटकों तथा गुप्तों के विवाह सम्बन्ध द्वारा वाकाटक-वैभव गुप्त-वैभव के महासमुद्र में समाहित हो गया।

इस काल के भारत के राजनीतिक इतिहास को हम अत्यन्त पेचीदा पाते हैं। शुंगो के समय में ही कलिंग और आंध्र राज्य प्रबल हो गये थे। उत्तर—पश्चिम में गांधार और तक्षशिला पर विदेशी यवन जोर पकड़ रहे थे। शुंगों के पश्चात् उत्तर-पश्चिम के यवन-राज्य अवन्ति-आकर पर घात लगाये रहते थे। धीरे धीरे उनके आक्रमण प्रारम्भ हुए और सातवाहन नाग, यौधेय, मालवक्षुद्रकगण सब को मिलकर या अकेले अकेले उनका, सामना करना पड़ा। इस राजनीति का धार्मिक क्षेत्र में एक विशिष्ट प्रभाव पड़ा। ब्रहद्रथ मौर्य के समय तक बौद्ध धर्म भारत का धर्म था। अब बौद्ध धर्म ने उन विदेशी आक्रांताओं का सहारा लिया। अतएव धार्मिक कारणों के अतिरिक्त राजनीतिक कारणों से भी हिन्दू धर्म को बौद्ध धर्म का विरोध करना पड़ा।

नागों के राजवंश को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं, शुँगों के सम कालीन, शुंगों से कनिष्क तक और कुषाणों के पश्चात् से वाकाटकों तक। पहली शाखा विदिशा में सीमित थी। उसके विषय में हमें कुछ ज्ञात नहीं है केवल पुराणों २ में उनका उल्लेख है। शुंगों के पश्चात् नागों ने अपना राज्य विदिशा से पद्मावती तक फैला लिया था, उसके प्रमाण उपलब्ध हैं।

के विषय में कनिंघम ने भी लिखा है कि यह बहुत प्राचीन स्थल है (वही, भाग २० पृ० ११२)। पास ही पारौली (प्राचीन पाराशर ग्राम) तथा पढावली (प्राचीन धारौन — गुप्तों का गोत्र 'धारण' था, सम्भवतः यह धारौन नाम इस स्थान का नाम गुप्तकाल में पड़ा होगा) में गुप्तकालीन मन्दिरों के अवशेष मिले हैं (वही, पृ० १०४ और १०९) कुतवाल पर नागराजाओं की मुद्राएँ भी प्राप्त होती हैं। अतएव कन्तित के बजाय कुतवाल ही प्राचीन पुराण कथित नागराजधानी है, यह मानना उचित होगा। इस कांतिपुरी का अगला नाम कुंतलपुरी हुआ (वही, भाग २ पृ० ३९८) कच्छपघात राजाओं के काल तक यह गत-गौरव 'कुतवाल' बन चुकी थी और सुहानियाँ प्रधानता पा चुकी थी।

१—उदयगिरि गुहा नं० २० का शिलालेख (४५२)।

२—पार्जीटर पुराण टैक्स्ट ३८।

मणिभद्र यक्ष की प्रतिमा की चरणचौकी पर नीचे लिखा अभिलेख खुदा है:—

(पंक्ति १) (रा) ज्ञ: स्वा (मि) शिव (न) न्दिस्य संव (त्स) रे चतुर्थे ग्रीष्मपक्षे द्वितीये २ दिवसे।

(पंक्ति २) द्व (ा) द (शे) १० २ एतस्य पूर्वाये गौष्ठ्या माणीभद्रभक्ता गर्भसुखिताः भगवतो

(पंक्ति ३) माणीभद्रस्य प्रतिमा प्रतिष्ठापयन्ति गौष्ठ्यम भगवाऽयु बलं वाचं कल्य (ा) णायु

(पंक्ति ४) दयम च प्रीतो दिशतु। ब्राह्म (ण) स्य गोतमस्य क[मा) रस्य ब्राह्मणस्य रुद्रदासस्य शिव (त्र) दाये

(पंक्ति ५) शमभूतिस्य जीवस्य खं (जवलं) स्य शिव (ने) मिस् (य शिवभ (द्र) स्य (कु) मकस्य धनदे।

(पंक्ति ६) वस्य दा।

नाग काल का यह हमारा एकमात्र अभिलेख है। उसकी लिपि को देखकर विद्वान इसे ईसवी प्रथम शताब्दी का मानते हैं। इस अभिलेख में शिवनन्दी को उसके राज्यरोहण के चौथे वर्ष में स्वामी' लिखा है। स्वामी' प्राचीन अर्थों में स्वतन्त्र राजा के लिए लिखा जाता था। अतएव शिवनन्दी को उसके राज्य के चौथे वर्ष बाद कनिष्क ने हराया होगा। सन ७८ से १७५ ई० के आसपास तक नागों को अज्ञातवास करना पड़ा। वे मध्यप्रदेश के पुरिका एवं नागपुर आदि स्थानों को चले गये १।

कुषाणों का अन्तिम सम्राट् वासुदेव था। सन १७५ ई० के लगभग वीरसेन नाग ने इस वासुदेव को हरा कर मथुरा में नाग राज्य स्थापित किया। इन नवनागों के विषय में वायुपुराण में लिखा है—'नवनागाः पद्मावत्यां कांतिपुर्यां मथुरायां।'

---

१ वैदिश नागों से लेकर मणिभद्र-प्रतिमा-लेख के शिवनन्दी तक की वंशावली डॉ० काशीप्रशाद जायसवाल महोदय ने अपनी पुस्तक अन्धकार-युगीन-भारत पृष्ठ २६-२८ पर दी है। डॉ० अल्तेकर ने केवल यह लिखकर संतोष किया है कि सिक्कों पर से दस नाग राजाओं के अस्तित्व का पता लगता है:—भीमनाग, विभुनाग प्रभाकरनाग, स्कंदनाग, बृहस्पतिनाग व्याघ्रनाग, वसुनाग, देवनाग, भवनाग तथा गणपति नाग। इसके पश्चात् उन्होंने हर्षचरित्र के आधार पर ग्यारहवें राजा नागसेन का नाम लिखा है और बारहवें राजा नागदत्त के उल्लेख की संभावना होना भी लिखा है। पादटिप्पणी में उन्होंने यह भी लिखा है कि वीरसेन भी संभवतः नाग था और इस प्रकार यह संख्या तेरह बतलाई है। (ए न्यू हिस्ट्री ऑफ दि इण्डियन पीपुल, पृष्ठ ३७)

मथुरा में राज्य स्थापित कर वीरसेन नाग ने अपने राज्य को पद्मावती तक फिर फैला दिया। १ कांतिपुरी ग्वालियर-राज्य का कोतवाल है, ऐसा ऊपर सिद्ध किया गया है, और पवाया ही प्राचीन पद्मावती है, इसमें भी शंका नहीं है। २ वीरसेन के बाद पद्मावती, कांतिपुरी और मथुरा में नागवंश की तीन शाखाओं के ती। राज्य स्थापित हुए।

नागकालीन अभिलेखों की न्यूनता की पूर्ति उस काल के सिक्कों ने की है। नागकालीन सिक्के सहस्रों की संख्या में विदिशा (बेसनगर), पद्मावतो (पवाया), (कान्तिपुरी) कुतवाल एवं नलपुर (नरवर) पर मिले हैं। परन्तु अद्यपि उनका विधिवत अध्ययन नहीं हुआ है।

नागों के पद्मावती (पवाया), कान्तिपुरी (कुतवाल) तथा विदिशा पर जो सिक्के मिले हैं उनमें से दो नाग डॉ० अल्तेकर ने छोड़ दिये हैं। वृष, विभु तथा वीरसेन के सिक्के भी इन स्थानों पर प्राप्त हुए हैं। डॉ० अल्तेकर ने यह भी लिखा है—"The coins of Ganapati Naga are much more common at Mathura than at Padmavati, and he probably belonged to the Mathura dynasty" (वही पृष्ठ ३७) यह कथन सत्य नहीं हैं। पद्मावती एवं नलपुर पर गणपति नाग की मुद्राएँ सहस्रों की संख्या में मिली हैं और मिल रही हैं। भारत के इस राष्ट्रीय इतिहास में नागों के सम्बन्ध में अत्यन्त भ्रान्तिपूर्ण कथन किये गये हैं।

१—कुषाणों को नाग-राजाओं ने हराया था इसके विषय में डॉ० अल्तेकर ने शंका की है और इस विजय का श्रेय जयमंत्रधारी यौधेयों को दिया है। उन्होंने उनके राज्य की सीमा उत्तरी राजपूताना तथा दक्षिण-पूर्वी पंजाब लिखी है। (ए न्यू हिस्ट्री ऑफ दि इण्डियन पीपुल पृ० २९) डा० अल्तेकर ने जो तर्क दिये हैं उनसे केवल इस सम्भावना को स्थान मिलता है कि यौधेयों ने उत्तरी राजपूताना तथा कुछ भाग पंजाब कुषाणों से लिया होगा। उससे यह प्रकट नहीं होता है कि यौधेयों ने कुषाणों को उस प्रदेश पर से भी हटाया था जिस पर आगे नागोंका अधिकार हुआ। कुषाणोंकी शक्तिके प्रधान केन्द्र मथुरा से उन्हें खदेड़ने का श्रेय नागों को ही है। एकबार राजधानी से हटा दिये जाने पर योधेयों को यह सरल ज्ञात हुआ होगा कि वे अपने अधिकृत प्रदेश पर से भी डगमगाती हुई कुषाण-सत्ता को हटा दें। अधिक सम्भावना यह है कि नाग योधेय-मालव आदि शक्तियों ने शिथिल कुषाणराज्य के विरुध्द इकट्ठा विद्रोह किया हो और आपसी सहयोग से विदेशी सत्ता का उन्मूलन किया हो। इस युद्ध में प्रधान भाग नागों को ही लेना पड़ा होगा क्योंकि उन्हों ने ही कुषाण-राजधानी मथुरा हस्तगत की। वीरसेन के सिक्के पवाया और कुतवाल में भी मिले हैं।

२ आ० सर्वे० इण्डिया, वार्षिक रिपोर्ट, सन् १९१५-१६ पृष्ठ १०१

इन नागराजाओं में से भवनाग के विषय में यह निश्चित ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त है कि ३०० ई० के लगभग उसकी कन्या का विवाह वाकाटक प्रवरसेन के युवराज गौतमी पुत्र के साथ हुआ था । १

गणपतिनाग का उल्लेख उन राजाओं में है जिनको समुद्रगुप्त ने हराया ।२ इन पिछले नागों के अधिकारमें कांतिपुरी के साथ विदिशा भी थी, क्योंकि वहाँ पर भी इनके सिक्के मिले हैं। ३

नागकालीन अभिलेख, मूर्तियाँ एवं सिक्कों से हमें तत्कालीन धार्मिक इतिहास की बहुत स्पष्ट झाँकी मिलती है। नाग परम शिवभक्त थे। उनकी मुद्राओं पर अंकित वृष, त्रिशूल, मयूर, सिंह आदि उनको शैव घोषित करते हैं। गंगा का भी इन्होंने राज-चिह्न के रूप में उपयोग किया और अपने सिक्कों एवं शिव-मन्दिरों के द्वारों पर उसे स्थान दिया। नागों के विषय में एक ताम्रपत्र में लिखा है—

"अंशभारसन्निवेशित शिवलिंगोद्वाहनशिवसुपरितुष्टसमुत्पादितराजवंशानाम्पराक्रमाधिगतिभागीरथीअमल—जल: मूर्द्धाभिषिक्तानाम् दशाश्वमेध-अवभृथस्नाताम् भारशिवानाम् ।"

अर्थात्—उन भारशिवों का, जिनके राजवंश का आरम्भ इस प्रकार हुआ था कि उन्होंने शिवलिंग को अपने कंधे पर रखकर शिव को परितुष्ट किया था, वे भारशिव जिनका राज्याभिषेक उस भागीरथी के पवित्र जल से हुआ था जिसे उन्होंने अपने पराक्रम से प्राप्त किया था—वे भारशिव जिन्होंने दस अश्वमेध यज्ञ करके अवभृथ स्नान किया था।

इससे नागों के धर्म पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है—

१—भारशिव (नाग) अपने कंधों पर शिवलिंग रखे रहते थे अर्थात् वे परम शैव थे।

२—उनका राज्याभिषेक उस भागीरथी के पवित्र जल से हुआ था जिसे उन्होंने अपने पराक्रम से प्राप्त किया था। (इसमें उस कारण परभी प्रकाश पड़ता है, जिससे प्रेरित होकर नागों ने गंगा को राज-चिह्न बनाया।)

३—भारशिवों ने दस अश्वमेध यज्ञ करके अवभृथ स्नान किया था, अर्थात् उन्होंने शुंगों की यज्ञों की परम्परा को प्रगति दी।

---

१ ए न्यू हिस्ट्री ऑफ दि इण्डियन पीपुल पृष्ठ ३८।

२ फ्लीट: गुप्त अभिलेख, पृष्ठ ६।

३ आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, सन् १९१३-१४, पृष्ठ १४-१५।

वायुपुराण में नागों को वृष अर्थात् शिव का साँड़ अथवा नन्दी कहा है (अन्धकारयुगीन भारत, पृष्ठ १८)। इससे भी उनके शैव होने का प्रमाण मिलता है।

इन परम शैव नागों की प्रजा यक्षपूजा के लिए स्वतन्त्र थी। नाग-राजधानी पद्मावती में ही मणिभद्र यक्ष के भक्तों की गोष्ठी मौजूद थी और उन्होंने प्राग्-अशोककालीन लोक-कला की शैली में मणिभद्र की मूर्ति बनवा कर उसकी चरण चौकी पर इस काल का एकमात्र अभिलेख अंकित करा दिया।

नागों के बीच में ही कुषाणों का राज्य भी हो लिया, परन्तु ग्वालियर राज्य की सीमा में एक टूटे बुद्ध-मूर्ति के खण्ड को छोड़कर हमें न तो कुषाणों को मूर्ति-कला का कोई उदाहरण मिल सका है और न कोई अभिलेख ही।

गुप्त—ईसा की तीसरी शताब्दी के अन्त में (लगभग २७१ ई०) साकेत-प्रयाग के आसपास श्रीगुप्त नामक एक राजा हुआ। उसके पुत्र का नाम था घटोत्कच। ईसवी सन् ३२० में घटोत्कच का पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम गद्दी पर बैठा और संभवतः 'गुप्तकाल' अथवा 'गुप्त संवत्' का प्रारंभ किया। उसने लिच्छिवि गण-तंत्र की कन्या कुमारदेवी से विवाह करके गुप्तवंश के उस महान् साम्राज्य की नींव डाली, जिसने भारतीय संस्कृति को चरम विकास पर पहुँचाया। चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवियों की सहायता से पाटलिपुत्र को जीता, परन्तु उसे मगध छोड़ देना पड़ा। उसके दिग्विजयी पुत्र समुद्रगुप्त ने पहले हल्ले में ही मगध को जीत लिया। इस प्रदेश के नाग राजा गणपति को हराकर यहाँ अपना राज्य स्थापित किया और फिर-सम्पूर्ण भारतवर्ष को अपनी विजयवाहिन से वशीभूत कर एवं शकमुरंडों' को पराभूत कर अश्वमेध यज्ञ करके 'श्री विक्रम एवं 'पराक्रमांक' के विरुद ग्रहण किये। अपनी कन्या प्रभावती गुप्ता का विवाह वाकाटक रुद्रसेन से करके उन्होंने गुप्त-साम्राज्य का राजनीतिक महत्त्व बढ़ाया। नागों की विजय एवं वाकाटकों से विवाह-सम्बंध के कारण गुप्त-सम्राट उनकी पुष्ट संस्कृति के सम्पर्क में आए।

साम्राज्य-स्थापन एवं विदेशी शक सत्ता के उन्मूलन का कार्य चन्द्रगुप्त द्वितीय ने किया और साढ़े चार सौ वर्ष पूर्व हुए शक शक्ति-विध्वंसक विक्रमादित्य के नाम को विरुद के रूप में ग्रहण किया। विदिशा के पास डेरा डालकर ही चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने शक-क्षत्रपों का उन्मूलन किया था। उदयगिरि गुहा में बिना तिथि के शाव वीरसेनके शिलालेख (६४५) से-प्रकट है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय का मंत्री शाव वीरसेन इस प्रदेश में उस राजा के साथ आया जिसका समस्त पृथ्वी को जीतने का उद्देश्य था।

इन्हीं सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीय के चरणों का ध्यान करनेवाले सनकानिक

के महाराज का ८२ गुप्त संवत् का एक लेख उदयगिरि गुहा में मिला है। (५५१)

इन दो अभिलेखों से सम्राट् चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का विदिशा से सम्बन्ध स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है।

चन्द्रगुप्त (द्वितीय) विक्रमादित्य के सीधे सम्बन्ध को स्थापित करनेवाला एक अभिलेख (१) मन्दसौर में मालव संवत् ४६१ का माना जा सकता है। इसमें नरवर्मन को सिंहविक्रांतगामिन्' लिखा है। चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का एक विरुद्ध 'सिंहविक्रम' भी है, इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि नरवर्मन् इन गुप्त सम्राट् का मांडलिक था। परन्तु सबसे अधिक शंका की बात यह है कि दशपुर के इस राजवंश के तीनो शिलालेखों में गुप्त संवत् का प्रयोग न करके मालव संवत् का प्रयोग किया गया है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के पश्चात् कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य ने गुप्त साम्राज्यकी बागडोर सँभालो। कुमार गुप्त के उल्लेख युक्त तीन अभिलेख (२,५५२ तथा ५५३) इस राज्य की सीमाओं में प्राप्त हुए हैं। इनमें उदयगिरि एवं तुमेन के अभिलेख क्रमशः १०६ तथा ११६ गुप्त संवत् के हैं। उदयगिरि के गुप्त संवत् १०६ के लेख में अत्यन्त ललित शब्दों में शंकर द्वारा पार्श्वनाथ की मूर्ति की प्रतिष्ठा का उल्लेख है।

तुमेन का अभिलेख एकाधिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसमें गुप्त संवत ११६ तिथि पड़ी है (४३५ ई०) पहले श्लोक में समुद्रगुप्त का उल्लेख ज्ञात होता है। आगे सागरान्त तक मेदिनी जीतनेवाले चन्द्रगुप्त का नामोल्लेख है। दूसरी पक्ति में कुमारगुप्त को चन्द्रगुप्त का तनय कहा गया है, जो साध्वी के समान् धर्मपत्नी पृथ्वी की रक्षा करता बतलाया गया है। तीसरी पंक्ति में घटोत्कच गुप्त का उल्लेख है, जिसकी तुलना चन्द्रमा से की गई है।

इस अभिलेख में घटोत्कच गुप्त का उल्लेख यह बतलाता है कि वह राजवंश का था और कुमारगुप्त के काल में ही संभवतः तुम्बवन का स्थानीय शासक था। घटोत्कच गुप्त का कुमारगुप्त से क्या सम्बंध था, यह बतलाने वाला अभिलेख का अंश अस्पष्ट हो गया है, परन्तु बसाढ़ की मुद्रा के घटोत्कच गुप्त का ठीक पता इस लेख द्वारा लगता है।

मन्दसौर में प्राप्त मालव संवत् ५२९ का २४ पंक्ति का लम्बा अभिलेख अनेक नयी बातों पर प्रकाश डालता है। उसमें तत्कालीन गुप्त सम्राट् का उल्लेख नहीं है। उसमें केवल यह लिखा है कि मालव संवत ४९३ में कुमारगुप्त

की ओर से दशपुर पर विश्ववर्मन् शासन कर रहा था। तात्पर्य यह कि वि० सं० ५२९ (सन् ४७३) में इस प्रदेश पर से गुप्तों की सत्ता उठ चुकी थी।

इससे पाँच वर्ष पूर्व अर्थात् मालव संवत् ५२४ का मन्दसौर का अभिलेख भी कुछ ऐसी ही कहानी कहता है। इसमें स्थानीय भूमिपति प्रभाकर को गुप्तान्वयारिद्रुम धूमकेतुः' कह कर उसको गुप्त सम्राटों के अधीन बतलाया है परन्तु 'गुप्त' का उल्लेख है न कि कुमारगुप्त अथवा स्कन्दगुप्त का। गोविन्दगुप्त कुमारगुप्त की ओर से वैशाली में शासन कर रहा था। दशपुर में केवल गोविंदगुप्त का उल्लेख किसी गृह-कलह का सूचक है, और विशेषतः जब इन्द्र (महेन्द्र=कुमारगुप्त) को उसकी शक्ति से शंकित बतलाया गया, तब यह अनुमान और भी दृढ़ होता है। इसमें गुप्त संवत् का प्रयोग न होकर मालव सवत् का प्रयोग होना पुनः गुप्त साम्राज्य के दशपुर पर कमजोर अधिकार का द्योतक है। १५ पंक्ति के इस अभिलेख का विवेचन गुप्त-इतिहास के विद्वानों को अधिक करना होगा।

कुमारगुप्त के पश्चात् किसी गुप्त सम्राट् का अभिलेख इस राज्य में नहीं मिला।

गुप्तकालीन अभिलेखों पर विचार करते समय मन्दसौर के स्थानीय शासकों के लेखों पर एक बार पुनः दृष्टि डाल लेना उचित होगा। प्रथम बात जो उनके विषय में महत्व की है, वह यह है कि उनमें मालव संवत् का प्रयोग ही किया गया है न कि गुप्त संवत् का। उनमें दी गई शासकों की वंश-परम्परा निम्नलिखित है —

जयवर्मन (संभवतः स्वतंत्र राजा)
|
सिंहवर्मन (संभवतः स्वतंत्र राजा)
|
नरवर्मन सिंह-विक्रान्त-गामिन् (मा० सं० ४६१)
|
विश्ववर्मन
|
बन्धुवर्मन (मा० सं० ४९३)
|
प्रभाकर—गुप्तान्वयारिद्रुमधूमकेतुः (मा० सं० ५२४)

बन्धुवर्मन का प्रभाकर से क्या संबन्ध है, कहा नहीं जा सकता, परन्तु यह निश्चित है कि मालव संवत् ५२५ में वह दशपुर का शासक था और गोविन्द-

गुप्त को अपना अधिपति मानता था। दशपुर के शासकों के क्रम में ६५ वर्ष पश्चात् परम प्रतापी यशोधर्मन्-विष्णुवर्धन हुआ।

बडोह-पठारी में सप्तमातृकाओं की मूर्ति के पास चट्टान पर विषयेश्वर महाराज जयत्सेन के उल्लेखयुक्त ९ पंक्ति की गुप्त लिपि का अभिलेख (६६१) भी उल्लेखनीय है। यह जयत्सेन किसी गुप्त सम्राट् के ही विषयेश्वर होंगे, परन्तु यह लेख इतना खंडित है कि उसका अभिप्राय समझ में नहीं आता। दुर्भाग्य से संवत् का अङ्क भी मिट गया है केवल 'शुक्ल दिवसे त्रयोदश्याम्' रह गया है। परन्तु तुम्बवन के पास ही यह अभिलेख है, अतएव घटोत्कच गुप्त के शासन में हो यह संभव है।

स्थानीय शासकों में हासिलपुर के स्तंभ पर महाराज नागवर्मन् का उल्लेख है। १३ पंक्ति के अस्पष्ट शिलालेख (७०८) में ५०० का अङ्क भी है, जो यदि विक्रमी या मालव सूचक है, तो महाराज नागवर्मन् कुमारगुप्त के अधीनस्थ ही हो सकते हैं।

बागगुहा में मिले तिथि रहित महाराज सुबधु के ताम्रपत्र ने भी गुप्तकालीन इतिहास पर नवीन प्रकाश डाला है। सुबन्धु के बड़वानी के ताम्रपत्र में १६७ संवत् पड़ा हुआ है। यह अभी तक गुप्त संवत् माना जाता था और माहिष्मती के महाराज सुबधु को बुधगुप्त का अधीनस्थ शासक। अभी यह शंका की गई है कि यह कलचुरि संवत् है[1] और इस प्रकार यह सन् ४१६ का ताम्रपत्र है। अतएव सुबन्धु कुमारगुप्त का समकालीन था एवं गुप्त साम्राज्य से स्वतंत्र था। परन्तु इस सिद्धांत पर अभी और प्रकाश पड़ना शेष है। गुप्त संवत् से कलचुरि संवत् ७१ वर्ष पुराना है। इस ताम्रपत्र से यह निश्चित हो गया कि बाग गुहाओं का निर्माण ईसवी चौथी शताब्दी के पूर्व होगया था। इस दृष्टि से बागगुहा में मिला यह ताम्रपत्र बहुत महत्वपूर्ण है।

गुप्तकालीन लिपि में कुछ अभिलेख पवाया, उदयगिरि, भेलसा एवं सेसई में मिले हैं। पवाया (पद्मावती) पर गुप्तों ने गणपति नाग को हराकर अपना राज्य स्थापित किया था। उदयगिरि पर चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य स्वयं पधारे थे। भेलसा में हाल में ही मिले शिलालेख ६ पंक्ति का है और उसमें किसी तालाब का वर्णन है। विदिशा नगर कभी सुन्दर उद्यानों एवं तालाबों का नगर था यह इससे सिद्ध है।

सेसई का स्मारक-स्तम्भ गुप्त लिपि में है और बड़ी करुण कथा कहता है। इसमें युवक पुत्रों के युद्ध में मारे जाने पर निराश्रिता ब्राह्मण माता के जल मरने का उल्लेख है।

---

१ इण्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली, भाग २२ पृष्ठ ३९।

बुधगुप्त के पश्चात् ही तोरमाण हूण ने उत्तर-पश्चिम के गांधार-राज्य से गुप्त-साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया। इसके पुत्र मिहिरकुल का शासन ग्वालियरगढ़ तक था, ऐसा मात्रिचेट के एक शिलालेख (६१६) से प्रकट होता है। इस अभिलेख में तिथि नहीं है, मिहिर कुल के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष का उल्लेख है। मिहिरकुल शैव था और वृष (नन्दी) का पूजकथा। इसके राज्यकाल में सूर्य-मंदिर के निर्माण का उल्लेख एक ऐसे व्यक्ति ने किया था जिसकी तीन पीढ़ियों के नाम मातृका-पूजा के द्योतक हैं अर्थात् मात्रितुल का पौत्र मातृदास का पुत्र, मात्रिचेट।

इस हूणशक्ति को नीचा दिखाया औलिकर वंश के यशोधर्मन-विष्णुवर्धन ने। भारतीय इतिहास में इस अद्वितीय वीर संबंधी ज्ञान केवल दो अभिलेखों में सीमित है। इसमें इसके राज्य की सीमा लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) से पश्चिमी समुद्र तक, तुहिनशिखर हिमालय से महेन्द्र पर्वत तक बतलाई है और लिखा है कि उसके राज्य में वे प्रदेश भी थे जो गुप्त और हूणों के राज्य में भी नहीं थे। मिहिरकुल द्वारा पादपद्म अर्चित करनेवाले इस मालव-वीर के विषय में इन प्रशस्तियों के अतिरिक्त और कुछ ज्ञात नहीं है। इस कथन के आधार पर ही यशोधर्मन को सम्पूर्ण उत्तरी भारत का स्वामी मानना कठिन है, परन्तु इतना निश्चित है कि उसने गुप्त और हूण शक्तियों को परास्त करके एक वृहत् राज्य का निर्माण किया था।

दूसरे अभिलेख (४) में यशोधर्मन-विष्णुवर्धन को 'जनेन्द्र' जनता का नेता कहा है। इस अभिलेख में दक्ष द्वारा कूप-निर्माण का उल्लेख किया है। यह दक्ष यशोधर्मन विष्णुवर्धन के मंत्री धर्मदोष का छोटा भाई था। इस अभिलेख में इस मंत्री का वंश-वृक्ष भी दिया हुआ है। इस वंश का संस्थापक षष्ठदत्त था, उसका पुत्र वराहदास था। उसके वंश में रविकीर्ति हुआ जिसकी पत्नी का नाम भानुगुप्ता था। रविकीर्ति और भानुगुप्ता के तीन पुत्र भगवद्दोष, अभयदत्त तथा दोषकुंभ। दोषकुंभ के पुत्र धर्मदोष तथा दक्ष थे। अभयदत्त जिस प्रदेश का सचिव अथवा 'राजस्थानीय' था वह विन्ध्य, रेवा तथा पारिपात्र पर्वत तथा पश्चिमी समुद्र से आवृत था।

मन्दसौर के स्तम्भ-लेख तथा इस कूप-लेख दोनों का उत्कीर्णक गोविन्द-नाम का एक ही व्यक्ति है, अतएव ये दोनों प्रशस्तियां मालव-वीर यशोधर्मन विष्णुवर्धन से ही संबंधित हैं।

बैस मौखरी एवं प्रतिहार—गुप्तकाल के प्रख्यात गौरव की अन्तिम ज्योति यशोधर्मन-विष्णुवर्धन के प्रबल पराक्रम में दिखाई दी थी। परन्तु यशो-धर्मन ने किसी साम्राज्य की स्थापना नहीं की। पिछले गुप्त केवल मगध-बंगाल

के स्थानीय शासक रह गए थे। कुछ समय तक मालवा भी उनके अधीन रहा। गुप्त सम्राटों के स्वर्णकाल के साथ इस भूप्रदेश का केन्द्रीय महत्त्व भी बहुत समय के लिए लुप्त होगया। अत्यन्त प्राचीन काल से यशोधर्मन तक इस भू-प्रदेश का कोई न कोई नगर या तो किसी शक्तिशाली शासक की राजधानी रहा है अथवा बहुत महत्वपूर्ण प्रांतीय राजधानी रहा। परन्तु आगे भारत में जो दो साम्राज्य क्रमशः वैस-मौखरी और प्रतिहारों के हुए उसमें यहप्र देश अधिक महत्व न पा सका। थानेश्वर अथवा कन्नौज की केन्द्रीय शक्तियों ने यहां अपने प्रतिनिधि ही रखे।

थानेश्वर के बैस वंश ने एवं कन्नौज के मौखरियों ने यशोधर्मन के साथ हूणों के विरुद्ध युद्ध किया था। उसके पश्चात् उन्होंने अपने राज्य दृढ़ किए। कुरुदेश में थानेश्वर के राजा बैस-वंशी प्रभाकरवर्धन ने काश्मीर में हूणों को एवं गुजरात के गुर्जरों को तथा गांधार और मालवों को हराकर अपनी शक्ति को दृढ़ किया। उनकी माता महासेन गुप्ता पिछले गुप्तवंश की कन्या थीं अतएव इनकी साम्राज्य-स्थापन की कल्पना प्राकृतिक थी। हूणों पर वे विजय पा ही चुके थे। उनके तीन संताने थीं। राज्यवर्धन हर्षवर्धन और राज्यश्री कन्या। राज्यवर्धन का विवाह मौखरी गृहवर्मा से किया गया और इस प्रक र आगे च - कर बैस एवं मौखरी राज्य के एक होने की नींव पड़ी।

प्रभाकरवर्धन ने पुनः राज्यवर्धन को सन् ६०४ में हूणों को मारने के लिए उत्तरापथ में भेजा। इधर प्रभाकरवर्धन का देहान्त हो गया। मालवा के राजा महासेन गुप्त के बेटे देवगुप्त ने पिछली हार का बदला पूर्वी भारत के राजा शशांक की सहायता से ले लेना चाहा और कन्नौज पर आक्रमण कर गृहवर्मा को मार डाला तथा राज्यश्री को बंदी कर लिया। उसने तथा शशांक ने फिर थानेश्वर पर आक्रमण किया परन्तु इस बीच राज्यवर्धन लौट आया था और उसने मा वे के राजा को हरा दिया। इस प्रकार मालवा बैस वंश के साम्राज्य का एक अंग गया। परन्तु उधर शशांक ने राज्यवर्धन को मार डाला।

राज्यवर्धन का भाई हर्षवर्धन और भी अधिक प्रतापी था। उसने भाई की मृत्यु तथा बहिन के बन्दीकरण के प्रतिशोध साथ ही साथ लिये। उसके सेनापति भण्डि ने मालवे को रौंद डाला एवं उसने स्वयं प्राग्-ज्योतिष तक विजय-यात्रा की। इस बीच उसे राज्यश्री का समाचार मिला और वह उसे खोजने विन्ध्याटवी में गया। राज्यश्री सती होने जा रही थी। भाई के अनुरोध से वह जीवित तो रही परन्तु उसने बौद्ध भिक्षुणी होकर जीवन-यापन करना शुरू किया।

सम्राट् हर्षवर्धन और राज्यश्री संयुक्तरूप से राज्य सँभालने लगे और इस प्रकार बैस और मौखरी दोनो के राज्य मिलगये। इस सम्मिलितराज्य को हर्ष

की विजयवाहिनी ने साम्राज्य के रूप में परिवर्तित कर दिया। उसने अपनी दिग्विजय में पूर्व से पश्चिम तक समस्त भारत को जीता इस प्रकार हमारा यह प्रदेश इस विशाल साम्राज्य-समुद्र का एक भाग बन गया। इस साम्राज्य में इस प्रदेश को कोई महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं था, ऐसा ज्ञात होता है। महुआ के शिवमन्दिरके स्तम्भ पर एक अभिलेख में आर्यभास, व्याघ्रभण्डि नागवर्धन, तेजोवर्धन के वंशज एवं उदित के पुत्र किसी वत्सराज द्वारा शिवमंदिर के निर्माण का उल्लेख अवश्य है (७०१)। यह वंशावली इसे वर्धनवंश अथवा भण्डिवंश से सम्बन्धित बतलाती है। ज्ञात होता है कि यह वत्सराज वैस मौखरियों का कोई स्थानीय शासक था। हर्ष और राज्यश्री बौद्ध थे परन्तु वे धर्मान्ध नहीं थे। उनके राज्य मे शैव, वैष्णव सभी धर्म पनप रहे थे। शिवमन्दिर के इस अभिलेख की लिपि से इसका काल ईसवी सातवीं शताब्दी निश्चित किया गया है।

हर्षवर्धन की मृत्यु के (ई० ६४०) के पश्चात् यह साम्राज्य मौखरी वंश के हाथ आया। मौखरी यशोवर्मन अत्यन्त वीर एवं विजयी राजा था। उसने अपने साम्राज्य का विस्तार पूर्वी समुद्र तक किया। परन्तु उसका नाम मालतीमाधव के लेखक भवभूति के आश्रयदाता के रूप में हमारे इतिहास में अमर रहेगा।[१]

भवभूति ने मालतीमाधव को रंगस्थली पद्मावती (पवाया) को बनाकर इस महान्नगरी के गौरव को सुरक्षित रखा है। यशोवर्मन के उत्तराधिकारियों के हाथों में इतनी शक्ति नहीं थी। केन्द्रीय शक्ति के शक्तिहीन होने से अनेक छोटी-छोटी शक्तियाँ आगे बढ़ने का प्रयास कर रही थी। इनमें से एक या एकाधिक हमारे इस प्रदेश को रौंदती रहीं। अन्त में प्रतिहारवंश के मिहिर भोज ने फिर साम्राज्य स्थापित किया, जिनमें ग्वालियर का यह प्रदेश भी सम्मिलित था। प्रतिहारों के चार अभिलेख (८, ९, ६१८ तथा ६२६) ग्वालियर गढ़ एवं सागर ताल के पास मिले हैं। इसमें से दो तिथि युक्त (वि० सं० ९३२ तथा ९३३) हैं। ग्वालियर, गढ़ के एक अभिलेख से (वि०सं० ९३३)ज्ञात होता है कि वह प्रदेश उनके नियोजित अधिकारियों द्वारा शासित होता था। इस अभिलेख में अनेक पद और पदाधिकारियों का उल्लेख है। अल्ल नामक श्रीगोपगिरि के कोट्टपाल (किले के संरक्षक) टट्टक नामक बलाधिकृत (सेनापति) तथा नगर के शासकों (स्थानाधिकृति) की परिषद (वार) के सदस्यों (वव्वियाक एवं इच्छुवनाक नामक दो श्रेष्ठिन् और साव्वियाक नामक प्रधान सार्थवाह) का उल्लेख है।

ग्वालियर के इतिहास में इस अभिलेख का विशेष महत्व है। इसमें ऊपर लिखे पद और पदाधिकारियों का तो उल्लेख है ही, साथ ही इसमें आस-पास के

१—मजुमदार: ऐंशेंट इण्डियन हिस्ट्री, पृ० ३५०

अनेक ग्राम, नदी आदि के नाम दिये हैं। यथा वृश्चिकाला नदी, (सम्भवत स्वर्ण रेखा) चूड़ापल्लिका, जयपुराक श्री सर्वेश्वर ग्रामों का उल्लेख है। सामाजिक इतिहास में तेलियों और मालियों के संगठनों का भी उल्लेख है जिन्हें तैलिक श्रेण्या एवं 'मालिक श्रेण्या' कहा गया है। तेलियो के मुखिया को "तैलिक महत्तक' और मालियों के मुखिया को "मालिक महर कहा गया है। कुछ नापों का भी वर्णन इसमें है लम्बाई की नाप "पारमेश्वरीय हस्त" अनाजकी नाप द्रोण. कही गई है ओर तेल की नाप "पलिका" (हिंदी परी) कही गई है। त्रैलोक्य के जीतने की इच्छा से महाराज आदिवराह—(भोजदेव प्रतिहार) ने अल्ल को गोपाद्रि (ग्वालियर गढ़) के पालन के लिये नियुक्त किया था। वि० सं ९३२ के अभिलेख में लिखा है कि यह अल्ल गोपाद्रि का कोट्टपाल था और आस पास के प्रदेश पर शासन करता था। कोट्टपाल अल्ल ने ग्वालियरगढ़ की एक शिला को छैनी द्वारा कटवाकर विष्णुमन्दिर का निर्माण कराया था। प्रतिहार रामदेव के समय में विशाख का मन्दिर बानवाया था (६१८) और भोजदेव ने ग्वालियर गढ़ के आसपास कहीं नरकद्विष (विष्णु) के अन्तःपुर का निर्माण कराया था। यह 'आदिवराह' मिहिरभोज वास्तव में भारत के बहुत बड़े सम्राटों में हैं और उनकी विजयगाथा तथा शासनप्रणाली पर ग्वालियर के ऊपर लिखे अभिलेखों से प्रकाश पड़ता है। प्रतिहारवंश के इतिहास में इन अभिलेखों का महत्व बहुत अधिक है। सागरताल पर प्राप्त अभिलेखों में तुरुष्को के रूप में मुसलमानों का उल्लेख सर्वप्रथम आया है। फरिश्ता के मत के अनुसार भारत में इस्लाम का प्रवेश हिजरी सन् ४४ (ई० सन् ६६४-५) में हुआ। ईसवी आठवीं शताब्दी में नागभट्ट ने सिंध में मुसलमानों को हराया होगा।

इसी काल में 'वर्मन' नामधारी एक त्रैलोक्यवर्मन महाकुमार का भी पता चलता है। यशोवर्मन मौखरी (७२५-७४० ई०) के लगभग १३५ वर्ष पश्चात् हमें त्रैलोक्यवर्मन द्वारा ग्यारसपुर के विष्णु मन्दिर को दान देने का (वि० स० ९३६ का) उल्लेख मिलता है (११) संभव है यह मौखरी वंशज हो और किसी राष्ट्रकूट राजा का स्थानीय शासक रहा हो क्योंकि पास ही वि० सं० ९१७ का पठारी का परबल राष्ट्रकूट का स्तम्भ-लेख है।

ईसवी दसवीं शताब्दी के चार अभिलेख और प्राप्त हुए हैं। सबसे बड़ा ३८ पंक्ति का है जिसमें शिवगण, चामुण्डराज तथा महेंद्रपाल का नाम पढ़ा जाताहै। (६६०) चामुण्डराज का उल्लेख एक और अभिलेख (६५६) में भी है। सम्भव है इस अभिलेख का महेन्द्रपाल भोज का पुत्र हो।

भोज प्रतिहार का पुत्र महेन्द्रपाल राजशेखर आश्रयदाता था १। और उसने अपने महान् पिता के साम्राज्य को स्थिर रखा। फिर भोज द्वितीय ने दो-तीन

१ गायकवाड ओरियन्टल सीरिज में छपी काव्य मिमांसा, पृष्ठ १३।

वर्ष राज्य किया जिसकी मृत्यु के पश्चात् ई० स० ९१०‌ के लगभग महीपाल ने साम्राज्य-भार संभाला। इसके समय में प्रतिहार साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा, परन्तु वह ग्वालियर पर अधिकार किए रहा। महीपाल के पश्चात् देवपाल कन्नौज की गद्दी पर बैठा परन्तु उसे जेजकभुक्ति के चंदेल राजाओं के सामने झुकना पड़ा और अपनी प्रिय विष्णु-प्रतिमा को खजुराहो को चंदेल मंदिर में स्थापन करने को देना पड़ा। विजयपाल के राज्य में कच्छपघात् वज्रदामन ने प्रतिहारों से सन् ९५० ई० के आसपास ग्वालियर गढ़ भी छीन लिया।१

दक्षिण के राष्ट्रकूट इन्द्र ने सन ९१६ महीपाल से कन्नौज छीन ली। इसमें महीपाल को चंदेल राजाओं से भी सहायता लेनी पड़ी थी। २महीपाल ने राष्ट्रकूटों को अपने राज्यकाल के अंतिम भाग में हराया था। परन्तु आज के सम्पूर्ण ग्वालियर भूप्रदेश पर इन प्रतिहारों का राज्य नहीं रहा। राष्ट्रकूट परबल द्वारा सन् ८७० ई० (वि० सं० ९१७) में निर्मित गरुड़ध्वज स्तंभ का लेख (६) परबल के पिता कर्कराज का उल्लेख करता है जिसने 'नाभागलोक' राजा को हराया। यह नाभागलोक मिहिरभोज के प्रपिता नागभट्ट हैं, ऐसा अनुमान किया जाता है।३ इस प्रकार मालवा प्रांत पर राष्ट्रकूटों एवं प्रतिहारों का द्वंद्व चलता रहा। तेरही का स्तंभ-लेख भी यह बतलाता है कि वहाँ कर्णाटों से युद्ध करके एक योद्धा हत हुआ।

जब कर्णाटों के विरोधी योद्धा का स्मारक बन सका तो निश्चित है कि विरोधी अर्थात् प्रतिहार जीते थे। वि० सं० ९६० ई० (ई० सन् ९०३) में गुणराज एवं उन्दभट्ट नामक दो महासामन्ताधिपतियों में तेरही में युद्ध हुआ था (१२) उसमें हत हुए गुणराज के अनुयायी कोट्टपाल का स्मारक-स्तम्भ बनाया गया। सियदोनि के अभिलेख से यह स्पष्ट है कि ९६४ वि० में उन्दभट्ट

---

१ अभिलेख क्रमांक ७००। इसके विषय में श्री गर्दे ने यह अनुमान किया है कि यह योधा कन्नौज के महाराज हर्षवर्धन एवं पुलकेशी द्वितीय के युद्ध में हत हुआ होगा (आर्कोलोजी इन ग्वालियर, पृष्ठ १७)। परन्तु यह अनुमान ठीक नहीं है। यह स्मारक स्तंभ महीपाल प्रतिहार एवं इन्द्र तृतीय के युद्ध से सम्बन्ध रखता है। क्षेमेन्द्र ने अपने नाटक चंडकौशिक में महीपाल द्वारा कर्णाटों की विजय का उल्लेख किया है। वह विजय राष्ट्रकूटों पर ही थी और आर्यक्षेमेन्द्र उसी का उल्लेख कर्णाट विजय के रूप में करते हैं। (गा० ओ० सी० की काव्य मीमांसा, भूमिका पृष्ठ १३)। हर्ष और पुलकेशी का युद्ध तो तेरही से बहुत दूर नर्मदा किनारे हुआ था। उसकी ओर से हत सैनिक का स्मारक तेरही में नहीं बन सकता।

२ ए. इ. भाग १ पृ० १६७

३ अल्तेकर: राष्ट्रकूट एण्ड देयर टाइम्स

महाराजाधिराज परमभट्टारक महेन्द्रपाल का अनुयायी था। महेन्द्रपाल के समय तक प्रतिहार साम्राज्य बहुत अधिक दृढ़ था और हमारा अनुमान यह है कि इन दो महासामन्ताधिपतियों के युद्ध में उन्दभट्ट ही हारा था क्योंकि अन्यथा गुणराज के अनुयायी का स्मारक नहीं बनाया जा सकता था। और यह भी सिद्ध है कि तेरही के दक्षिण-पूर्व में स्थित सियदोनि प्रतिहारों के अधिकार में था। अतएव यह माना जा सकता है कि तेरही का गुणराज राष्ट्रकूटों के अधीन होगा अथवा सीमाप्रांत की डाँवाडोल स्थिति के अनुरूप पक्ष अनिश्चित रखता होगा।

जेजकर्मुक्ति के चंदेल राजा हर्षदेव की सहायता से प्रतिहार महीपाल ने कन्नौज प्राप्त कर ली। परन्तु यही चंदेल राजा आगे प्रतिहार साम्राज्य के तोड़ने में कारणभूत हुए और उसका कुछ अंश उन्हें भी मिला होगा। चंद्रोदय (चंदेल) वंश के यशोवर्मन के सं० १०११ (सन् ९५३-५४) के शिलालेख[१] में उसके पुत्र धंग की राज-सीमा कालंजर से मालव की नदी पर स्थित भास्वत तक, यमुना के किनारे से चेदि देश की सीमा तक तथा आगे गोपाद्रि तक थी। गोपाद्रि को विस्मय का निलय लिखा है:—

आकलञ्जरमा च मालवनदी तीरास्थिते भास्वतः
कालिन्दीसरिस्तटादित इतोप्या चेदिदेशाव [धेः।]

[आ तस्मादपि ?] विस्मयैकनिल [या] द्गोपाभिधानाग्दिरेर्यः
शास्तिक्षि [ति] मायतोर्जितभुजव्यापारलीलार्जि [तां]॥ ४५॥

चंदेरी के पास ही रखेतरा अथवा गढेलना नामक ग्राम के पास उर्र (प्राचीन उर्वशी) नदी के पास चट्टानों पर कुछ मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं और संवत् ९६९ वि० तथा १००? वि० के तिथियुक्त अभिलेख हैं (१६)। इसके अनुसार किसी विनायकपालदेव ने उर्वशी नदी को बाँध कर सिंचाई का प्रबन्ध कराया था। संवत् १०११ में विनायकपालदेव खजुराहे पर चंदेल राजाओं की ओर से शासन कर रहा था ऐसा खजुराहे में प्राप्त उक्त अभिलेख की अंतिम पंक्ति में ज्ञात होता है। उसका शासन चंदेरी के पास तक था, ऐसा रखेतरा के अभिलेख से सिद्ध ोता है। संभवतः विनायकपालदेव चंदेलों की ओर से स्थानीय शासक था।

इस प्रकार चंदेलों का राज्य मालव की नदी (वेत्रवती) के किनारे स्थित भास्वत (भैलस्वामिन् भेलसा) उसके आगे चंदेरी तथा ग्वालियरगढ़ अथवा उसके पास तक था।

---

१ ए० इ० भाग १ पृ० १२९

प्रतिहारों का प्रधान केन्द्र कन्नौज, राज्यकूटों का महराष्ट्र और चंदेलों का महोवा, खजुराहा आदि थे। इस प्रकार यह प्रदेश इस काल के दूसरे साम्राज्य काल में भी अनेक राज्यों का सीमा-प्रदेश ही रहा।

विनयपाल प्रतिहार के कच्छपघात वज्रदामन द्वारा हराये जाने का तिथि से ग्वालियर पर से हिन्दू सामाज्यों ने सदा के लिए विदा ले ली। यह घटना विक्रमी प्रथम सहस्राब्दी के अंत की (लगभग सन् ९५० की) है। इसके पश्चात् हिन्दू शक्तियों का विकेन्द्रीकरण प्रारंभ हो गया। इसी समय लगभग जेजकभुक्ति (बुन्देलखंड) के चंदेल, डाहाल (चेदि) के कलचुरि एवं मालवा के परमारों का उदय हुआ। उधर दक्षिण में राष्ट्रकूटो को हराकर सन ९३० में तैलप चालुक्य प्रबल हुआ। उत्तर पूर्व से इस्लाम की विजयवाहिनियो ने भारत के सिंह द्वार से टकराना प्रारम्भ कर दिया और उनका मार्ग प्रशस्त करने के लिए राजपूत आपस में लड़भिड़ रहे थे।

ग्यारसपुर में एक कुम्हार के यहाँ सीढ़ी में लगा हुआ एक पत्थर मिला है, जिसमें तिथियुक्त अभिलेख है (३२) उसमें वि० सं० १०६७ (ई० १०११) मे एक मठ के निर्माण का उल्लेख है। एक प्रथम गोष्ठिक पदाधिकारी कोकल का नाम भी आया है। परन्तु इस लेख से तत्कालीन इतिहास पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता। केवल यह ज्ञात होता है कि उस समय ग्यारसपुर धार्मिक केन्द्र था।

परमार कच्छपघात तथा अन्य राजपूत (१००० ई० से १४०० ई० तक)

अब हिन्दू साम्राज्यों का युग समाप्त हो गया। सारे भारतवर्ष में अनेक राजपूत राज्य उत्पन्न हो गए और उधर मुसलमानों के हमले भी दृढ़तर एवं प्रबलतर हो गए। इस काल का राजनीतिक इतिहास कुछ हिंदू शक्तियो के आपस में टकर लेने का एवं फिर एक एक कर करके मुसलिम सुल्तानों की अधीनता स्वीकार कर लेने का इतिहास है। भारत की शक्तियों का एकदम विकेन्द्रीकरण हो गया था। ग्वालियर राज्य की वर्तमान सीमाओं में अनेक राजपूत राजवंशों का उदय हुआ। इन सबका पूरा इतिहास देने का प्रयास एक स्वतंत्र पुस्तक का विषय है।

प्रधान रूप से इस काल में इस प्रदेश में दो शक्तियां प्रबल रही। दक्षिण में परमार और उत्तर में कच्छपघात। पश्चिम-दक्षिण के भाग में मन्दसौर-जीरण पर गुहिलोत राज्य करते रहे। चालुक्य, चंदेल, जज्वपेल्ल खीची चौहान, कलचुरि परिहार आदि राजपूत वंश भी प्रभावशाली रहे।

मालवे के परमार भारतवर्ष के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उनके इतिहास को ग्वालियर राज्य में प्राप्त अभिलेखों ने बहुत दृढ़ आधार पर

स्थापित किया है। इनकी वंशावली के साथ-साथ अन्य बातें भी इन अभिलेखों से ज्ञात होती हैं। नीचे इनकी वंशावली दी जाती है :—

१— उपेन्द्र (कृष्णराज) २—वैरिसिंह (प्रथम,वज्रट) ३—सीयक ४—वाक्पतिराज (प्रथम-उज्जैन राजधानी थी) ५—वैरसिंह (द्वितीय, वज्रट स्वामी) ६.श्री हर्ष (सीयक द्वितीय सिंहभट) ७- मुञ्ज (वाक्पतिराज द्वितीय) ८- सिंधुराज (सिंधुल,) ९- भोज १०- जयसिंह (इसका नाम उदयपुर प्रशस्ति में नहीं है) ११- उदयादित्य १२ लक्ष्मदेव १३- नरवर्मा १४- यशोवर्मा १५- जयवर्मा १६- अजयवर्मा १७- विन्ध्यवर्मा १८- सुभटवर्मा १९- अर्जुन वर्मा २०- देवपाल २१- जयतुगीदेव (जयसिंह या जैतसिंह द्वितीय) २२- जयवर्मा द्वितीय २३- जयसिंह तृतीय २४- अर्जुनवर्मा द्वितीय २५- भोज द्वितीय २६- जयसिंह चतुर्थ।

यशोवर्मा के तीन पुत्र थे जयवर्मा अजयवर्मा और लक्ष्मीवर्मा। लक्ष्मीवर्मा स्वतन्त्र राजा न होकर अधीनस्थ शासक रहा और उसकी उपाधि महाराजाधिराज या परमेश्वर न होकर महाकुमार ही रही। इसके पश्चात् इसका पुत्र महा कुमार हरिश्चंद्रदेव इसका उत्तराधिकारी हुआ।

बाघ में मिली ब्रह्मा की मूर्ती पर किसी यशोधवल परमार (७५) का भी उल्लेख है।

मालवे के परमार इस काल में कला और साहित्य के सबसे बड़े संरक्षक थे। परमारवंश के प्रभुत्व का प्रारंभ ईसा की नवमी शताब्दी के प्रारंभ में हो गया था। मुञ्ज और भोज के समय में मालव की कला तथा उसका साहित्य बहुत अधिक उन्नति कर गया था। इसको स्थापत्य एवं मूर्तियों के निर्माण का भी बहुत ध्यान था। भोज के काल की अनेक प्रतिमाएं आज भी मिलती हैं। धार एवं मांडू में वाग् देवी की एवं अनेक विष्णु प्रतिमाएँ इनके काल की मूर्ती कला की प्रतिनिधि हैं। भोज की राजधानी उज्जयिनी थी। आगे चल कर धार को इन्होंने अपनी राजधानी बनाया। भोज के चारो ओर शत्रु मँडरा रहे थे। उसने उत्तर पश्चिम में तुर्कों के आक्रमण को विफल किया, कल्याणपुर के चालुक्यों को हराया। त्रिपुरी के गांगेयदेव को हराकर वृहत् लौह-स्तम्भ का निर्माण किया। अन्त में अनाहिलवाड़ के भीमदेव चेदी के कर्णदेव एवं कर्णाटक राज के संयुक्त आक्रमण से भोज को हारना पड़ा। और १०१५ ई० में उसका शरीरांत हुआ।

भोज के पश्चात परमार जयसिंह प्रथम गद्दी पर बैठा परन्तु इस कुल के गत-गौरव को बढ़ाया उदयादित्य ने। इन्होंने उदयपुर नामक नगर बसाकर एवं उदयेश्वर मंदिर तथा उदयसमुद्र का निर्माण कराकर 'अपर स्वयंभू' नाम को सार्थक किया। इसने डहालाधीश चेदिराजा का संहार किया। गुजरात के कर्ण से इसने अपना गत-राज्य छीन लिया और अरावली पहाड़ तक अपनी विजय-

वाहिनी ले गया। इनका बनवाया हुआ उदयेश्वर मंदिर स्थापत्य एवं तक्षण कला का अत्यंत श्रेष्ठ उदाहरण है। इस परमार वंश का राज्य वि० संवत् १३६६ (ई० स० १३०९) तक चला। इसके पश्चात मालवे पर मुसलमानों का अधिकार हो गया।

इस काल में परमारों के अधिकार का उल्लेख सरदारपुर (बाग बलीपुर) उज्जैन एवं भेलसा जिलों में मिले हैं।

मंदसौर जिले का इस काल का इतिहास अंधकार के गर्त में है। इतना अवश्य ज्ञात है कि ईसा की १० वीं शताब्दी के आसपास वहाँ किसी महाराजाधिराज चामुण्डराज का अस्तित्व था (१९)। वि० सं० १०६६ (२०) में किसी गुहिलोत रानी ने जीरण में मंदिर आदि का निर्माण कराया था। अतएव यह अनुमान है कि वहाँ इस वंश का अधिकार था।

ग्वालियर के अभिलेखों में छह अभिलेखों का सम्बन्ध राजपूतों के इस इतिहास प्रसिद्ध गुहिलपुत्र वंश से है। हमीर, साँगा, प्रताप जैसे स्वातंत्र्य प्रेमी महान् वीरों को जन्म देने वाला यह वंश राजपूत कुलों का तो मुकुट-मणि है ही, संसार के इतिहास में भी स्वतंत्रता की वह्नि को सतत प्रज्वलित रखने वाले वंशो में इसकी गणना सर्वप्रथम की जाती है। मेवाड़ के राजा हिन्दू-सूर्य कहलाते हैं।

इस वंश की प्रारंभिक राजधानी नागह्रद थी। इसवंश का प्रारम्भ गुहदत्त नामक एक सूर्यवंशी राजकुमार ने किया था। इस गुहदत्त का उल्लेख वि० सं० १०३४ के राजा शक्तिकुमार के शिलालेख में इस प्रकार आया है:—

"आनंदपुरविनिर्गतविप्रकुलानन्दनो महीदेवः।
जयति श्रीगुहदत्तः प्रभवः श्रीगुहीलवंशस्य ॥"१

'आनन्दकुल से निकले हुए ब्राह्मणों (नागरों) के कुल को आनंद देने वाला महीदेव गुहदत्त जिससे गुहिलवंश चला विजयी है।"

इसी 'महीदेव' शब्द का अर्थ ब्राह्मण लेकर अन्य अभिलेखों के आधार पर श्रीरामकृष्ण भांडारकर ने इस वंश का मूल पुरुष गुहदत्त नागर ब्राह्मण बतलाया है। श्रीभाण्डारकर ने इन नागरों को विदेशी भी सिद्ध किया है२। श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ३ एवं श्री चि० वि० वैद्य४ भी इस 'गुहदत्त को ब्राह्मण

---

१ इ० ए० भाग ३९, पृ० १९१।
२ ब० ए० सो० ज० पृ० १७६—१८७
३ नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १ पृ० २६८
४ हिस्ट्री आफ् मेडिवेल इण्डिया, भाग २, पृ० ८९

मानते हैं। परन्तु उन्होंने इनका सूर्यवंशी होना माना है। राजपूतों को विदेशी उत्पत्तिकी कल्पना तो कभी की समाप्त हो चुकी है।

इसवंश का नाम अभिलेखों में अनेक रूपमें आया है—गुहिलपुत्र, गोभिलपुत्र गुहिलोतान्वय, गोहिल्य, गुहिलपुत्र तथा गुहिल्ल १। इस वंश में बाप्पारावल हुए जिनकी प्रारंभिक राजधानी नागहृद थी।

बाप्पारावल के इस गुहिलोत वंश के परम्परागत गुरु लकुलीश संप्रदाय के कनफटे साधु रहे हैं २। इस लकुलीश सम्प्रदाय के साधुओं के आराध्य लकुलीश का अवतार भृगुकच्छ (भड़ौच) में हुआ था। हमारे एक अभिलेख (२८) में इस भृगुकच्छ का भी उल्लेख है।

गुहिलपुत्रवंश के हमारे सभी अभिलेख जीरण के पंचदेवरा महादेव के मन्दिर तथा छत्री पर प्राप्त हुए हैं और उनमें से एक वि० सं० १०५३ का है तथा शेष पाँच वि० सं० १०६५ के हैं। जीरण के आसपास का प्रदेश पहले गुहिलोतों के अधिकार में था, और आज भी उदयपुर राज्य की सीमा के पास ही है।

इन अभिलेखों में विग्रहपाल, श्रीदेव वच्छराज वैरिसिंह, लक्ष्मण आदि के नाम आये हैं। चाहमान वंश के श्री अशोय्य का भी उल्लेख है। गुप्तवंश के वसंत की पुत्री सर्वदेवी द्वारा स्तभं निर्माण का भी उल्लेख है।

इन व्यक्तियों की ऐतिहासीकता ढूँढने में हमें अधिक सफलता नहीं मिली। टॉड ने अपने राजस्थान में खुमान (संवत् ८६३) से समरसिंह (संवत् १३ ५) तक के इतिहास को अंधकारकाल कहकर संतोष किया है और यह सूचना दी है कि इस बीच गुहिलपुत्रों और चाहमानों में प्रेम या द्वेषपूर्ण सम्बन्ध रहे ३। चाहमान अशोय्य उसी सम्बन्ध के द्योतक हैं। गहलौत वंशीय ऊपर लिखे व्यक्तियों में कोई राजा ज्ञात नहीं होता क्योंकि शक्तिकुमार (संवत् १०३४) के पश्चात् इन नामों का कोई राजा नहीं हुआ। वैरिसिंह नामक एक राजा विजयसिंह (सं० ११६४) के पहले हुआ है जो संवत् १०६५ के हमारे अभिलेख का वैरिसिंह नहीं हो सकता। अतः ये व्यक्ति केवल राजकुल के हो सकते हैं। जीरण के पास ही मन्दसौर में गुप्तों के प्रतिनिधि रहा करते थे। यह वसंत उन्हीं प्रतापी गुप्तों का कोई वंशज रहा होगा।

---

१ ज० ए० सो० बं० १९०६, भा० ५ पृ० १६८
२ प्र० पत्रिका भ ग १. पृ. २५९
३ टॉडः एनाल्स आफ मेवार पृ. २३२

इन अभिलेखों से गुहिलपुत्र (सीसौदिया) वंश पर यद्यपि अधिक प्रकाश नहीं पड़ता फिर भी उस काल की परिस्थिति का कुछ न कुछ परिज्ञान इनसे होता ही है।

उत्तर में चंदेरी पर इस काल में प्रतिहार वंश की एक शाखा राज्य कर रही थी। इस प्रतिहार शाखा में लगभग तेरह राजा हुए। इनके वंश-वृक्ष देनेवाले शिलालेख चन्देरी (६६३) एवं कदवाहा (६२०) में मिले हैं। नीलकण्ठ, हरिराज, भीमदेव, रणपाल, वत्सराज, स्वर्णपाल, कीर्तिपाल अभयपाल, गोविन्दराज, राजराज, वीरराज एवं जैत्रवर्मन इनमें प्रधान हैं। इनमें सातवाँ कीर्तिपाल बहुत महत्वपूर्ण है। इसने कीर्तिदुर्ग (वर्तमान चंदेरी गढ़) कीर्तिनारायण मंदिर तथा कीर्तिसागर का निर्माण किया। इसके निर्माणों की तुलना उदयादित्य के उदयपुर, उदयेश्वर एवं उदयसागर से की जा सकती है। कीर्तिदुर्ग का प्राचीन नाम नहीं रहा, कीर्तिसागर अब भी प्राचीन नाम चलाए जा रहा है परंतु कीर्तिनारायणका मंदिर आज शेष नहीं है। ये प्रतिहार राजा ईसा की ग्यारहवीं शताब्दी से तेरहवीं के अंत तक चंदेरी, कदवाहा तथा रन्नौद के आसपास राज्य करते रहे। सन् १२९८ (वि० सं०१३५५) में गणपति यज्वपाल ने कीर्तिदुर्ग पर अधिकार कर लिया (१७४१)।

ईसा की नवमी शताब्दी के लगभग मध्यप्रदेश में एक अत्यन्त प्रभावशाली शैव साधुओं का सम्प्रदाय विद्यमान था। उसका प्रतिहार, चेदिराज आदि राज-प्रदेशों पर पूर्ण प्रभाव था। इस प्रकार के पाँच मठों का पता लगा है जिनमें से चार कदवाहा (गुना जिला) रन्नौद (जिला शिवपुरी), महुवा-तेरही (जिला शिवपुरी), सुरवाया ग्वालियर-राज्य में है तथा एक उदयपुर राज्य में है। बिल्हारी में भी इन्हीं शैव साधुओं के लिए चेदिराज केयूरवर्ष की रानी नोहला द्वारा बनाये गये शिव-मंदिर का प्रमाण मिला है।

इन शैव साधुओं के विषय में जो अभिलेख अब तक प्राप्त हुए हैं उनमें अनेक स्थलों बहुत बातें एवं राजाओं के नाम हैं जिनमें से अनेक अब तक पहिचाने नहीं जा सके।

सबसे प्रथम यहाँ इन शिलालेखों से प्राप्त इन शैव साधुओं की वंशावली पर विचार करना उचित होगा। उनकी वंशावली बिल्हारी के शिलालेख १ रन्नौद में प्राप्त शिलालेख (७०२) चन्देहा (रीवाराज्य) के कलचुरि संवत् ७२४ (वि० सं० १०३०) लेख में तथा कदवाहा (६२७ ६२८) के शिलालेख में दी गई है। वे निम्न प्रकार हैं:—

बिल्हारी	रन्नौद	चन्द्रेहा	कदवाहा
१. रुद्र शंभु	१. कदम्बगुहावासिन	१. पुरन्दर	१ पुरन्दर

१ भाग ए. इ. १. पृ. २५१-२५०

२. मत्तमयूरनाथ	२.शंखमठकाधिपति	२. शिखाशिव	२ धर्मशिव
३. धर्म शंभु	३. तेराम्बिपाल	३. प्रभावशिव	३ ईश्वरशिव
४. सदाशिव	४.आमर्दकतीर्थनाथ	४. प्रशान्नाशिव	४ पतंगेश
५. मधुमतेय*	५. पुरन्दर	५. प्रबोधाशिव	
६. चूड़ाशिव	६. कालशिव	(क० स० ७२४)	
७. हृदयशिव	७. सदाशिव		
	८. हृदयेश		
	९. व्योमेश		

*मधुमतेय शाखा
१. पवनशिव
२. शब्दशिव
३. ईश्वरशिव

इन स्थानों के साधुओं पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि बिल्हारी लेख का 'मत्तमयूरनाथ' तथा चन्द्रेहा रन्नौद और कदवाहा लेख का पुरन्दर एक ही व्यक्ति के नाम हैं। रन्नौद लेख में पुरन्दर के लिए लिखा है कि अवन्तिवर्मन नाम राजा उन्हें उपेन्द्रपुर से लिवा कर लाया। पुरन्दर ने राजा के नगर मत्तमयूर में एक मठ बनाया और दूसरा मठ रणिप्रद्र (रन्नौद) में बनाया। बिल्हरी लेख में मतमयूरनाथ के लिए यह लिखा है कि उन्होंने निःशेष कल्मष होकर अवन्ति नृप से पुर लिया। अतः यह निश्चित है कि मत्तमयूर में मठ बनाने के कारण ही पुन्दर का नाम मत्तमयूरनाथ पड़ा। यदि इन मत्तमयूर और उपेन्द्रपुर नामक स्थानों का पता लग सकता तो अवन्तिनृप की गुत्थी भी सुलझ सकती। चन्द्रेहा के शिलालेख से पुरन्दर के पश्चात् पाँचवे साधु प्रबोधशिव की तिथि वि० स० १०७३ ज्ञात होती है।

पुरन्दर के मत्तमयूरनाथ नाम से एक बात का पता और चलता है। रन्नौद लेख के संख्या १ २, ३, ४ के साधु क्रमशः कदम्बगुहा शंखमठ, तेराम्बि तथा अपमर्दक तीर्थ के वासी थे। इनमें से कदम्बगुहा तथा तेराम्बि तो ग्वालियर राज्य में गुना जिले के वर्तमान कदवाहा तथा तेरही हैं जहाँ आज भी उनके मठों के भग्नावशेष मौजूद हैं।

इन की एक शाखा या उसके प्रवर्तक का नाम मधुमतेय (बिल्हारी के नं० ५) भी है। इसका मठ मधुमती (वर्तमान महुआ) नदी के किनारे कहीं होगा।

इन सब मठों में कदवाहा का मठ सबसे पुराना ज्ञात होता है। रन्नौद लेख में पुरन्दर के ऊपर चार पीढ़ियाँ और दी गई हैं। सबसे पूर्व के साधु

कदम्बगुहानाथ हैं। बिल्हारी लेख में भी इनका मूल स्थान कदम्बगुहा माना गया है।

पुरन्दर के पहले यह साधु कदवाहा के आस-पास ही रहे। पुरन्दर ने अपना मठ रणिपद्र (रन्नौद) तथा मत्तमयूर (?) में भी स्थापित किया।

रन्नौद के मठ पर पुरंदर के पश्चात् कालशिव (बिल्हारी लेख का धर्मशम्भु तथा कदवाहा लेख का धर्मशिव) रन्नौद तथा कदवाहा दोनो मठों का प्रधान रहा ज्ञात होता है। इन दोनो मठों का निमंत्रण फिर सदाशिव पर आया कदवाहा के लेख में धर्म शिव के पश्चात् पूरा वंशवृक्ष नहीं है।

सदाशिव के पश्चात् एक मठ मधुमती के तीर पर स्थापित हुआ और इस शाखा का ईश्वरशिव चेदिराज की रानी नोहला के शिवमंदिर के अधीश्वर बने।

चूड़ाशिव (बिल्हारी लेख संख्या ६) या तो मधुमतेय है या उनका रन्नौद से कोई सम्बंध था। बिल्हारी लेख के 'हृदयशिव' रन्नौद लेख के 'हृदयेश' ही हैं।

रन्नौद के लेख के व्योमेश ने रणिपद्र का पुनर्निमाण कराया। उधर कदवाहा के पतंगेश ने वहाँ 'इन्द्रधाम् धवलम् कैलाश शैलोपम्" शिवमंदिरों का निर्माण कराया।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, इन शैव साधुओं के ग्वालियर राज्य की सीमाओं के भीतर चार मठ मिले हैं। कालक्रम में कदवाहा का मठ सबसे प्राचीन है। कदवाहा राज्य के गुना जिले में ईसागढ़ से १२ मील उत्तर की ओर है। यहाँ पर इस विशालमठ के अतिरिक्त पन्द्रह सुन्दर प्राचीन मंदिर हैं।

कदवाहा का मठ संभवतः विक्रमी नवमी शताब्दी के प्रारंभ में बना है। उसके पश्चात् इस स्थान ने अनेक घात प्रतिघात सहे और अन्त में मालवे के सुल्तानों ने कदवाहा के किले को बनवाया। यह किला इस मठ को घेरे हुए है और ज्ञात होता है कि शैब साधुओं के इस आवास में सुल्तानों की फौजों को एवं उनके दफ्तरों को प्रश्रय मिला।

पुरन्दर मत्तमयूरनाथ द्वारा बनवाया हुआ तथा व्योमोश द्वारा पुनर्निमित रन्नौद का मठ भी प्रायः इसी ढंग का बना हुआ है। मधुमती (महुआ) नदी के किनारे बसे हुए महुआ-तेरही ग्रामों में 'मधुमतेय' के मठ तथा शिव मंदिरों के भग्नावशेष मिले हैं। वहाँ के शिवमंदिर का अभिलेख अभी पूर्णतः तथा स्पष्टतः पढ़ा नहीं गया है। वह शिवमंदिर किसी 'वत्सराज' का बनाया हुआ (७०१) है। सुरवाहा के मठ में यद्यपि कोई शिलालेख इस प्रकार का नहीं मिला है, जिसमें

इन शैव साधुओं का उल्लेख हो, फिर भी उसकी निर्माणकला अन्य मठों से इतनी अधिक मिलती हुई है कि उसे इनमें से ही एक अनुमान किया जा सकता है। इस मठ के पास शिवमंदिर भी है जो इस अनुमान की पुष्टि करता है।

रन्नौद में प्राप्त अभिलेख से इन मठों में पालन किए जाने वाले दो नियमों पर भी प्रकाश पड़ता है। यह प्राकृतिक ही है कि शैव तपस्वियों के इस मठ में खाट पर सोने का निषेध है। इस मठ में रात्रि को किसी स्त्री को न रहने दिया जाए ऐसा भी आदेश उक्त अभिलेख में है

प्रतिहार राजाओं में हरिराज धर्मशिव का शिष्य था और भीमदेव का समकालीन ईश्वरशिव था।

पीछे यह उल्लेख किया जा चुका है कि ईसवी सन् ९५० के लगभग वज्रदामन कच्छपघात ने प्रतिहारों से ग्वालियरगढ़ जीत लिया। इन कच्छपघात राजाओं का राज्य ग्वालियरगढ़ एवं उसके आस-पास के प्रदेश पर सन् ९५० से सन् ११२८ के लगभग तक रहा जबकि उनके अन्तिम राजा तेजकरण से परमार्दिदेव, परमाल, परिहार ने ग्वालियर का राज्य ले लिया।

कछवाहों के इस राज्य में उत्तर में सुहानियां, पढ़ावली तथा दक्षिण में नरवर तथा सुरवाया तक का प्रदेश था। इन राजाओं के समय में स्थापत्य एवं मूर्तिकला ने विशेष प्रसार पाया। ग्वालियरगढ़ के सास-बहू के मन्दिर, सुहानियां का का ककनमढ़ पढ़ावली के मन्दिर तथा सुरवाया के मन्दिर इन्हीं के बनवाए हुए हैं। इनके ये निर्माण इस काल की कला के प्रतिनिधि हैं। जिस प्रकार उदयपुर का उदेश्वर मन्दिर अपने इस काल की गौरवशालिनी कृति है उसी प्रकार ग्वालियरगढ़ का सास-बहू का मंदिर मध्यकाल की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में हैं।

इस वंश के ग्वालियर-गढ़ पर अधिकार करने के पूर्व सिंहपानिय (सुहानियाँ) राजधानी थी, ऐसा ज्ञात होता है। वज्रदामन कच्छपघात् ने गोपगिरि को जीता, ऐसा सास-बहू के मंदिर के अभिलेख (५५-५६) से स्पष्ट है। सुहानियां के संवत् १०३५ के अभिलेख २०१ में वज्रदामन कच्छपघात का उल्लेख है। इसके पश्चात् ग्वालियर के कच्छपघातों का वंशवृक्ष संवत् ११५० के सास-बहू तथा ११६१ के ग्वालियर-गढ़ के लेखों ५५-५६ तथा ६१ में है। यह वंशवृक्ष निम्न प्रकार से है—

१—लक्ष्मण, २—वज्रदामन, ३—मंगलराज ४—कीर्तिराज ५—मूलदेव (भुवनपाल, त्रैलोक्यमल) ६—देवपाल ७—पद्मपाल ८—सूर्यपाल ९—महीपाल १०—भुवनपाल एवं ११—मधुसूदन।

इसके अतिरिक्त कच्छपघातों की एक शाखा का पता दुबकुण्ड के वि० संवत् ११४५ के लेख (५४) से ज्ञात होती है—१ अर्जुन, २—अभिमन्यु, ३—विजयपाल तथा ४—विक्रमासिंह।

कच्छपघातों की एक शाखा नलपुर (नरवर) में राज्य कर रही थी, ऐसा वि० सं० ११७७ के ताम्रपत्र (६५) से प्रकट है। इसमें १—गगनसिंह २—शारदासिंह तथा ३—वीरसिंह का उल्लेख है। नरवर में कच्छपघातों का राज समय की ऊँच-नीच देखता हुआ बहुत समय तक रहा।

कच्छपघातों की इन शाखाओं ने अत्यन्त विशाल एवं भव्य निर्माण किये हैं, परन्तु इन कतिपय शिलालेखों के अतिरिक्त इनके विषय में अधिक विस्तार से कुछ ज्ञात नहीं है। इनका अन्तिम राजा तेजकरण अपनी प्रेम कथा के कारण आज भी जनश्रुति में सुरक्षित है। तेजकरण अथवा दूल्हाराजा अपना राज अपने भानजे परमार्दिदेव को सौंप कर देवसा के रणमल की राजकुमारी मारौनी से विवाह करने चल पड़ा। एक वर्ष बाद जब दूल्हा और मारौनी लौटे तो भानजे ने ग्वालियरगढ़ न लौटाया। यह ढोला-मारौनी की प्रेम कहानी आज भी इस प्रदेश के जन-मन का रञ्जन करती है।

कच्छपघातों (कछवाहों) के पश्चात् इस प्रदेश का शासन परिहारों के हाथ आया। अनुमान यह किया जाता है कि यह परिहार राजा कन्नौज के राठौर राजाओं की अधीनता स्वीकार करते थे।१

परिहार राजवंश के सन् ११२९ से १२११ तक परमालदेव (११२९), रामदेव (११४८), हमीरदेव (११५५), कुबेरदेव (११६८), रत्नदेव (११७९), लौहंगदेव (११९४) तथा सारंगदेव (१२११) सात राजाओं का वर्णन है। इनके राज्य का कोई हाल ज्ञात नहीं है। मुसलमान इतिहासकार लिखते हैं कि ई० स० ११९६ (हिजरी ५९२) में ऐबक ने ग्वालियर जीता। कनिंघम ने लिखा है२ कि सन् १२१० (हिजरी ६०७) में ऐबक के बेटे आराम के राज्य में हिन्दुओं ने ग्वालियरगढ़ को फिर जीत लिया और १२३२ तक तक वह परिहारों के पास रहा।

कुरैठा ताम्रपत्रों (६७, ११०) से यह ज्ञात होता है कि यह विजय परिहारों की न होकर प्रतिहारों की थी। इन ताम्रपत्रों में एक प्रतिहार वंशावली दी है। इसके अनुसार नटुल का पुत्र प्रतापसिंह था। प्रतापसिंह का पुत्र 'विग्रह' एक म्लेच्छ राजा से लड़ा और गोपगिरि (ग्वालियर-गढ़) को जीता। उसके चाहमान कल्हणदेव की पुत्री लाल्हणदेवी से मलयवर्मन प्रतिहार हुआ। मलयवर्मन के सिक्के नरवर, ग्वालियर और झाँसी में मिले हैं और उनपर सं० १२८० से १२९० तक की तिथि पड़ी है।३

---

१ आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३७६।
२ आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३७९।
३ क० आ० स० ई० भाग २, पृ० ३१४-३१५।

इस मलयवर्मन ने संवत् १२७७ [सन् १२२०] में यह दान-पत्र लिखा है। इस प्रकार अनुमान से 'विग्रह' ने आराम से ग्वालियर-गढ़ जीता था।[१] जब अल्तमश ने ग्वालियर-गढ़ पर आक्रमण किया तो राजपूतों की ओर से लड़नेवालों के जो नाम खंगराय ने चौहान, जादो, पाण्डु, सिकरवार, कछवाहा, मोरी, सोलंकी, बुन्देला, बघेला, चन्देल, ढाकर, पवार, खीची, परिहार, भदौरिया, बड़गूजर आदि गिनाये हैं। ये जातियाँ समय-समय पर छोटी-मोटी रियासतें कायम करती रहीं। अल्तमश ने सन् १२३५ में ग्वालियर-गढ़ जीत लिया और राजपूतों ने जौहर कर लिया।

परिहारों का राज्य दक्षिण में नरवर तथा सुरवाया तक था। जब ग्वालियर गढ़ पर मुसलमानी राज्य स्थापित हो गया था उसी समय सन् १२४७ (संवत् १३०४) में नरवर में एक नये राजवंश की स्थापना हुई। जज्वपेल्लवंशी चाहड़ ने नलगिरि [नरवर] एवं अन्य नगर जीत लिये। इस प्रतापी यज्वपाल वंश का राज्य बारहवीं शताब्दी के अन्त तक [संवत् १३५७] रहा जब कि नरवरगढ़ अल्तमश द्वारा जीत लिया गया।

इस राजवंश की स्थापना संवत् १३०४ [सन् १२४७ ई०] में चाहड़ नामक व्यक्ति ने की और संवत् १३५७ तक इस वंश में आसल्लदेव, नृवर्मन गोपालदेव एवं गणपतिदेव नामक चार राजा और हुए।

ग्वालियर पुरातत्व विभाग ने इनके उल्लेख युक्त प्रायः तीस अभिलेख खोजे हैं। इनमें इस राजवंश का इतिहास मिलता है। कुछ मुद्राएँ भी प्राप्त हुई हैं, परन्तु उनके द्वारा अभिलेखों से प्राप्त जानकारी में कोई वृद्धि नहीं होती।

अब तक इस राजवंश को इतिहासज्ञ 'नरवर के राजपूत' के नाम से बोधित करते रहे हैं। परन्तु भीमपुर के संवत् १३१९ [सं० १२२] के अभिलेख में इस वंश के नाम के विषय में लिखा है—

'यज्वपाल इति सार्थक नामा संबभूव इति वसुधाधववंशः'

और कचेरी के संवत् १३३९ [सं० १४१] में जयपाल मूल पुरुष से उद्भुत होने के कारण इस वंश का नाम 'जजपेल्ल' लिखा है—

'गम्यो न विद्वेषिमनोरथानां रथस्पदं भानुमतो निरुंधन्।
वासः सतामस्ति विभूतिपात्रं रम्योदयो रत्नगिरिर्गिरीन्द्रः॥
तत्र सौर्यभयः कश्चिन्निर्मितो महरुण्डया।
जयपालो भवन्नाम्ना विद्विषां दुरतिक्रमः॥
यदाख्यया प्राकृतलोक वृन्दैरुच्चार्यमाणः शुचिरुर्जित श्रीः।
बलावदानार्जितकांत कान्तिर्वंश परोभूज्जजयेल्ल संज्ञः॥

१ प्रो० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१६ पृ० ५९।

भीमपुर का 'यज्वपाल' 'जजपेल्ल' का ही संस्कृत रूप ज्ञात होता है।

इस वंश में चाहड़ के पूर्व के केवल दो नाम ज्ञात हैं। वि० स० १३३६ के कचेरी (१४१) के अभिलेख में चाहड़ के पूर्व के किसी जयपाल का नाम दिया हुआ है। वह वह अत्यन्त पराक्रमी था और रत्नगिरि नामक गिरीन्द्र का स्वामी था, इससे अधिक कुछ ज्ञात नहीं है। भीमपुर के वि० सं० १३१९ के अभिलेख (१२२) में चाहड़ की वीर चूडामणि श्री य [प] रमडिराज का उत्तराधिकारी बतलाया है। परन्तु इसके विषय में भी अधिक ज्ञात नहीं है।

इस वंशका नलपुर (नरवर) से संबोधित इतिहास चाहड़ से प्रारम्भ होता है। चाहड़ के विषय में कचेरी के उक्त अभिलेख में लिखा है—

तत्राभवन्नृपति रुग्रतरप्रतापः श्रीचाहड़स्त्रिभुवनप्रथमानकीर्तिः ।
दोर्दण्डचंडिमभरेण पुरः परेभ्यो येवाहृता नलगिरिप्रमुखा गरिष्ठाः ॥

अर्थात् इस पराक्रमी चाहड़ ने नलगिरि (नरवर) एवं अन्य बड़े पुर शत्रुओं से जीत लिये। चाहड़ के नरवर में जो सिक्के मिले हैं उनमें सं० १३०३ से १३११ तक की तिथि मिलती है। चाहड के नाम युक्त सं० १३०० का एक अभिलेख (१०७) उदयेश्वर मंदिर की पूर्वी महराब पर मिलता है, जिसमें उसके दान का उल्लेख है और दूसरा अभिलेख (१११) एक सती-स्तम्भ पर वि० सं० १३९४ का है। संभवतः चाहड़ का राज्य गुना जिले तक था, उदयपुर में तो वह केवल तीथयात्रा के लिए गया ज्ञात होता है। वि० सं० १२२२ का उदयेश्वर मन्दिर का चाहड़ ठाकुर का अभिलेख किसी अन्य चाहड़ का है जो संभवतः कुमारपालदेव का सेनापति था।

कदवाहा जैन-मन्दिर में एक शिलालेख वि० सं० १४५१ का [२३२] लगा हुआ है। ज्ञात यह होता है कि यह पत्थर कहीं अन्यत्र से लाकर जैन-मंदिर में लगा दिया है। इसमें मलच्छन्द के पुत्र साहसमल्ल के आश्रित कुमारपाल द्वारा बावड़ी बनवाने का उल्लेख है। साहसमल्ल का उल्लेख सुरवाया के वि० सं० १३५० के अभिलेख [१६३] में भी है। इस कदवाहा के लेख में मलच्छन्द को चाहड द्वारा आदर प्राप्त होना लिखा है और चाहड़ के विषय में लिखा है कि उसने मालवे के परमारों को व्यथित किया। चाहड़ का राज्य सुरवाया पर भी होगा।

चाहडदेव के पश्चात् नरवर्मदेव राजा हुआ। कचेरी के अभिलेख [१४१] में उसके विषय में लिखा है –

तस्मादनेकविधविक्रमलब्धकीर्तिः पुण्यश्रुतिः समभवन्नरवर्मदेवः ॥

वि० सं० १३३८ के नरवर के अभिलेख (१४०) तथा नरवर के एक अन्य तिथि रहित अभिलेख (७०४) में लिखा है कि आसल्लदेव के पिता

नृवर्मन् ने धार के दम्भी राजा से चौथ वसूल की। यद्यपि परमार लोग इस समय मुसलमानों के आक्रमण से व्यथित थे परन्तु इतनी दूर धावा बोलनेवाला यह नरवर्मदेव प्रतापी अवश्य था। चाहड़ के समय से, मालवे के परमारों से होनेवाली छेड़छाड़ में नरवर्मदेव अधिक सफल हुआ ज्ञात होता है। इसका राज्य बहुत थोड़े समय तक रहा क्योंकि इसके सिक्के प्राप्त नहीं हुए।

नरवर्मदेव के पश्चात् उसका पुत्र आसल्लदेव गद्दी पर बैठा। इसके समय के दो तिथियुक्त वि० सं० १३१९ तथा १३२७ के भीमपुर एवं राई के (१२२ तथा १२८) अभिलेख मिलते हैं। एक अपूर्ण तथा तिथिहीन लेख (७०४) में भी आसल्लदेव का उल्लेख है। इसके सिक्के भी अनेक मिले हैं, जिनपर सं० १३११ से १३३६ तक की तिथि पड़ी हुई है। लगभग २५ वर्ष के राज्य में आस ल्लदेव ने सम्पूर्ण वर्तमान शिवपुरी जिले तथा कुछ भाग गुना जिले पर राज्य किया।

आसल्लदेव के पश्चात् उसका पुत्र गोपालदेव राजा हुआ। गोपालदेव के राज्यकाल का प्रारम्भ १३३६ के बाद माना जा सकता है। इसके समय में पुनः युद्ध प्रारम्भ हुए। सबसे प्रधान युद्ध हुआ जेजाभुक्ति (बुन्देलखण्ड) के राजा गोपालदेव से। उसमें गोपालदेव विजयी हुआ, जैसा कि कचेरी के अभिलेख में दिया है—

'श्रीगोपालः समजनि ततो भूमिपालः कलानां
तन्वन्कीर्तिसमिति सिकता निम्नगा कच्छभूमौ।
जेजाभुक्ति प्रभुमधिबलं वीरवर्मा (ण) जित्वा
चन्द्र क्ष (क्षि) ति धरपति (लक्ष्मणं) सायुगीनां।

यह युद्ध नरवर के पास ही बंगला नामक ग्राम में हुआ था। वहाँ आज भी अनेक स्मारक-स्तम्भ खड़े हैं, जिनपर श्रीगोपालदेव की ओर से लड़ते हुए आहत वीरों के स्मारक लेख हैं। इनमें से एक पर लिखा है—

ॐ। सिद्धिः॥ संवत् १३३८
चैत्र सुदि ७ शुक्रे वालुवा
सरित्तीरे युद्धं सह वीर
वर्म्मणः। आदि

तथा एक अन्य लेख में लिखा है—

वालुका सरितस्तीरे
संर (ग्रा) में वीरवर्म्मणः। यु

सु (यु) धे तुरगारूढो निहत्य सु
भटान्वहून ॥ २ ॥ सं० १३३८
चैत्र सुदि ७ शुक्रवारे। श्री नलपुरे
श्री महाराज श्रीपालदेव
कार्ये चंदिल्ल महाराज श्री
वीरवर्मा संग्राम व्यक्तिकरे। आदि।

ज्ञात यह होता है कि चंदेल राजा वीरवर्मन ने ही गोपालदेव पर आक्रमण किया था, तभी नलपुर के इतने पास युद्ध हो सका। जेजाभुक्ति का यह बीरवर्मन चंदेल परगना करेरा के कुछ भाग पर भी राज्य कर रहा होगा।

गोपालदेव के समय में भवन-निर्माण अधिक हुए। उस काल के अनेक लेख कूप-वापी आदि के निर्माण के ही हैं और कुछ सती-स्तंभ हैं।

गोपालदेव के उल्लेखयुक्त अभिलेख वि० सं० १३४८ तक के (१५९) मिलते हैं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इनके पुत्र गणपतिदेव इसके पश्चात् ही राज्याधिकारी हुआ। गणपतिदेव के राज्यकाल के उल्लेखयुक्त वि० सं० १३५० का अभिलेख (१६३) मिला है। अतएव वह १३५० के पूर्व तथा १३४८ के पश्चात् राज्याधिकारी हुआ। इस गणपति ने कीर्तिदुर्ग (चन्देरी) को जीता ऐसा नरवर के वि० सं० १३५५ के एक अभिलेख (१७४) में उल्लेख है।

इस गणपति की विजय-कथा वि० सं० १३५५ से पूर्व में ही समाप्त हो गई। यद्यपि फिर उसके राज्य का उल्लेख वि० सं० १३५६ (सं०१७५) तथा १३५७ (सं १००) के सती स्तंभों में है, परन्तु फिर मुसलमानों की विजयवाहिनी से टकराकर, चाहड़ का यह वंश समाप्त हो गया।

पद्मावती और नलपुर के नागों के अंतिम राजा का नाम गणपति था, वह हारा सम्राट् समुद्रगुप्त के हाथों, जज्वपेल्लवंश के अंतिम राजा का नाम भी गणपति था और वह सुल्तानों द्वारा हराया गया।

इस राजवंश के राजा साहित्य के प्रेमी थे, गुणियों के आश्रयदाता एवं धर्मात्मा थे, ऐसा उनके अभिलेखों में लिखा है, परन्तु खोज के अभाव में अभी उनके आश्रय में पनपाने वाला साहित्य प्राप्त नहीं हो सका है।

तोमर—अब केवल एक ऐसा हिन्दू राजवंश का उल्लेख शेष है जिसने अपना स्वतंत्र अस्तित्व मुगलों के पूर्व कायम रखा। ग्वालियर के तोमर-राजा अपनी सैनिक शक्ति एवं राजनीतिक चातुर्य द्वारा प्रायः एक शताब्दी तक केवल अपना राज्य बनाये रहने में ही सफल न हुए वरन् उन्होंने अनेक कलाओं को आश्रय भी दिया तथा प्रजा का पालन किया।

सन १३०५ में भारत पर तैमूरलंग ने आक्रमण किया और भारत में मुसलिम सत्ता डाँवाडोल हो गई। इसी समय अवसर पाकर तोमरवंशके वीरसिंह ने ग्वालियर-गढ़ पर अधिकार कर लिया। उसके पश्चात् उद्धरणदेव (१४००) विक्रमदेव, गणपतिदेव (१४१६) डूगरेन्द्रसिंह, कीर्तिसिंह, कल्याणमल्ल और मानसिंह (१४८६) तोमरवंश के अधिकारी हुए। मानसिंह के बाद तोमरों को लोदियों ने हरा दिया और मानसिंह के बेटे विक्रमसिंह पानीपत के युद्ध में इब्राहीम लोदी को ओर से लड़े थे।

तोमर वंश के यद्यपि अनेक अभिलेख प्राप्त हुए हैं। वे अधिकांश मूर्तियों की चरण-चौकियों के लेख है, जिनसे नाम और तिथि के अतिरिक्त कुछ अधिक जानकारी नहीं मिलती। इस कमी की पूर्ति मुस्लिम इतिहासकारों के वर्णनों से होती है।

तोमरों को प्रारंभ से ही मुसलमानों से लोहा लेना पड़ा था। मालवा का हुशंगशाह और दिल्ली का मुबारकशाह डूगरेन्द्रदेव को सतत कष्ट देते रहे थे। हुशंगशाह से पीछा छुड़ाने को उसे मुबारकशाह की सहायता लेनी पड़ी थी और उसे कर भी देना पड़ा था। परन्तु डूगरेन्द्रसिंह अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रख सके थे। यहां तक की उन्होंने सन् १४३८ में नरवर के गढ़ को घेर लिया जो कुछ समय से मालवे के अधीन हो गया था। यद्यपि डूगरेन्द्रसिंह इस प्रयास में असफल रहे (फरिश्ताः ब्रिग्स १, ५१६) परन्तु आगे नरवर तोमरों के अधीन हो अवश्य गया क्योंकि उनकी वंशावली नरवर के जयस्तंभ (जैतखंभ) पर उत्कीर्ण है।

डूगरेन्द्रसिंह के समय में राजनीतिक रूप से तोमर बहुत प्रबल हो गये थे। उत्तर-भारत में उनकी पूरी धाक थी और देहली. जौनपुर एवं मालवा के मुसलिम राज्यों के बीच में स्थित इस हिन्दू राज्य से सब सहायता भी माँगते थे और समय पाकर उसे हड़प जाने की चिंता में भी थे।

डूगरेन्द्रदेव के तीस वर्ष के राज्य के पश्चात् उनके पुत्र कीर्तिसिंह का राज्य प्रारंभ हुआ। इन्हें भी अपने २५ वर्ष के लम्बे राज्य में अपना अस्तित्व बचाने के लिए कभी जौनपुर और कभी दिल्ली को मित्र बनाना पड़ा। इनके राज्यकाल में ग्वालियर-गढ़ की जैन-मूर्तियाँ बन चुकी थीं।

कल्याणमल के राज्य-काल की कोई घटना का उल्लेख नहीं है, परन्तु उसके पुत्र मानसिंह ने ग्वालियर के मान को बहुत ऊँचा उठाया। इनके राज्य-काल में दिल्लीके बहलोल लोदीने ग्वालियर पर आक्रमण प्रारंभ कर दिये। कूटनीतिसे और कभी धन देकर मानसिंह ने इस संकट से पीछा छुड़ाया। बहलोल १४८९ में मरा और उसके पश्चात् सिकंदर लोदी गद्दीपर बैठा। इसकी ग्वालियर पर दृष्टि थी

परन्तु उसने इस प्रबल राजा की ओर प्रारंभ में मैत्री का ही हाथ बढ़ाया और राजा को घोड़ा तथा पोशाक भेजी। मानसिंह ने भी एक हजार घुड़सवारों के साथ अपने भतीजे को भेंट लेकर सुलतान से मिलने बयाना भेजा। इस प्रकार महाराज मानसिंह सन् १५०७ तक निष्कंटक राज्य कर सके। १५०१ में तोमरों के राजदूत निहाल से क्रुद्ध होकर सिकंदर लोदी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया। मानसिंह ने धन देकर एवं अपने पुत्र विक्रमादित्य को भेजकर सुलह कर ली। सन् १५०५ में सिकंदरलोदी ने फिर ग्वालियर पर आक्रमण कर दिया। अबकी ग्वालियर ने सिकंदर के अच्छी तरह दांत खट्टे किये। उसकी रसद काट दी गई और बड़ी दुरवस्था के साथ वह भागा। सन् १५१७ तक फिर राजा मान को चैन मिला। परन्तु इसबार सिकंदर ने पूर्ण संकल्प के साथ ग्वालियर पर आक्रमण करने की तैयारी की। तयारी कर रहा था कि सिकंदर मर गया।

सिकंदरके बाद इब्राहीम लोदी गद्दी पर बैठा। राज्य सँभालते ही उसके हृदय में ग्वालियर-गढ़ लेने की महत्वाकांक्षा जाग्रत हुई। उसे अपने पिता सिकंदर और प्रपिता बहलोल की इस महत्वाकांक्षामें असफल होने की कथा ज्ञात ही थी अतः उसने अपनी संपूर्ण शक्ति से तैयारी की। जब गढ़ घिरा हुआ था उसी समय मानसिंह की मृत्यु हो गई। मानसिंह के पश्चात् तोमर लोदियों के अधीन हो गये। विक्रमादित्य तोमर अपने नाम में निहित स्वातंत्र्य की भावना को निभा न सके।

मानसिंह जितने बड़े योद्धा और राजनीतिज्ञ थे उतने ही बड़े कला के पोषक थे। उन्होंने तोमर कीर्ति को अत्यधिक बढ़ाया। उन्होंने सिंचाई के लिए अनेक झीलें बनवाई। उनके द्वारा निर्मित मानकौतूहल संगीत की प्रमाणिक पुस्तक समझी जाती रही है। उन्होंने स्वयं अनेक रागों को रूप दिया।

मानसिंह का निर्मित 'चित्र-महल जिसे अब 'मानमन्दिर' कहते हैं, हिन्दु-स्थापत्य-कला का, ग्वालियर ही नहीं, सम्पूर्ण भारत में अप्रतिम उदाहरण है। मध्यकाल के भवनों में हमें धार्मिक भवना पूर्ण या ध्वस्त रूप में मिले हैं। जो प्रासाद राजपूतों के मिले भी हैं वे मुगलकालीन हैं और उनपर मुगल स्थापत्य का प्रभाव लक्षित होता है। यह पूर्व मुगलकालीन राजमहल ही एक ऐसा उदाहरण है जो विशुद्ध हिन्दु शैली में बना है और जिसने मुगल स्थापत्य को प्रभावित किया है। इस स्थापत्य को सजाने के लिए अत्यन्त सुन्दर मूर्तियों का निर्माण किया गया है। विशेषता यह है कि यह मूर्तियां पत्थर को खोद कर भी बनी हैं और अत्यन्त चटकदार रंग के प्रस्तरों से भी बनी हैं।

मान मंदिर-के आँगनों में खंभों, भीतों तोड़ो, गोखों आदि में अत्यंत

सुन्दर खुदाई का काम हुआ है और पुष्पों मयूरों तथा सिंहों आदि की सुन्दर आकृतियाँ बनी हैं। दक्षिणी एवं पूर्वी पार्श्व में नानोत्पलखचित हंस पंक्ति कदली वृक्ष, सिंह, हाथी आदि अत्यंत मनोरम बने हैं। इनके रंग आज इतनी शताब्दियों के बीत जाने पर भी अत्यंत चटकीले बने हुए हैं। यह महल अपेक्षाकृत छोटा है द्वार आदि भी बहुत छोटे हैं और बाबर ने अपने जीवन-संस्मरण में जहाँ इसकी कला की भूरि भूरि प्रशंसा की है, वहां इसके छोटेपन की शिकायत की है। परन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि यह कलाकृत्ति उस मानसिंह ने खड़ी की है जिसे प्रतिक्षण शत्रुओं से लोहा लेने को तत्पर रहना पड़ता था और जिसे अपने चित्रमहल को भी यही सोच कर बनवाना पड़ा कि यदि अवसर आए तो उसकी राजपूत रमणियां भी आक्रमणकारी को छोटे-छोटे द्वारों की बगल में खड़ी होकर तलवार से पाठ पढ़ा सकें।

इस महल की नानोत्पलखचित चित्रकारी, इसमें मिलनेवाली उत्कीर्णक की शैली का कौशल इसे भारत की महानतम कलाकृतियों में रखता है। इसके दक्षिणी पार्श्व की कारीगरी को देखकर कहा जा सकता है कि मानसिंह हिंदू शाहजहाँ था उसके पास न तो शाहजहाँ का साम्राज्य था और न शांति, अन्यथा वह उससे कहीं अच्छे निर्माण कर जाता। इस प्रासाद के निर्माण से मुगल बादशाहों ने पर्याप्त स्फूर्ति ग्रहण की होगी और आगरा की नानोत्पलखचित मीनाकारी के लिए ग्वालियर के उन कारीगरों के वंशजों को बुलाया होगा, जिन्होंने मान-मंदिर के निर्माण में भाग लिया था।

तोमरों की राज्य-सीमा में वर्तमान गिर्द, मुरेना, श्योपुर, नरवर जिलों के भाग थे।

तोमरों की ग्वालियर-गढ़ की जैन-प्रतिमाएँ ही उल्लेखनीय हैं। ग्वालियर गढ़ के चारों ओर ये जैन प्रतिमाएँ निर्मित हुई हैं। इनकी चरण-चौकियों पर खुदे लेखों से ये सब १४४० (१४९७) और १४७३ (सं० १५३०) के बीच डूंगरेन्द्रसिंह के राज्यकाल में खोदी गई हैं। ये मूर्तियाँ उत्कीर्णक के अपार धैर्य की द्योतक हैं। ग्वालियर-गढ़ की प्रत्येक चट्टान जो खोदने योग्य थी उसे प्रतिमा के रूप में बदल दिया गया और यह सब हुआ ऊपर उल्लिखित ३२-३३ वर्षों में।

इनके निर्माण के कुछ वर्ष बाद ही १५२७ में बाबर ने अपनी आज्ञा से उरवाहीद्वार की प्रतिमाओं का ध्वस्त कराया। इस घटना का बाबर ने अपने आत्म-चरित्र में बड़े गौरव के साथ उल्लेख किया है। इन प्रतिमाओं के मुख तोड़ दिये गये थे, परन्तु चूने के द्वारा वे अब फिर बना दिये गये हैं।

तोमरों के बाद का ऐतिहासिक विवेचन इस पुस्तक में समीचीन एवं अभीष्ट नहीं है।

भौगोलिक विवेचन

इन अभिलेखों का अध्ययन करते समय मेरी दृष्टि में इतिहास-प्रसिद्ध अथवा अप्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ-साथ अनेक भौगोलिक नाम भी आए। इन नामों में कुछ तो ऐसे हैं, जिनके स्थलों का पता निश्चित रूप से लग जाता है और कुछ ऐसे हैं जिनके वर्तमान स्थनों का पता नहीं लग सका है। जिनका पता नहीं लग सका उनमें कुछ तो ऐसे ग्राम हैं जो कालान्तर में ऊजड़ हो गये हैं और कुछ की खोज नहीं हो सकी है।

आगे हम इन दोनों प्रकार के स्थलों का उल्लेख करेंगे। संभव है कुछ विद्वान अज्ञात स्थलों के विषय में कुछ खोज बता सकें। इस प्रसंग में केवल ग्राम, नगरों आदि के ही नहीं नदी, वन आदि के प्राप्त नामों का भी उल्लेख किया जायगा। इस प्रयोजन में हम वर्तमान जिलों के क्रम में ही स्थलों को लेंगे।

यहाँ हमने उन स्थलों को छोड़ दिया है. जिनका आज भी वही नाम है जो प्राचीन काल में था।

सर्व प्रथम गिर्द ग्वालियर जिले को लें। इनमें सबसे पूर्व ग्वालियर-गढ़ आता है। इसी ग्वालियर-गढ़ पर से इस राज्य को नाम प्राप्त हुआ है। विभिन्न अभिलेखों में इस पर्वत के पाँच नाम मिलते हैं—१ गोप पर्वत (६१६) (२) गोपगिरीन्द्र (१६) (३) गोपाद्रि (९ ५५,५६,१३२.१७४) (४) गोपगिरि (९,९७) ५ गोपाचल दुर्ग (१७४,२५५,२७७,२६६,३४१)।

इस गोपाचल के आसपास के स्थलों का भी उल्लेख एक अभिलेख (६) में विस्तार से आया है। इसमें कुछ मंदिरों को दान दिया गया है। इसमें उल्लिखित वृश्चिकाला नदी संभवतः वर्तमान स्वर्णरेखा नदी है। इसमें लिखे हुए तीन ग्रामों का पता अभी नहीं लगाया गया है। वे हैं—(१) चुड़ापल्लिका (२) जयपुराक (३) सर्वेश्वरपुर।

गिर्द जिले में दूसरा स्थल पद्मपवाया है। इसका प्राचीन नाम पद्मावती ग्वालियर-राज्य के भीतर पाये गये किसी अभिलेख में तो नहीं है परन्तु खजुराहा में प्राप्त एक अभिलेख में इसका नाम तथा वर्णन आया है (ए० इ० भाग १, पृष्ट १४९) हिजरी सन् ९११ के एक प्रस्तर लेख (५६६) में पवाया में 'अस्कंदराबाद' किला बनाने का उल्लेख है। यह किला सिकन्दर लोदी के राज्य में सफदरखां ने बनवाया। परन्तु पवाया ने लोदियों का दिया यह नाम कायम न रखा और वह लोदियों के साथ ही चला गया।

जनरल कनिंघम ने अपनी पुरातत्त्व की रिपोर्ट में लिखा है कि पारौली ग्राम का प्राचीन नाम एक प्राचीन शिलालेख में पाराशर ग्राम दिया हुआ है (आ० स० इ० रि० भाग २०, पृ० १०५)। जनश्रुति पढ़ावली का प्राचीन नाम धारौन बतलाती है।

गिर्द जिले के उत्तर-पूर्व में भिण्ड का जिला है। इसमें भदावर का वह भूखण्ड है जिसे कभी भद्रदेश कहा गया था। परन्तु अभिलेखों में जिले के स्थलों के बहुत प्राचीन नाम ज्ञात नहीं हो सके हैं। केवल संवत् १७०१ के एक अभिलेख (४३८) से यह ज्ञात होता है कि अटेर गढ़ का नाम उस समय देवगिरि था। भदावर के निवासी भदौरिया ठाकुरों का उल्लेख एक तिथिहीन लेख (६४४) में है।

भिण्ड जिले के पश्चिम की ओर मुरैना जिला है। इस जिले में दो स्थल ऐसे हैं जिनके प्राचीन नाम हमारे अभिलेखों में आये हैं। इनमें एक स्थान सुहानिया है। यह स्थल प्राचीन समय में हिन्दू धर्म एवं जैन सम्प्रदाय का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। वहाँ ककनमढ़ नामक शिवमंदिर है, जिसकी मूर्तिकला के उदाहरण अत्यंत भव्य हैं। जनश्रुति यह है कि यह मंदिर कनकावती नामक रानी की आज्ञा से बना था। इसमें कहाँ तक सत्य है, यह ज्ञात नहीं क्योंकि इसमें कोई अभिलेख नहीं मिला। ग्वालियर गढ़ के सास-बहू' के मंदिर के अभिलेख (५५-५६) में यह लिखा है कि कच्छपघात महाराज कीर्तिराज ने सिंहपानिय में पार्वती पति शिव का एक मन्दिर बनवाया था। यह सिंहपानीय ही सुहानियाँ है और यह ककनमढ़ मन्दिर कीतिराज कच्छपघात द्वारा बनवाया गया है, ऐसा अनुमान किया जा सकता है। कनकावती यदि कोई होगी तो इन्हीं कीर्तिराज की रानी होगी।

इस जिले का कोतवाल नामक स्थान भी अत्यन्त प्राचीन है और इसका प्राचीन नाम कुन्तलपुर बतलाया जाता है। अन्यत्र यह सिद्ध किया गया है कि यह कोतवाल ही पुराण में प्रसिद्ध नागराजधानी कांतिपुरी है। अभी तक कोई ऐसा अभिलेख प्राप्त नहीं हो सका जिसमें इसका प्राचीन नाम आया हो। किसी समय पढ़ावली, कुतवाल और सुहानियाँ एक ही नगर थे जो संभवतः नागराजधानी कांतिपुरी हो सकते हैं।

वि० सं० १३१६ के नलेसर के अभिलेख ९ में उक्त स्थल का नाम नलेश्वर आया है।

दक्षिण की ओर दृष्टि डालने पर शिवपुरी जिले में कुछ स्थलों के पर्याप्त प्राचीन नाम मिलते हैं। कुछ ही समय पूर्व इस जिले का नाम नरवर जिला था और प्राचीनता की दृष्टि से नरवर इस जिले का है भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल।

नरवर तथा आस-पास के स्थानों में पाये-गये अनेक अभिलेखों में इस नगर का नाम नलपुर दिया हुआ है (१०३, १३२ १५०, १५६, १६३ १७२ १७४ १७५, १७७, ३१८ ४२४)। एक अभिलेख में इसे नलगिरि (१३१) कहा गया है। इनमें सबसे मनोरंजक वह अभिलेख है जिसमें नलपुर का एक यात्री उदयेश्वर की यात्रा करने आया था और अपने दान को मन्दिर की भित्ति पर अंकित करा आया (१०३)।

कहा यह जाता है कि नलपुर पूर्व में राजा नल की राजधानी था और इसीलिये इसका नाम नलपुर पड़ा। जो हो इतिहास इस बात का साक्षी तो है कि नलपुर नागवंश अनेक राजपूत राजाओं, मुसलमान शासकों और यूरोपियों का क्रीड़ा क्षेत्र रहा है। आज वहां हिन्दू मंदिरों के भग्नावशेष के साथ-साथ जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ, मसजिदें तथा गिरजों के खंडहर भी हैं।

वर्तमान शिवपुरी कभी सीपरी कहलाती थी। स्व० माधवराव महाराज ने उसे शिवपुरी नाम दिया। परन्तु कुछ अभिलेख (५८१ व ७०७) ऐसे मिले हैं जिनमें इसे पहले भी शिवपुरी कहा गया है।

इस जिले का तेरही नामक ग्राम बहुत पुराना है। रन्नौद के अभिलेख (७०१) में इसका नाम तेरम्बि दिया हुआ है। प्राचीन काल में इस स्थान का धार्मिक एवं राजनीतिक महत्व था इस स्थान का सम्बन्ध उस शैव साधुओं की परम्परा से भी था जिनका उल्लेख बिल्हारी (ए० इ० भाग १० पृष्ठ २२२) रन्नौद (७०२) तथा कदवाहा (६२९, ६२८, ६२७) के शिला लेखों में मिलता है और जो तत्कालीन राजवंशों पर भी अपना प्रभाव रखते थे।

यहां पर दो युद्धों का भी प्रमाण मिलता है। दो स्मारक-स्तंभों (७००) में से एक में कर्णाटों के विरुद्ध युद्ध में एक योद्धा के मरने का उल्लेख है। दूसरे स्मारक-स्तम्भ में मधुवेणी (वर्तमान महुआ) नदी के किनारे दो महा-सामंतों के बीच एक युद्ध का उल्लेख है (१२)।

महुआ नदी का दूसरा नाम मधुमती भी ज्ञात होता है। भवभूति के मालतीमाधव में इसी मधुमती का उल्लेख है जो प्राचीन पद्मावती (पद्म-पवाया) से कुछ दुर पर सिन्धु (वर्तमान सिंध) में मिलती है।

शिवपुरी के पास ही एक बंगला नाम का ग्राम है। वहां पर बरुआ नामक नदी निकली है। इस बरुआ को वहां के अभिलेखों में बलुवा' 'वालुवा' 'वालुका' आदि कहा गया है। इस बलुवा के किनारे नलपुर के जज्वपेल्ल राजा गोपालदेव और जेजकभुक्ति (वर्तमान बुंदेलखण्ड) के चंदेल राजा वीरवर्मन के बीच युद्ध हुआ था।

इन अभिलेखों में (१३३,१३९) जेजकभुक्ति नाम बुन्देलखण्ड के लिए आया

है। ऊपर लिखे हुए तेरम्बि (तेरही) के शैव साधुओंसे सम्बन्धित इस जिले का दूसरा स्थल रन्नौद या नरोद है। यह स्थल भी बहुत पुराना है। यहां के खोखई नामक मठ में प्राप्त एक अभिलेख (७०२) में रन्नौद का नाम 'रणिपद्र' दिया हुआ है। इस अभिलेख के तेरम्बि (तेरही) और कदंवगुहा (कदवाहा) तो पांहचाने जा चुके हैं, परन्तु उसमें उल्लिखित उपेन्द्रपुर और मत्तमयूरपुर का अब तक पता नहीं है।

रन्नौद के पास एक नाला है। उसका नाम अहोरपाल नाला है। कनिंघम ने इसका प्राचीन नाम ऐरावती नदी दिया है। १

इस जिले में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल सुरवाया है। सुरवाया की बावड़ी में प्राप्त लेख (१५०) में इसका नाम सरस्वतीपत्तन दिया हुआ है। इस बावड़ी के बनवाने वाले ईश्वर नामक ब्राह्मण ने इसका नाम ईश्वरवापी रक्खा था। परन्तु सरस्वतीपत्तन के धवल-मठों और मन्दिरों के साथ यह ईश्वरवापी भी काल के कराल हाथों द्वारा प्रायः नष्ट कर दी गई।

जिस प्रकार पद्मावती (पत्तन) का नाम आज पवाया रह गया है ठीक उसी प्रकार इस सरस्वतीपत्तन का नाम सुरवाया हो गया है।

आज से लगभग एक सहस्र वर्ष पूर्व यह स्थल अत्यन्त समृद्ध था। आज भी मन्दिर-मठ और शिखर आदि में प्राप्त स्थापत्य एवं तक्षण कला का सौन्दर्य उस अतीत गौरव का स्मरण दिलाता है।

शिवपुरी के पास ही एक बडौदी नामक ग्राम है। इसमें एक वापी के निर्माण सम्बन्धी शिलालेख (१३२) प्राप्त हुआ है। उसमें ग्राम का नाम 'विटपत्र' दिया हुआ है। यह इस स्थान का प्राचीन नाम ज्ञात होता है।

शिवपुरी के पास ही एक कुरेठा नामक ग्राम है। संवत १२७७ वि० में मलयवर्मन प्रतिहार ने इस ग्राम को दान में दिया था। उस दान के ताम्रपत्र में इसका नाम कुदवठ दिया हुआ है। कुरैठा ताम्रपत्र (९७) में लिखा है कि प्रतिहार मलयवर्मन ने सूर्यग्रहण के अवसर पर चर्मण्वती में स्नान कर कुदवठ ग्राम दान दिया था। चर्मण्वती चम्बल के लिए आया है। इस नदी का यह नाम बहुत प्राचीन है। एक और ताम्रपत्र में गुढहा ग्राम के दान का उल्लेख है, जो अज्ञात है।

शिवपुरी जिले के दक्षिण में गुना जिला फैला हुआ है। जैसे जैसे दक्षिण की ओर हम जाते हैं वैसे वैसे ही प्राचीन इतिहास के महत्वपूर्ण स्थल आते जाते

१ (आ०स०इ०रि० भाग २, पृष्ठ ३०४)

हैं। इस जिले का नाम ईसागढ़ था। परंतु अब इस जिले का केन्द्र गुना बनाकर इसका नाम गुना जिला कर दिया गया है।

गुना का प्राचीन महत्व ज्ञात नहीं होता। वि० सं० १०३६ के वाक्पतिराज के दान के ताम्रपत्र (२१) में यह लिखा है कि उक्त ताम्रपत्र जारी करते समय आज्ञादापक अधिकारी का शिविर गुणपुर में था। यह गुणपुर संभव है कि गुना का प्राचीन नाम हो। इस ताम्रपत्र में उल्लिखित भगवत्पुर का भी पता नहीं है।

प्राचीनता के विचार से इस जिले के तुमेन नामक स्थान का नाम आता है। गुप्त संवत् ११६ के कुमारगुप्त के शासनकाल के अभिलेख में (५५३) इस स्थान का नाम तुम्बवन दिया हुआ है। बराहमिहिर की बृहत्संहिता में भी तुम्बवन का उल्लेख है। इस स्थल का मुसलमानों के राज्य में महत्व था। वहां के हिन्दू मंदिरों को तोड़कर अनेक मसजिदें बनी थीं। ऊपर उल्लिखित कुमारगुप्तकालीन अभिलेख वहाँ की एक मसजिद के खंडहरों में मिला है। यहाँ पर जैन-मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं।

वि० सं० ९९६ के रखेतरा (गडेलना) के अभिलेख (१६) में बर्तमान उर नदी का नाम उर्वशी दिया हुआ है।

इस जिले के कदवाहा का प्राचीन नाम कदम्बगुहा रन्नौद के उल्लेख के सम्बन्ध में आ चुका है। कदवाहा में भी उन शैव साधुओं का मठ था, जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। यहाँ सुन्दर मन्दिरों की प्रचुरता इतनी अधिक है कि इसे ग्वालियर का खजुराहा अथवा भुवनेश्वर कहा जा सकता है।

विक्रमी बारहवीं शताब्दी के लगभग का एक शिलालेख ग्वालियर पुरातत्व संग्रहालय में है (६३२)। उसमें चंद्रपुर के परिहारवंश की प्रशस्ति दी हुई है। यह चन्द्रपुर चन्देरी का ही नाम है। इसी अभिलेख से यह भी पता चलता है कि इस प्रतिहारवंश के सात राजा कीर्तिपाल ने कीर्तिदुर्ग, कीर्तिनारायण का मंदिर और कीर्तिसागर बनवाये। कीर्तिनारायन का मन्दिर अभी मिलता नहीं है, कीर्तिसागर आज भी चन्देरी के एक तालाब का नाम है अतएव कीर्तिदुर्ग चन्देरीगढ़ का ही नाम है।

इस प्रसंग में इस जिले के मियाना नामक स्थान का भी नाम आता है। वि० सं०१५५१ के अभिलेख (३४०) में इसका नाम मायापुर तथा मयाना दिये हुए हैं।

गयासुद्दीन सुल्तान के समय के वि० स० १५५५ के लेख (३२६) में बूढी चन्देरी का नाम नसीराबाद लिखा हुआ है।

गुना जिले के दक्षिण की ओर भेलसा जिला है। पुरातत्व खोज सम्बन्धी कार्य इस जिले में बहुत हुआ है और उसमें अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल प्राप्त भी हुए हैं। इनमें से अनेक स्थान अपने अत्यंत प्राचीन नाम धारण किये हुए हैं। उदयादित्य परमार का बसाया हुआ उदेपुर (६४९) एक सहस्र वर्ष से वही नाम धारण किये हुए है। यद्यपि वहाँ मुहम्मद तुगलक के समय में उदयेश्वर मन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनाने के प्रयास हुए (५५) परन्तु उदयपुर का नाम ज्यों का त्यों रहा। उदयपुर नाम सहित अनेकों अभिलेख उदयेश्वर मंदिर में प्राप्त हुए हैं।

यहाँ पर प्राप्त दो अभिलेखों (८३,८६) में कुछ ग्रामों के नाम तो हैं ही साथ ही अनेक स्थल विभागों के नाम भी दिये हुए हैं। इनमें 'भैलस्वामी महाद्वादशक' नामक मण्डल और उसके अंतर्गत 'भृंगारक चतुर्षष्टि' नामक पथक का उल्लेख है। इस पथक के अनेक ग्रामों के नाम दिए गये हैं। ये सभी अब तक अज्ञात हैं। केवल यह कहा जा सकता है कि 'भैलस्वामी महाद्वादशक' का केन्द्रस्थान वर्तमान भेलसा होगा।

भेलसे का प्राचीन नाम भैलस्वामी—भिलास्मि—(सूर्य) पर रखा गया है। पीछे उल्लेख किये गये वि० सं० १०११ के यशोवर्मन चंदेल के शिलालेख में वेत्रवती (बेतवा) के किनारे बसे हुए 'भास्वत' का उल्लेख हो। यह भेलसे का ही प्राचीन नाम है। भेलसे में प्राप्त एक और अभिलेख में 'भिलास्म' की वंदना की गई है। भिलास्मि के मूल से ही भेलसा नाम पड़ा है।

भेलसे के उत्थान के इतिहास में विदिशा के पतन की कहानी निहित है। गुप्तकाल में ही भेलसे को प्रधानता मिलने लगी थी। उसके बाद परमार और फिर चालुक्य राजपूतों के अधिकार के प्रमाण अभिलेखों में मिलते ही हैं। मुसलमानों के शासन ने भी अपनी गहरी छाप भेलसे पर छोड़ी है। उस समय इसका नाम ही बदल कर आलमगीरपुर (४५२) कर दिया गया और आज की बीजामंडल मस्जिद "चर्चिका" अथवा 'विजयादेवी' के मंदिर को भग्नावशेष करके बनाई गई है (६५२)

भेलसे के आसपास की भूमि पूर्व मौर्यकाल से इतिहास प्रसिद्ध है। बौद्ध साहित्य का वेस्सानगर और पुराण-काव्यादि में प्रख्यात विदिशा बेस नामक छोटे से ग्राम के रूप में भेलसे स्टेशन से दो मील पश्चिम की ओर है। वेसनगर का विदिशा नाम हेलियोदोर के प्रसिद्ध गरुड़ध्वज पर उत्कीर्ण अभिलेख (६६२) में आया है। कभी उदयगिरि और काकनाद बोट (वर्तमान साँची) इसी विदिशा के ही अंग थे।

इस जिले में बडोह नामक एक स्थान है। यह पठारी के पास है। किसी

समय पठारी इस बडोह का ही एक भाग था। जनश्रुति यह है कि इसके पहले इसका नाम बडनगर था। परन्तु इसके प्रमाण हमारे पास कोई अभिलेख में नहीं मिलते। तुमेन के कुमारगुप्तकालीन अभिलेख (५५३) में 'वटोदक' नाम सम्भवतः इसी बडोह के लिए आया है।

इतिहास प्रसिद्ध पुरी उज्जयिनी का प्राचीन नाम अवन्तिका आज भी कभो कभी प्रयुक्त होता है। परन्तु आज जिस प्रकार ग्वालियर राज्य तथा ग्वालियर नगर दोनों ही वर्तमान है, उसी प्रकार पहले अवन्ति-मण्डल (२५,६६) और अवन्तिका नगरी (४८८) दोनों ही थे।

उज्जयिनी के आसपास के अनेक ग्रामों के नाम अभिलेखों में मिलते हैं। संवत् १०४५ वि० के वाक्पतिराज द्वितीय के ताम्रपत्र (२५) में अवन्ति-मण्डल और उसके अन्तर्गत उज्जयिनी-विषय का उल्लेख है। इस उज्जायिनी-विषय के पूर्व पथक में मदुक' भुक्ति तथा इस भुक्ति के अंतर्गत विछुका ग्राम का भी उल्लेख हैं। संवत् १०७८ के भोजदेव के ताम्रपत्र (३५) में उज्जैन के पास के वर्तमान नागझरी नाले का नाम नागद्रह दिया हुआ है और इसके पश्चिम में स्थित वीराणक नामक ग्राम का उल्लेख है।

मन्दसौर जिले का केन्द्र स्थल मन्दसौर अत्यन्त प्राचीन स्थल है। इसका उल्लेख उषवदात के नाशिक अभिलेख (ईसवी) प्रथम शताब्दी) में है। उसमें तथा मालव-संवत ४६१व ४६३ के अभिलाखों (१ तथा २) में इसका नाम दशपुर आया है। मंदसौर को दसौर भी कहते हैं। इससे दशपुर का ध्वनि-साम्य भी बहुत है। वि० सं० १३२१ के अभिलेख (१२४) में भी दशपुर नाम आया है। वराहमिहिर की बृहत्संहिता में भी दशपुर का उल्लेख है।*

इस जिले के घुसई नामक स्थान पर एक सती-स्तंभ (१३१) पर ग्राम का प्राचीन नाम घोषवती दिया हुआ है।

अमझरा जिले में स्थित बाघ गुहा में प्राप्त राजा सुबन्धु के ताम्रपत्र (६०८) में कुछ स्थानों के नाम प्राप्त होते हैं। सुबन्धु को माहिष्मती का राजा कहा गया है। यह स्थान वर्तमान ओंकार-मान्धाता है; परन्तु यह स्थल ग्वालियर-राज्य की सीमा के बाहर है। इसमें दासिलकपल्ली ग्राम के दान देने का उल्लेख है। संभव है इस ग्राम का स्थान बाघ के पास ही ग्वालियर-राज्य की सीमा में हो।

इस राज्य के शाजापुर एवं श्योपुर जिलों में स्थानों के परवर्तित प्राचीन नाम युक्त कोई अभिलेख मेरे देखने में नहीं आया।

---

* (इ० ए० भाग २२, पृ० १७६)

इस प्रसंग को समाप्त करने के पूर्व हम उन दो चार प्राचीन स्थलों के नामों को भी यहाँ देना उचित समझते हैं जो ग्वालियर-राज्य की सीमा के बाहर हैं परन्तु उनके प्राचीन नाम ग्वालियर-राज्य में प्राप्त अभिलेखों में आये हैं। इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध दिल्ली का प्राचीन नाम योगिनीपुर है। वि० सं० १३८८ के अभिलेख १९५ में दिल्ली का यह नाम आया है। इसे चंडीपुर भी कहते थे। जैसा कि अब्दुल रहीम खानखाना की प्रशंसा में आसकरन जाडा नामक चारण द्वारा लिखे गये एक छंद से प्रकट है—

"खानखाना नवाब रा अडिया भुज ब्रह्मंड।
पूठे तौ चंडीपुर धार तले नव खंड ॥"

इसका अर्थ है—"खानखाना की भुजा ब्रह्मांड में जा अड़ी है, जिसकी पीठ पर चंडीपुर अर्थात् दिल्ली है और जिसकी तलवार की धार के नीचे नवों खंड हैं।

संवत् १४५१ के कदवाहा में प्राप्त अभिलेख (२३१) के एक अभिलेख में दिल्लो को वियोगिनीपुर लिखा है।

ग्वालियर-गढ़ के सास-बहू के मंदिर के वि० सं० ११५० के अभिलेख (५५ ५६) में कन्नौज के लिए गाधिनगर नाम आया है तथा एक और अभिलेख (७०१) में इसे कान्यकुब्ज कहा है।

गुजरात के लिए लाट देश का नाम भी अनेकबार आया है। मालव संवत ४९३ के अभिलेख (२) में लाट देश का उल्लेख है।

ऊपर आये हुए स्थानों की सूची नीचे दी जा रही है। जिस अभिलेख में प्राचीन नाम आया है उसका संवत् या अनुमानित समय भी दिया गया है।

वर्तमान नाम	प्राचीन नाम	अभिलेख का संवत या संभाव्य समय
ग्वालियर गढ़	१. गोप पर्वत	१. लगभग छठी शताब्दीवि०
	२. गोप गिरीन्द्र	२. वि० सं० ९६९
	३. गोपाद्रि	३. वि.सं ६३२ ११५०,१३३६,१३५५
	४. गोपागिरी	४. वि० स० ९३३, १२७७
	५. गोपाचल दुर्ग	५. वि.सं.१३५५,१४९७,१५२५,१५५८
स्वर्ण रेखा	वृश्चिकालानदी	वि० सं० ९३३
पारौली	पाराशरग्राम	
अटेर का किला	देवगिरी	वि० सं० १७०६
सुहानिया	सिंहपानिय	वि० सं० ११५०

नरेसर	नलेश्वर	वि० सं० १३१६
नरवर	१. नलपुर	१. वि० सं० १२८८, १३३६, १३३८ १३४८, १३५०, १३५२, १३५५, १३५६, १६८७
	२. नलागिरी	२. वि० सं० १३३९
सीपरी	शिवपुरी	वि० सं० १०४०
तेरही	तेरम्बि	नवम शताब्दी
मकुआ नदी	वलुआनदी	वि० सं० १३३८
बुन्देलखंड	जेजकभुक्ति	वि० सं० १३३८
रन्नौद	रणिपद्र	नवम शताब्दी
कदवाहा	कदम्बगुहा	नवम शताब्दी
सुरवाया	सरस्वतीपत्तन	वि० सं० १३४८
बरौदी	बिटपत्र	वि० सं० १३३६
कुरैठा	कुदवठ	वि० सं० १२७०
चंबलनदी	चर्मण्वती	वि० सं० १२७७
गुना	गुणपुर (?)	वि० सं० १०३६
तुमेन	तुम्बवन	गु० सं० ११६
चन्देरी	चन्द्रपुर	बारहवीं शताब्दी
चन्देरी-गढ़	कीर्तिदुर्ग	बारहवीं शताब्दी
मियाना	१. मायापुर २. मायाना	वि० सं० १५५१
भेलसा	भिल्लास्मि. भास्वत	दशम शताब्दी
बेसनगर	विदिशा	ई० पू० प्रथम शताब्दी
बडोह	वटोदक	गु० सं० ११६
उज्जैन जिला	अवन्ति-मण्डल	वि० सं० १०४७, ११६५
नागभरी	नागद्रह	वि० सं० १०४७
मन्दसौर	दशपुर	विक्रमी प्रथम शताब्दी मा० सं० ४६१, ४९३
घुसई	घोपवती	वि० सं० १३३४
सांभर	शाकम्भरी	वि० सं० १२२२, १३४९
दिल्ली	१. योगिनीपुर	वि० सं० १३८८
	२. वियोगिनीपुर	वि० सं० १४५१
पटना	पाटलीपुत्र	तीसरी शताब्दी
कन्नौज	१. गाधिनगर	वि० सं० ११५०
	२. कान्यकुब्ज	सातवीं शताब्दी
माहिष्मती	ओंकार-मांधाता	चौथी शताब्दी

गुजरात	लाटदेश	मा० सं० ४६३ ९३१
ब्रह्मपुत्र	लौहित्य	छठवीं शताब्दी
माण्डू	मण्डप दुर्ग	वि० सं० १२६७, १३२४

धार्मिक विवेचन

इन अभिलेखों में निहित धार्मिक इतिहास का थोड़ा बहुत प्रकाश राजनीतिक इतिहास के विवेचन में किया जा चुका है। वास्तव में भारत के प्राचीन इतिहास पर धार्मिक आन्दोलनों का पर्याप्त प्रभाव रहा है। हमारे अत्यंत प्रारम्भिक अभिलेख धार्मिक दानों से ही सम्बन्धित हैं। यहां पर अत्यन्त संक्षेप में इन शिलालेखों पर प्राप्त विविध मतों के देवताओं के नामों के आधार पर कुछ लिखना उचित होगा।

इस प्रदेश में प्राप्त मूर्तियाँ एवं ये अभिलेख ऐसी सामग्री प्रस्तुत करते हैं, जिनके आधार पर अत्यन्त विस्तृत धार्मिक इतिहास का निर्माण हो सकता है

हमारे सबसे प्रारंभिक अभिलेख बौद्ध-धर्म से सम्बंधित हैं। विदिशा का बौद्ध-स्तूप मौर्यकालीन है यह कथन ऊपर किया जा चुका है। कोई समय था जब इस सम्पूर्ण प्रदेश में बौद्ध-धर्म का प्राबल्य था, परन्तु ईसवी सन् के पूर्व से ही उसका दृढ़ रूप से उन्मूल होता गया। धीरे-धीरे वह अमझरा, मन्दसौर एवं भेलसा जिलों में सिमित रह गया। बाग गुहा का सुबन्धु का ताम्रपत्र (६०८) एवं मन्दसौर (दशपुर) का मालव (विक्रम) संवत् ५२४ का अभिलेख (३) गुप्तकाल में बौद्ध धर्म के प्रचार के प्रमाण हैं। फिर मध्यकाल में वि० सं० ११५४ के भेलसा के मूर्तिलेख (६०) तथा ग्यारसपुर के मूर्तिलेख (७४२) मध्यकाल में बौद्ध-धर्म के अस्तित्व के प्रमाण हैं। मध्यकाल में बौद्ध मूर्तियाँ और स्तूप (राजापुर) थोड़े बहुत मिले अवश्य हैं, परन्तु जैन एवं वैष्णव-धर्म उस काल में प्रबल हो रहे थे और बौद्ध धर्म समाप्ति पर था।

कालक्रम के अनुसार दूसरा स्थान भागवत-धर्म सम्बंधी अभिलेखों का है। हेलियोदोर स्तंभ (६६२) तथा गौतमीपुत्र के गरुड़ध्वज (६६३) के अभिलेखों द्वारा ईसवी पूर्व दूसरी शताब्दी में बौद्ध-धर्म के गढ़ विदिशा में भागवत-धर्म के पूर्णतः प्रतिष्ठित हो जाने का प्रमाण मिलता है। विदिशा में वैदिक यज्ञ हुए एवं ब्राह्मण शुंगों के राज्य में मनुस्मृति, महाभारत आदि के सम्पादन हुए उसका उल्लेख पहले हो चुका है। वास्तव में शुंगकाल का इतिहास ब्राह्मण-धर्म के विकास का इतिहास है।

विष्णु के अनेक रूप की मूर्तियों की पूजा जो आरम्भ शुंग काल में हुआ उसने क्रमशः सम्पूर्ण भारत को अभिभूत कर लिया। शुंगों के पश्चात् यद्यपि नाग शैव थे, पर गुप्त परम भागवत थे और दोनों ही धार्मिक उदारता के प्रतीक थे। आगे,राष्ट्रकूट परबल को (६) तथा कन्नौज के प्रतिहारों के (८,९ तथा ६२६) के विष्णु के मंदिरों के निर्माण के अभिलेख प्राप्त हुए हैं। इनमें से ग्वालियर-गढ़ के अभिलेख प्रतिहारों के गढ़पतियों के बनवाये हुए मन्दिरों के हैं और सागर-ताल का अभिलेख मिहिरभोज द्वारा बनवाये गये नरकाद्विप (विष्णु) के मंदिर का लेख है। प्रतिहार वंश के नाम रामदेव आदिवराह आदि विष्णु-भक्ति के द्योतक हैं।

दक्षिण-ग्वालियर में मध्यकाल में भागवत धर्म का प्रचार परमारों द्वारा हुआ यद्यपि उनमें से अनेक परम शैव थे। इस समय के बहुत पूर्व विष्णु एवं उनके अवतारों की पूजा जनता का धर्म बन चुकी थी। प्रत्येक ग्राम में इनके मन्दिर बने और आज भी बन रहे हैं।

त्रिदेव में शंकर की पूजा का भी बहुत अधिक प्रचार हुआ। इस राज्य में शिव एवं शिव-परिवार की प्राचीनतम मूर्तियाँ नागकाल तक की प्राप्त हुई हैं? परन्तु सबसे प्रथम शैव लेख चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यकालीन उदयगिरि गुहा का शाव वीरसेन का है। इसके पश्चात शिव-मंदिर के लेख सम्पूर्ण राज्य में मिलते हैं। महुआ का शिव-मंदिर बेस-मौखरीकालीन है। उसी समय के लगभग शैव साधुओं की उस परम्परा का प्रारम्भ हुआ जिसके विषय में पहले लिखा जा चुका है। इनके द्वारा अनेक शैव-मठ एवं शिव-मंदिर बनवाये गये। इनके शिष्यों में उस काल के अनेक राजा थे।

१ – मूर्तियों सम्बन्धी विवेचन के लिए मेरी पुस्तक 'ग्वालियर में प्राचीन मूर्तिकला' देखिए।

आगे चलकर अनेक राजाओं अथवा सामन्तों ने अपनी रुचि के अनुसार नाम रखकर उदयेश्वर, मानसिंहेश्वर, मतंगेश्वर, ऊदलेश्वर आदि शिव-मंदिर बनवाये। इनमें से उदयेश्वर-मंदिर-सम्बंधी अनेक अभिलेख (४२, ५१, ८२, ८३ आदि प्रायः ५०) प्राप्त हुए हैं, जिनसे इसके निर्माण के प्रारंभ समाप्ति एवं अनेक दानों के अतिरिक्त उसके विध्वंस के असफल प्रयास की कथा भी मिलती है।

शिव के सौम्य रूप के साथ-साथ तान्त्रिकों द्वारा उनके रौद्र के रूप की भी प्रतिष्ठा हुई। रुद्र के मंदिर-सम्बंधी लेख (९१) यद्यपि कम हैं, परन्तु रुद्र के मंदिर हजारों हैं।

त्रिदेव में ब्रह्मा का नाम सबसे प्रथम लिया जाता है, परन्तु उनकी पूजा सबसे कम हुई। यशोधवल परमार द्वारा प्रतिष्ठित मूर्ति जिस पर वि० सं० १२१० (७५) का अभिलेख है. किसी मंदिर की पूज्य मूर्ति हो सकती है, परन्तु अन्य पूज्य मूर्तियां प्राप्त नहीं हुई हैं।

शिव-परिवार में उमा एवं नन्दी शिव के साथ ही पूजे गये हैं, परन्तु देव-सेनापतिस्कंद तथा गणेश के स्वतंत्र मन्दिर बनते रहे हैं।

स्कन्द को मूर्तियाँ तो गुप्तकालीन तक प्राप्त हुई हैं, परन्तु उनके मंदिर का उल्लेख रामदेव प्रतिहार के गढ़पति बाइल्लभट्ट के समय के अभिलेख (६१८) के समय का मिला है। गणेश के मन्दिर सम्बंधी लेख बहुत आधुनिक (३८०) है, यद्यपि मूर्तियाँ तो इनकी भी प्राचीन मिली हैं।

भारतीय मस्तिष्क ने ऐसा कोई ग्रह, नक्षत्र, नदी, नद वार, तिथि आदि नहीं छोड़ी जिसकी मूर्ति-कल्पना न की हो, परन्तु यह अत्यंत प्राकृतिक ही है कि लोक, लोक में आलोक करने वाले दिनकर के मन्दिर अत्यंत प्राचीन काल से बनना प्रारंभ हुए हों। दशपुर के बुनकरों की गोष्ठी ने नयनाभिराम एवं विशाल सविता-मंदिर का मालव (विक्रम) संवत् ४९३ में निर्माण किया था (२) इधर ग्वालियर-गढ़ पर मिहिरकुल के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष में मातृचेट ने सूर्यमंदिर बनवाया था। भिलास्मि (सूर्य) के नाम पर ही भेलसे का नाम पड़ा ऐसा एक अभिलेख (७४३) से ज्ञात होता है। सात अश्वों के रथ पर आरूढ़ सूर्य की अनेक मूर्तियां राज्य में मिली हैं और उनके उल्लेख युक्त लेख भी अनेक हैं।

शिव-मंदिर में जो महत्त्व नन्दी का है वही राममंदिर में हनुमान को मूर्ति का है। परन्तु मारुति की पूजा के लिए बहुत अधिक संख्या में मन्दिर बने हैं। उनमें से कुछ पर लेख (४७५) भी हैं।

मातृका-पूजन-सम्बंधी प्राचीन अभिलेख बडोह-पठारी के मार्ग में महाराज जयत्सेन का (६६१) है। यह विषयेश्वर महाराज गुप्तकालीन मंडलीक शासक हैं। सप्तमातृकाओं की शिलोत्कीर्ण मूर्तियों के नीचे यह लेख खुदा हुआ है। गुप्तकालीन अनेक मातृका-मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं जो उस काल में मातृका-पूजा के उदाहरण हैं।

कन्नौज के प्रतिहारों के वि० सं० ९३३ के अभिलेख (९) में नवदुर्गा के मंदिर का उल्लेख है और रुद्र रुद्राणी, पूर्णाशा आदि नाम भी दिये हैं। आगे चलकर मातृका की पूजा का अत्यधिक प्रचार हुआ। नरेसर के रावल वामदेव

न अनेक देवियों की मूर्तियों का निर्माण कराया। चण्डी, योगिनी, डाकिनी, साकिनी आज भी जन-साधारण की पूज्या हैं और उनके मंदिर बनते हैं।

जैन मूर्तियों का सर्व प्रथम उल्लेख मिलता है प्रसिद्ध गुप्त वंशीय श्री संयुत एवं गुण सम्पन्न राजाओं के समृद्धिमान काल के १०६ वें वर्ष में (४४२) जब कार्तिक कृष्ण ५ के शुभ दिन शमदमयुक्त शंकर नामक व्यक्ति ने विस्तृत सर्प-फणों से भयंकर दिखने वाली जिन श्रेष्ठ पार्श्वनाथ की मूर्ति गुहद्वार पर बनवाई। आगे चलकर भेलसा, शिवपुरी, श्योपुर, गिर्द मुरैना आदि उत्तर जिलों में जैन-मन्दिरों का निर्माण बहुत बड़ी संख्या में हुआ। जैनाचार्यों और उनके सैकड़ों ही संघों के नाम इन लेखों में मिलते हैं। कच्छपघात एवं तोमरों के राज्यकाल में तो जैन-मूर्तियाँ अत्यधिक संख्या में बनीं, जो अपनी विशालता में भी सानी नहीं रखतीं। यह प्रतिमाएँ अधिकतर लेखयुक्त हैं। चन्देरी की खण्डहर पहाडियों की एवं ग्वालियरगढ़ की शिलोत्कीर्ण मूर्तियाँ जैनों की श्रद्धा एवं विशाल-कल्पना का उदाहरण हैं। हमारी सूची का एक बहुत बड़ा अंश जैन-लेखों का है।

मुस्लिम राज्य के साथ इस्लाम का भी प्रचार हुआ। इस्लाम मूर्तिविरोधी है। वह न तो ईश्वर की ही मूर्ति बनाने की आज्ञा देता है और न मुहम्मद साहब अथवा अन्य धार्मिक नेता की। अतएव इस्लाम के धार्मिक लेख मस्जिदों के निर्माण सम्बंधी हैं। वास्तव में नस्ख और नस्तालीक लिपियों में जितने भी लेख मिले हैं उनमें से अधिकांश मस्जिद, दरगाह अथवा मकबरों से सम्बंधित हैं और निश्चित ही यह सम्पूर्ण राज्य में मिलते हैं। विशेषतः चन्देरी, भेलसा, रन्नौद, भौंरासा और ग्वालियर उस समय इस्लाम के केन्द्र रहे क्योंकि यह मुस्लिम सत्ता के दृढ़ गढ़ थे।

ईसाई-धर्म-सम्बन्धी लेख भी इस राज्य में हैं। इनमें से अधिकांश मृत्यु-लेख हैं। यद्यपि राज्य में नगरों के 'ईसागढ़' एवं 'माकनगंज' जैसे ईसाई धर्मपरक नाम मौजूद हैं, परन्तु फिर भी यह धर्म अधिक प्रगति न पा सका और तत्सम्बन्धी लेख तो हमारी सूची की सीमा में आते ही नहीं अतएव उनका विवेचन नहीं किया गया।

— - —

अभिलेख-सूची

संक्षेप और संकेत

पं०—पंक्ति
लि०—लिपि
भा०—भाषा
सं०—संख्या
मा०—मालव (विक्रम) संवत
हि०—हिजरी सन ।

भा० सू० स०—देवदत्त रामकृष्ण भाण्डारकर द्वारा निर्मित उत्तर भारत के अभिलेखों की सूची की संख्या। यह सूची एपोग्रेफिया इण्डिका के भाग १९, २०, २१, २२ तथा २३ के साथ प्रकाशित हुई।

ग्वा० पु० रि० संवत्...संख्या—ग्वालियर राज्य पुरातत्व विभाग की वार्षिक रिपोर्ट के अमुक संवत के अभिलेख-सूची के परिशिष्ट की अमुक संख्या। यह रिपोर्ट विक्रम संवत् १९८० से मुद्रित रूप में प्राप्त है। इसके पूर्व की अप्र काशित है।

इ० ए०—इण्डियन एण्टिक्वेरी।

प्रो० रि० आ० स० वे० स०—प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑफ आर्कोलोजिकल सर्वे, वेस्टर्न सर्किल।

ए० इ०—ऐपिग्राफिया इण्डिका।

आ० स० इ०, वार्षिक रिपोर्ट—आर्कोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया की वार्षिक रिपोर्ट।

ज० बो० ब्रा० रा० ए० सो०—जर्नल ऑफ दि बॉम्बे ब्रांच ऑफ रायल एशियाटिक सोसाइटी।

फ्लीटः गुप्त अभिलेख—फ्लीट कृत कार्पस इंस्क्रिप्शनम्, इण्डिकेरम् भाग ३।

आ० स० इ० रि०—कनिंघम द्वारा लिखित आर्कोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया की रिपोर्टस् जो २७ भागों में प्रकाशित हुई है।

विक्रम-स्मृति-ग्रन्थ—ग्वालियर से प्रकाशित हिन्दी का विक्रम-स्मृतिग्रन्थ।

ना० प्र० प०—नागरी प्रचारिणी पत्रिका, नवीन संस्करण।

विक्रम-संवत्-युक्त अभिलेख

—○❀○—

१—मा० ४६१—मन्दसौर (मन्दसौर) खंडित प्रस्तर-लेख। पंक्तियाँ ६, लिपि गुप्त, भाषा संस्कृत। जयवर्मन के पौत्र, सिंहवर्मन के पुत्र नरवर्मन ❀ और दशपुर नगर का उल्लेख है। भा० सू० संख्या ३; ग्वा० पु० रि संवत १६७०, संख्या १३। अन्य उल्लेख : प्रो० रि० आ० स०, वे० स० १६१२-१६१३, पृ० ५८ तथा इ० ए० भाग ४२, पृ० १६१, १६६, २१७; ए० इ० भाग १२, पृ० ३२० चित्र, खोए हुए खण्ड के लिए देखिए आ० स० इ०, वार्षिक रिपोर्ट, १६२२-२३, पृ० १८७।

२—मा० ४९३—मन्दसौर (मन्दसौर), प्रस्तर-लेख। पं० २४, लि० गुप्त, भा० संस्कृत। कुमारगुप्त (प्रथम) तथा उसकी ओर से दशपुर के शासक विश्ववर्मन के पुत्र बन्धुवर्मन् के उल्लेख युक्त। इसमें लाट (गुजरात) के बुनकरों का दशपुर (मन्दसौर) आकर सूर्य-मन्दिर के निर्माण करने का भी उल्लेख है। भा० सू० संख्या ६। अन्य उल्लेख : ज० बो० ब्रा० रा० ए० सो० भाग १६, पृ० ३८२; भाग १७, खण्ड २, पृ ६४; इ० ए० भाग १५, पृ० १६६ तथा भाग १८, पृ० २२७, फ्लीट : गुप्त-अभिलेख, पृ० ८१, चित्र सं० ११; ज० बो० ब्रा० रा० ए० सो, भाग १७, खण्ड २ पृ० ६६। वत्सभट्टि द्वारा विरचित।

वि० ५२६ मन्दसौर (मन्दसौर)—सं० २ की पं० २१ में एक और तिथि। इस अभिलेख द्वारा गुप्त संवत के प्रारंभ का विवाद अन्तिम रूप से समाप्त हो सका।

३—मा० ५२४—मन्दसौर (मन्दसौर) प्रस्तर-लेख। पं० १५, लि० गुप्त, भा० संस्कृत। प्रभाकर के सेनाधिप दत्तभट द्वारा कूप, स्तूप, प्याऊ, उद्यान आदि के निर्माण का उल्लेख है। भा० सू० सं० ७; ग्वा० पु० रि संवत १६७६, सं० २७। आ० स० इ०, वार्षिक रिपोर्ट १९२२-२३, पृ० १८५।

प्रभाकर को "गुप्तान्वयारिद्रुमधूमकेतुः" कहा गया है, अतः प्रभाकर गुप्त-साम्राज्य के आधीन ज्ञात होता है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय, उसके पुत्र गोविन्द गुप्त तथा स्थानीय शासक प्रभाकर का उल्लेख है।

❀ *इस अभिलेख में नरवर्मन् को 'सिंह-विक्रान्त-गामिन्' लिखा है, अतः ज्ञात यह होता है कि नरवर्मन् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के अधीन था। चन्द्रगुप्त का एक विरुद 'सिंह-विक्रम' भी था।*

४—मा० ५८९ मन्दसौर (मन्दसौर) प्रस्तर-लेख। पं० २५, लि० गुप्त; भा० संस्कृत। औलिकर वंश के महाराजाधिराज परमेश्वर यशोधर्मन-विष्णुवर्धन का उल्लेख है। भा० सु० सं० ९; ग्वा० पु० रि० संवत १९८६, सं० ८१। इ० ए० भाग १५, पृ० २२४; इ० ए० भाग १, पृ० २२०, १८८ तथा चित्र। फ्लीट : गुप्त-अभिलेख पृ० १५२ (आगे संख्या ६८० व ६८१ भी देखिये।)

यह प्रस्तर-लेख मिस वी० फीलोज के पास है। मूल में यह मन्दसौर के पास एक कुए में मिला था। दशपुर के मंत्रियों का वंश-वृक्ष दिया हुआ है, जिसमें कूप-निर्माता दक्ष हुआ था।

५—वि० ९०२—ईंदौर (गुना) एक स्मारक-स्तम्भ पर। पं० ३, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। संभाव्य पाठ, 'संवच्छर संवत ९०२ जेठ सुदी २;' ग्वा० पु० रि० संवत १९९३, सं० ६।

६—वि० ९१७—पठारी (भेलसा) प्रस्तर-स्तम्भ पर। पं० ३२, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। राष्ट्रकूट परवल द्वारा शौरि (विष्णु या कृष्ण) के मन्दिर में गरुड़ध्वज के निर्माण का उल्लेख है। भा० सू० संख्या २९; ग्वा० पु० रि० संवत १९८०, संख्या ७। अन्य उल्लेख : ज० ए० सो० बं० भाग १७, खंड १, पृ० ३०५; आ० स० इ० रि० भाग १०, पृष्ठ ७०, ए० इ० भाग ९ पृ० २५२ तथा चित्र; इ० ए० भाग ४०, पृ० २३९।

जेज्ज (जिसके बड़े भाई ने कर्णाट के सैनिकों को हराकर लाट देश जीता), जेज्ज के पुत्र कर्कराज (जिसने नागाभलोक नामक राजा को भगाया); कर्कराज के पुत्र परवल का उल्लेख है। नागाभलोक प्रतिहार वंशका नागभट्ट (द्वितीय) है।

७—वि० [९२०]—ईंदौर (गुना) एक स्मारक-स्तम्भ पर। पं० २, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। अस्पष्ट है। संभाव्य पाठ 'संवच्छर संवत ९२० मास जेठ वदी ३, ग्वा० पु० रि संवत १९९३, सं० ५।

८—वि० ९३२—ग्वालियर- गढ़ (गिर्द) प्रस्तर-लेख। प० ७, लि० पुरानी नागरी, भाषा संस्कृत। (कनौज के प्रतिहार) रामदेव के पुत्र आदिवराह (भोजदेव) का उल्लेख है। भा० सू० सं० ३५; ग्वा० पु० रि संवत १९८४, सं० २। अन्य उल्लेख : ए० इ० भाग १, पृ० १५६।

इसमें वर्जार वंश के नागर भट्ट के पौत्र वाइल्ल भट्ट के पुत्र अल्ल द्वारा एक शिला में से छेनी द्वारा काटे हुए विष्णु-मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। नागरभट्ट लाटमंडल के आनन्दपुर (गुजरात का वड़नगर) से आया था। वाइल्लभट्ट को महाराज रामदेव ने मर्यादाधुर्य (सीमाओं का रक्षक)

नियुक्त किया था। अल्ल को महाराज श्रीमद् आदिवराह ने त्रैलोक्य को जीतने की इच्छा से गोपाद्रि के लिये नियुक्त किया।

सं० ६, ६१८ तथा ६२६ देखिये।

९—वि० ९३३ ग्वालियर-गढ़ (गिर्द) प्रस्तर-लेख। पं० २६, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। (प्रतिहार) परमेश्वर भोजदेव के उल्लेख युक्त रुद्रा रुद्राणी, पूर्णाशा आदि नवदुर्गाओं के तथा वाइल्लभट्टस्वामिन नामक विष्णु के मन्दिरों को दान। भा० सू० सं० ३६; ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ३। इस अभिलेख में अनेक पद और पदाधिकारियों का उल्लेख है अल्ल नामक श्री गोपगिरि के कोट्टपाल (किले का संरक्षक), टट्टक नामक बलाधिकृत (सेनापति) तथा नगर के शासकों (स्थानाधिकृत) की परिषद् ('वार') के सदस्यों (वव्वियाक एवं इच्छुवाक् नामक दो श्रेष्ठिन् और सव्वियाक नामक प्रधान सार्थवाह) का उल्लेख है।

ग्वालियर के इतिहास में इस अभिलेख का विशेष महत्त्व है। ऊपर लिखे पद और पदाधिकारियों का तो उल्लेख है ही, साथ ही इसमें आस पास के अनेक ग्राम, नदी आदि के नाम दिये हुये हैं। यथाः—वृश्चिकाला नदी (सम्भवतः वर्तमान स्वर्णरेखा) चूड़ापल्लिका, जयपुराक्, श्रीसर्वेश्वर ग्रामों का उल्लेख है। सामाजिक इतिहास में तेलियों और मालियों के सङ्गठनों का भी उल्लेख है जिन्हें "तैलिक श्रेण्या" एवं "मालिक श्रेण्या" कहा गया है। तेलियों के मुखिया को "तैलिक महत्तक" और मालियों के मुखिया को "मालिक-महर" कहा है। कुछ नापों का वर्णन भी इसमें है। लम्बाई की नाप "पारमेश्वरी हस्त" अनाज की नाप "द्रोण" कही गई हैं और तेल की नाप पलिका (हिन्दी 'परी') कही गई है।

सं० ८, ६१८ तथा ६२७ देखिये।

१०—वि० ९३५—महलघाट (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० १२ लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, सं० ८। अत्यन्त भग्न तथा अस्पष्ट।

११—मा० ९३६—ग्यारसपुर (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० १५+१३+४=३२ (अभिलेख तीन खंडों में है) लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। भा० सू० सं० ३७; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, संख्या १४ तथा ५, अन्य उल्लेख: आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३३, (चित्र ११)।

गोवर्द्धन द्वारा विष्णु मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। महाकुमार (युवराज) त्रैलोक्यवर्मन के दान का भी उल्लेख है, हर्षपुर नगर में चामुण्डस्वामि द्वारा बनाए मन्दिर का भी उल्लेख है।

सं० ६६१ तथा ६६२ देखिये।

१२—वि० ६५७—बामौर (शिवपुरी) स्तम्भ-लेख। लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। मुख्य मन्दिर के सामने एक स्मारक-स्तम्भ के नीचे के भाग पर। कुछ अंश नष्ट हो गया है, पूर्ण आशय प्राप्त नहीं होता। किसी की मृत्यु की स्मृति में है। ग्वा० पु० रि० संवत्, १९७५, सं० ६५।

१३—वि० ६६०—तेरही (शिवपुरी) स्तम्भ-लेख। पंक्तियाँ ५, लिपी प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। गुणराज तथा उन्दभट्ट के उल्लेखयुक्त स्मारक-प्रस्तर। भा० सू० संख्या ४३; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० १०५, अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग १७, पृ० २०२; कीलहोर्न सूची सं० १६।

संवत् १६० भाद्रपद वदि ४ शनी को मधुवेणी (महुअर) पर दो "महासामन्ताधिपतिस्' के बीच युद्ध हुआ जिसमें गुणराज का अनुयायी कोट्टपाल (किलेदार) चाण्डियण हत हुआ।

सियदोनि (सीयडोणी) अभिलेख (ए० ई० भा० १, पृ० १६७) में महासामन्ताधिपति महाप्रतिहार, समधिगताशेप महाशब्द उन्दभट्ट के संवत् ९६४ मार्गशिर वदि ३ के दान का उल्लेख है।

टि०—ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० २७ में इसी स्थान के एक और स्मारक-प्रस्तर का उल्लेख है, जिसमें ६६० की भाद्रपद वदि ३ और भाद्र वदि १४ का उल्लेख है, परन्तु उसका अन्य कोई विवरण प्राप्त नहीं हुआ।

१४—वि० ६ [=] ०—तेरही (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पंक्तियाँ ५, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। ठीक दशा में न होने से पढ़ा नहीं जा सका। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० १०६। अन्य उल्लेखः आ० स० ई० रि० भाग २१, पृ० १७७।

१५—वि० ९ [७०]—भक्तर (गुना) प्रस्तर-लेख। पंक्तियाँ ८, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। एक उग्रवंशीय यात्री का उल्लेख है। अभिलेख महादेव के एक मन्दिर पर है। ग्वा० पु० रि० १९७५, सं० १०८।

१६—वि० ६६६—रखेतरा या गढ़ेलना (गुना) प्रस्तर-लेख। पंक्तियाँ ५, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। आश्विन वदि ३०। इसमें विनायकपालदेव का उल्लेख है। भा० सू० स० २११०, ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० ३२; अन्य उल्लेख : अ० स० ई० वार्षिकविवरण १९२४-२५, पृ० १६८।

यह अभिलेख एक चट्टान पर अंकित है। इसमें विनायकपालदेव द्वारा

जल सिंचाई के प्रबन्ध का उल्लेख है। "गोपगिरीन्द्र" अर्थात ग्वालियर के राजा का उल्लेख है, परन्तु उसका नाम नहीं दिया गया है। यह प्रशस्ति श्रीकृष्णराज के पुत्र भैलदमन की लिखी हुई है। वर्तमान उर्र नदी का नाम 'उर्वशी' दिया हुआ है।

विनायकपालदेव का अस्तित्व संदेहपूर्ण है। खजुराहा के एक अभिलेख में एक विनायकपालदेव का उल्लेख अवश्य है। (देखिये ए० इ० भाग १, पृ० १२४ तथा ए० इ० भाग १४, पृ० १८०)

—वि० १००० रखेतरा (गुना) भाद्रपद सुदी ३, संख्या १६ में दी गई एक अन्य तिथि।

—वि० १००० रखेतरा (गुना) कार्तिक, संख्या १६ में दी गई एक अन्य तिथि।

१७—वि० १००० [?] लखारी (गुना) प्रस्तर-लेख। पंक्तियां २, लि० प्राचीन नागरी, भा० अशुद्ध संस्कृत। एक नष्ट-भ्रष्ट मन्दिर के दासे पर। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं २३।

तिथि अस्पष्ट है "संवत्सर सतेशु १०—१० सहस्रेशु" कदाचित् लेखक का तात्पर्य १००० से है।

१८—वि० १०१३—सुहानिया (मुरैना)। पं० १, लिपि प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। महेन्द्रचन्द्र के उल्लेख युक्त। लूअर्ड की सूची पृ० ८६ तथा, ज० ब० अ० भाग ३१,पृ० ३९१। पूर्णचन्द्र नाहर, जैन-लेख सं० १४३०।

१९—वि० १०२[८]—निमथूर (मन्दसौर) प्रस्तर-लेख। पंक्तियाँ ७, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। महाराजाधिराज श्री चामुण्डराजकालीन। भा० सू० सं० ८१; ग्वा पु० रि० संवत् १९७४, सं० ५। अन्य उल्लेख : आ० स० इ० रि० भाग २३, पृ० १२५; कीलहोर्न की सूची सं० ४३।

पंचमुखी महादेव के मन्दिर के द्वार पर यह अभिलेख है और इसमें पद्मजा द्वारा शम्भु के एक मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है।

२०—वि० १०३४—ग्वालियर (गिर्द) मूर्तिलेख। पंक्ति १, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। महाराजाधिराज श्री व्रजदामन् (कच्छपघात) का उल्लेख है। भा० सू० सं० ८६; अन्य उल्लेख : ज० ए० ब० सो० भाग ३०, पृ० ३८३, चित्र १; पूर्णचन्द्र नाहर जैन-लेख सं० १४३१।

२१ वि० १०३६—उज्जैन (उज्जैन) ताम्रपत्र। लि० प्राचीन नागरी, भा०

संस्कृत। (परमार, वाक्पतिराज उपनाम अमोघवर्ष का उल्लेख है। भगवत्पुर में लिखित ताम्रपत्र। भा० सू० सं० ८७। अन्य उल्लेख: ज० ए० सो० बं० भाग १६, पृष्ठ ४७५; इ० ए० भाग १४, पृ० १६०; कीलहार्न सूची सं० ४९।

परमार वंशवृक्ष – कृष्णराज, वैरिसिंह, सीयकदेव, वाक्पति (विरुद अमोघवर्ष) 'शट्त्रिंश साहस्रिक संवत्सरेस्मिन कार्तिक शुद्ध पौर्णिमास्याम' को हुए चन्द्रग्रहण के उपलक्ष में दिये गये दान का यह ताम्रपत्र भगवत्पुर में संवत् १०३६ चैत्रवदी ६ को लिखा गया। आज्ञा प्रचलित करने वाले अधिकारी (आज्ञादापक) रुद्रादित्य जिसका इस समय गुणपुर (वर्तमान गुना ?) में शिविर होना लिखा है।

२२—वि० १०३८—उज्जैन (उज्जैन) ताम्रपत्र। पं० ५३, लि० प्राचीन नागरी, भा संस्कृत। वाक्पतिराज (द्वितीय) का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सं० १९८७, सं० ६।

तीन पत्र मिलकर पूर्ण विवरण बनता है। गौनरी ग्राम में एक कुए की खुदाई में यह ताम्रपत्र मिले थे। यह ग्राम उज्जैन जिले की नरवर जागीर में है और यह ताम्रपत्र जागीरदार साहब के पास ही हैं।

इसमें परमार वंश निम्न प्रकार आया है – कृष्णराज, वैरिसिंह, सीयक तथा वाक्पतिराज। वाक्पतिराज के विरुद पृथ्वीवल्लभ, श्रीवल्लभ अमोघवर्ष आदि भी आये हैं। इसमें वि० संवत् १०३८ के कार्तिक मास में हुए सूर्य ग्रहण के अवसर पर हूण-मण्डल के अवरक-भोग में स्थित वणिक नामक ग्राम के दान का उल्लेख है। ताम्रपत्र आठ मास बाद अधिक आषाढ शुक्ल १०, संवत् १०३८ को लिखा जाकर उस पर श्री वाक्पतिराज के हस्ताक्षर हुए। आज्ञा प्रचलित करने वाले (आज्ञादापक) अधिकारी का नाम श्री रुद्रादित्य दिया हुआ है।

इन ताम्रपत्रों में से एक के पृष्ठ भाग पर वि० सं० ८६४ का भी उल्लेख है। लेख पढ़ने में नहीं आता है, परन्तु यह इस दान से स्वतन्त्र उल्लेख है।

२३—वि० १०३८—ग्वालियर (गिर्द)। पं० २४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। कक्कुक (?) के समय का अभिलेख है जिसमें एक ताल, कुआ, तथा मन्दिरों से घिरे (मन्दिरद्वादशमन्दिरैर्भृतम्) मन्दिर बनाने का उल्लेख है। भा० सू० सं० ८८। अन्य उल्लेख: आ०स० ई० वार्षिक रिपोर्ट १९०३—४ पृ० २८७। इसका प्राप्ति-स्थान अज्ञात है।

२४—वि० १०३९—ग्यारसपुर (भेलसा) अठखम्भा के खंडहरों में एक

स्तम्भ पर। पं० ५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। भा० सू० संख्या ८६ ;ग्वा० पु० रि० संवत् १६७४, सं० ८६ अन्य उल्लेख : प्रो० रि० आ० स०, वे० स० १६१३-१४, पृ० ६१।

२५—वि० १०४७—उज्जैन (उज्जैन) ताम्रपत्र-लेख, पं० २६, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। वाक्पतिराज द्वितीय का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सं० १९८७, सं० १०। दो पत्रों को मिलकर पूरा लेख बनता है।

यह दो ताम्रपत्र उक्त सं० २२ के तीन पत्रों के साथ नरवर जागीर के गौनरी ग्राम में प्राप्त हुए हैं और जागीरदार साहब के पास हैं। इसमें परमार वंश की वंशावली सं० २२ के अनुसार दी गई है। इसमें संवत् १०४३ के माघ मास के उदायन पर्व पर अवन्तिमंडल के उज्जयिनी-विषय के पूर्व-पथक की मदुकभुक्ति में स्थिति एक ग्राम के दान का उल्लेख है। दान के चार वर्ष पश्चात् संवत् १०४७ के माघ मास की कृष्णपक्षीय १३ को यह दान-पत्र लिखा गया।

२६—वि० १०५३—जीरण (मन्दसौर) स्तम्भ-लेख। पं० ६, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। गुहिलपुत्र (गुहिलोत) वंश के विग्रहपाल का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि०संवत् १६७०, संख्या २५।

गुप्त वंश के बसंत की पुत्री सर्वदेवी द्वारा स्तम्भ-निर्माण का तथा गुहिल पुत्र (गुहिलोत) विग्रहपाल की पत्नी का उल्लेख है। आश्विन सुदी १४।

२७—वि० १०६५—जीरण (मन्दसौर) स्तम्भ-लेख। पं० ६, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७०, सं० २६ विग्रहपाल की पत्नी तथा चाहमान वंश के श्री अशोच्य का उल्लेख है।

२८—वि०१०६५—जीरण (मन्दसौर) स्तम्भ-लेख। पं० ७, लिपि प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। विग्रहपाल, श्रीदेव, श्री बच्छराज, नागह्रद भरुकच्छ आदि का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९७०, सं० २३ भाद्रपद बदी ८ बुध।

२९—वि० १०६५- जीरण (मन्दसौर) स्तम्भ-लेख। पं० ८, लिपि प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। विग्रहपाल, वैरिसिंह तथा श्री चाहिल का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि संवत् १६७०, सं० २६ भाद्रपदी ८ बुध।

३०—वि० १०६५—जीरण (मन्दसौर) स्तम्भ-लेख। पं० ८, लिपि प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत, विग्रहपाल आदि का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७०, सं० २८, भाद्रपद बदी ८ बुधे।

३१—वि० १०६५—जीरण (मन्दसौर) मन्दिर के सामने छवी पर। पं० ८, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। विग्रहपाल की पत्नी तथा लक्ष्मण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, सं० २४।

३२—वि० १०६७—ग्यारसपुर (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० १२, लिपि प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत १९८९, सं० ४। अन्य उल्लेख आ० स० इ० रि० भाग १० पृष्ठ ३४।

यह अभिलेख एक कुम्हार के घर में सीढ़ी में लगा मिला था। इसमें एक मठ के निर्माण का उल्लेख है। उत्कीर्ण करने वाले कारीगर का नाम पुलिन्द्र है और एक अधिकारी प्रथम गौष्ठिक का नाम कोकल्ल दिया हुआ है। किसी मधुसूदन का नाम भी आया है।

३३—वि० १० [७३?]—भौंरासा (भेलसा) भवनाथ के मन्दिर पर। पंक्तियाँ एक ओर १३ और दूसरी ओर ९, लि० नागरी, भा० संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, सं० २१।

३४—वि० १०७२ [?]—सन्दौर (गुना) स्मारकस्तम्भ-लेख। लि० नागरी, भाषा संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत १९७५, सं० ७०। अस्पष्ट है।

३५ वि० १०७८ - उज्जैन (उज्जैन) दो ताम्रपत्र। पं० ३१ लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। धार के परमार भोजदेव के उल्लेखयुक्त। भा० सू० संख्या १११। अन्य उल्लेख: इ० ए० भाग ६, पृ० ५३ तथा चित्र। वंशवृक्ष—सीयकदेव, वाक्पतिराजदेव सिन्धुराजदेव, भोजदेव। इसमें नागद्रह (वर्तमान नागगिरी नामक नाला) के पश्चिम में स्थित वीराणक ग्राम को गोविन्दभट्ट के पुत्र धनपतिभट्ट को दान देने का उल्लेख है। दान माघ वदि तृतीया संवत् १०७८ को दिया गया था और चैत्र सुदी १४ को ताम्रपत्र लिखा गया था।

३६—वि० [१०] ७८—रदेव (श्योपुर) शान्तिनाथ की मूर्ति पर। पं० १, लि० प्राचीन नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ३६। अस्पष्ट।

३७—वि० १०८२—टोंगरा (शिवपुरी) नृसिंहमूर्ति पर। पं० १७, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ६०। हरि के मन्दिर के निर्माण का उल्लेख। यह नृसिंहमूर्ति अब गूजरी महल संग्रहालय में है। लेख मूर्ति से पृथक् कर लिया गया है।

३८—वि० १०६३—उदयगिरि (भेलसा) अमृत-गुहा में एक खम्भे पर। पं० ८, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का उल्लेख है। भा० सू० सं० १२२; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ८१; अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग १३, पृष्ठ १८५ तथा भाग १४ पृ० ३५२; प्रा० रि०, आ० स० वे० स० १९१४-१५, पृष्ठ ६५।

३९—वि० १०९८—बारा (शिवपुरी) पं० ८, लि० नागरी, भा० संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, सं० ८।

यह अभिलेख किसी प्रशस्ति का अन्तिम भाग है। इसमें विष्णु-मन्दिर (गरुड़ासन) के (नाम नहीं है) द्वारा निर्माण का उल्लेख है। फिर कुछ व्यक्तियों के नाम हैं। सूत्रधार और कवि के नाम स्थिरार्क्क तथा नारायण हैं।

४०—वि० ११०७ पढ़ावली (मुरेना) मन्दिर के प्रवेश द्वार पर। पं० २, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ४२। माघ सुदी ५।

४१—वि० [११] १३—बडोह (भेलसा) जैन मन्दिर में। पं० ४, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। एक यात्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, सं० ३।

तिथि में शताब्दी सूचक अंक नहीं है।

४२—वि० १११६—उदयपुर (भेलसा) द्वार के पास दीवाल पर। पं० २१, लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। उदयादित्य द्वारा शिव-मंदिर बनाने के उल्लेख युक्त एक प्रशस्ति है। भा० सू० सं० १३४, ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४ सं० १२६। अन्य उल्लेख : ज० ए० सो० बं० भाग ९, पृ० ५४१; ज० अ० ओ० सो० भाग ७, पृ० ३५, प्रो० रि० आ० स०, वे० स० १९१३-१४, पृ० ३७।

प्रशस्ति संवत् १५६२ वि०, शाके १४२७ की है। उसमें संवत् १११६ में परमार उदयादित्य द्वारा शिव-मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है।

४३—वि० १११८—चितारा (श्योपुर) प्रस्तर-स्तम्भ-लेख। पं० ३, लि० नागरी भा० प्राकृत अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ५५।

४४—वि० ११२० (?)—सकर्रा (गुना) सती-स्तंभ। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ७३। शुक्रवार, माघ सुदी ३।

नागपुर प्रशस्ति में नरवर्मन के राज्यकाल के प्रारम्भ की पूर्वतम तिथि ११६१ ज्ञात थी, अब इससे उसका राज्यकाल दश वर्ष पूर्व आरम्भ होना सिद्ध होता है। इसी पत्थर पर चार पंक्तियाँ और हैं, जो अस्पष्ट हैं।

५८—वि० ११५२—दुबकुण्ड (श्योपुर) जैन मन्दिर में पदचिह्नों के नीचे। पं० ४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। काष्टसंघ महाचार्यवर्य श्रीदेवसेन की पादुका युगल का उल्लेख है। भा० सू० सं० १६१; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ४८। अन्य उल्लेख आ० स० इ० रि० भाग २०, पृ० १० । वैशाख सुदी ५।

५९—वि० ११५३—खोड़ (मन्दसौर) प्रस्तर स्तम्भ-लेख। पं० ३०, लि० नागरी भा० संस्कृत। जेपट या जयपट द्वारा कूप-निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ४०। अस्पष्ट।

६०—वि० ११५४ (?)—भेलसा (भेलसा) खण्डित मूर्ति पर। पं० २, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। लक्ष्मण के पुत्र कुमारसी का उल्लेख है तथा प्रारम्भ में बुद्ध का अभिवादन किया गया है। ग्वा० पु० रि० संवत् २०००, सं० ४।

६१—वि० ११६१—गवालियर गढ़ (गिर्द) पं० ६, लि० नागरी, भा० संस्कृत, कच्छपघात महीपालदेव के उत्तराधिकारी का खण्डित अभिलेख। भा० सू० सं० १६६। अन्य उल्लेख : आ० स० इ० रि० भाग २, पं० ३५४; ज० ब० ए० सो० भाग ३१, पृष्ठ ४१८; इ० ए० भाग १५, पृ० २०२।
भुवनपाल का पुत्र अपराजित देवपाल उसका पुत्र पद्मपाल, महीपाल, भुवनपाल, मधूसूदन।

निर्ग्रन्थनाथ यशोदेव द्वारा रचित।

६२—वि० ११६२—कदवाहा (गुना) मन्दिर नं० ३ में एक चौकी पर। पं० ५, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। कुछ अवाच्य नाम अंकित हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ६४।

श्रावण सुदी ५।

६३—वि० ११६४—खोड़ (मन्दसौर) एक घर में लगे प्रस्तर पर। पं० २, लि० नागरी, भा० संस्कृत। ग्वा० पु० रि० सं० संवत् १९७५, सं० ४१।

६४—वि० ११७७—ईंदौर (गुना) स्मारक-स्तम्भ लेख। पं० ४, लि० प्राचीन

नागरी, भाषा संस्कृत। अजयपाल नामक योद्धा के शत्रुओं पर विजय पाकर युद्धक्षेत्र में हत होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९३, संख्या ४।

६५—वि० ११७७—नरवर (शिवपुरी) ताम्रपत्र। कच्छपघात वीरसिंहदेव का नलपुर का ताम्रपत्र। भा० सू० सं० २०६। अन्य उल्लेख : ज० ए० ओ० सो० भाग ६, पृ० ५४२।

वंशावली—गगनसिंह, उसका उत्तराधिकारी शरदसिंह उसका (लखिमा देवो से) पुत्र वीरसिंह।

६६—वि० ११८२—चैत (गिर्द) जैन स्तम्भ। पं० ६, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। कुछ जैन पंडितों के अवाच्य नाम, केवल एक विजयसेन नाम पढ़ा गया है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९०, सं० ४।

६७—वि० ११८३—चैत (गिर्द) जैन स्तम्भ। पं० ६, लि० प्राचीन, नागरी, भा० संस्कृत। खंडित तथा अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९० सं० ३। माघ सुदी ५।

६८—वि० ११९२—उज्जैन (उज्जैन) ताम्रपत्र। पं० १६, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। परमार महाराज यशोवर्मदेव द्वारा लघुवेंगणपद्र तथा ठिक्करिका नामक ग्रामों के दान देने का तथा देवलपाटक नामक ग्राम का उल्लेख। भा० सू० सं० २३५। अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग १९, पृ० ३४९।

यह दान मोमलादेवी की अन्त्येष्टि के समय दिया गया। संभवतः यह यशोवर्मन की माता हैं।

केवल एक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है।

६९—वि० ११९५—उजैन (उज्जैन) पं० १४, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। अणहिलपाटक के चौलुक्य जयसिंह का उल्लेख है। भा० सू० सं० २४। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० १६ तथा १९७९, सं० ३३। अन्य उल्लेख : प्रो० दि० आ० स०, वे० सं० १९१२, १३ पृष्ठ ५५; इ० ए० भाग ४२, पृ० २५८।

जयसिंह के विरुद त्रिभुवनगण्ड, सिद्धचक्रवर्ती, अवन्तिनाथ और वर्वक जिष्णु। जयसिंह द्वारा मालवे के यशोवर्मन् को हराकर अवन्ति छीन लेने का भी उल्लेख है।

७०—वि० १२००—उज्जैन (उज्जैन) ताम्रपत्र। पं० २०, लि० प्राचीन नागरी,

भाषा संस्कृत। परमार लक्ष्मीवर्मदेव का दान। भा० सू० सं० २५७। अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग १६, पृ० ३५२; इण्ड० इन्स०, सं० ५०।

अपने पिता यशोवर्मदेव द्वारा दिये गये एक दान की लक्ष्मीवर्मदेव द्वारा पुष्टि का उल्लेख है।

वंश वृक्ष—उदयादित्य, नरवर्मन, यशोवर्मन, लक्ष्मीवर्मन।

महाद्वादशक-मंडल में स्थित राजशयन-भोग के सुरासणी से सम्बद्ध वडौदा ग्राम तथा सुवर्ण-प्रसादिका से सम्बद्ध उथवणक ग्राम के धनपाल नामक ब्राह्मण को दान देने का उल्लेख है। यह धनपाल दक्षिण का कर्नाट ब्राह्मण था तथा अट्रेलविद्वावरि से आया था।

७१—वि० १२०२—नरेसर (मुरैना) जलमन्दिर की दीवाल पर। पं० ७, लि० नागरी भा० संस्कृत। महेश्वर के लड़के राउक के दान का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५ सं० २१।

७२—वि० १२०६—गुड्डार (शिवपुरी) जैन मूर्ति पर। पं० ७, लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। शान्तिनाथ, कुंथनाथ तथा अरनाथ की मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० २८।

आषाढ़ वदि बुधवार।

७३—वि० १२१०—पचराई (शिवपुरी) जैन मदिर में। पं० १०, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। जैनाचार्यों के नामों का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९७१, सं० ३१।

७४—वि० १२१०—पचराई (शिवपुरी) जैन-मूर्ति पर। पं० ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत। जैन आचार्यों के नाम दिए हुए हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० ३४।

७५—वि० १२१०—बाघ (अमझरा) ब्रह्मा की मूर्ति पर। पं० ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत। परमार श्री यशोधवल की बहिन श्री भामिनि द्वारा ब्रह्मा की मूर्ति-निर्माण का उल्लेख, ज्येष्ठ बदि १३। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, पद ३५।

७६—वि० १२१३—नरवरगढ़ (शिवपुरी) तीर्थंकर की मूर्ति पर। पं० १ लि० नागरी, भाषा हिन्दी। प्रतिमा की प्रतिष्ठा का उल्लेख हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, सं० ३। आषाढ़ सुदी ९।

७७—वि० १२१३—पचराई (शिवपुरी) जैन मूर्ति पर। पं० ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। ग्वा० पु० रि० सं० १९७१, सं० ३५।

७८—वि० १२१५—कर्णावद (उज्जैन) देवपाल (परमार) के उल्लेख सहित, भा० सू० सं० १६१२।

७६—वि० १२१६—भेलसा (भेलसा) बीजामंडल मस्जिद के स्तम्भ पर। पं० २, लि० नागरी, भा० संस्कृत (अस्पष्ट)। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७०, संख्या ३।

८०—वि० १२१६—भेलसा (भेलसा) बीजामंडल मस्जिद के स्तम्भ पर। पं० ६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। भा० सू० सं० ३०। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७४, सं० ६५। अन्य उल्लेख : प्रो० रि० आ० स०, वे० स० १९१३—१४, पृ० ५६।

८१— वि० १२१६—भेलसा (भेलसा) बीजामंडल मस्जिद के स्तम्भ पर। सं० २, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत १६७४, सं० ६४।

८२—वि० १२२०—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर की महराब पर। पं० २०, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अणहिलपाटक के चौलुक्य महाराज कुमारपालदेव का उल्लेख है। दान 'ऊदलेश्वर देव' के मन्दिर में दिया गया है। वसन्तपाल के दान का उल्लेख है। कुमारपाल देव को अवन्तिनाथ लिखा है तथा शाकम्भरी के राजा को जीतने वाला लिखा है। यशोधवल उसका महामात्य था।

इस अभिलेख के संवत् का भाग नष्ट हो गया है। केवल "पौष सुदि १५ गुरौ' तथा "चन्द्रग्रहण" पर्व का उल्लेख है। कुमारपाल देव ई० ११४३-४४ में गद्दी पर बैठा और ११७३ ई० तक उसका राज्य रहा। इन जानकारियों पर से प्रो कीलहार्न ने इस लेख पर संवत् १२२२ निकाला है। भा० सू० सं० ३१५; ग्वा० पु० रि० संवत् १६७३, सं १०६। अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग १८, पृ० ३४३। पौष सुदी १ गुरौ सोमग्रहण पर्व्वणि।

८३—वि० १२२२—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर की पूर्वी महराब पर। सं० ५, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। ठक्कुर श्री चाहड द्वारा भृंगारी चतुःषष्टि में स्थित सांगभट्ट ग्राम के आधे भाग के दान का उल्लेख भा० सू० सं० ३२२, ग्वा० पु० रि० संवत १६७४, सं० १०८ तथा संवत १६८० सं० ६। अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग १८, पृ० ३४५।

वैशाख सुदी ३ सोमवार। अक्षय तृतीया पर्व को दान।

टि०—चाहड़ कुमारपालदेव का सेनापति ज्ञात होता है।

८४— वि० १२२२— पचराई (शिवपुरी) जैन मन्दिर की कुछ मूर्तियों पर।

१२२२, १२३१ तथा १२१६ संवतों का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १६७१, सं० ३६।

८५— वि० १२२४—सुन्दरसी (उज्जैन) महाकाल मन्दिर के स्तम्भ पर। पं० १०, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७४, सं० ५०।

८६—वि० १२२६—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर में। पं २१, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अणहिलपाटक के अजयपालदेव चौलुक्य के समय का लेख है। उमरथा नामक ग्राम के दान का उल्लेख है। भा० सू० सं० ३५५ ग्वा० पु० रि० संवत् १६७४, सं० १०४। अन्य उल्लेख : जर्नल बंगाल एशियाटिक सोसायटी, भाग ३१, पृ० १२५; इ० ए० भाग १८, पु० ३४७। जब सोमेश्वर प्रधान मंत्री था तब लूणपसाक (लवण प्रसाद) उदयपुर का शासक नियुक्त किया गया था, उदयपुर "भैलस्वामी महाद्वादशक" मंडल में था। उसमें भृंगारिका चतुःषष्टि नामक पथक था उसमें उमरथा ग्राम था।

वैशाख सुदि ३ सोमे। अक्षय तृतीया पर्व्वणि।

८७—वि० १२२६— नयी सोयन (श्योपुर) गणेश-मूर्ति पर। पं० २, लि० नागरी, अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० सं० १६७३, सं० ३३।

८८—वि०१२३५ और १२३६—पिपिलियानगर (उज्जैन) ताम्रपत्र। लिपि नागरी, भा० संस्कृत। परमार महाकुमार हरिश्चन्द्रदेव द्वारा नर्मदा तीर्थ पर दिये गये दान का उल्लेख है। भा० सू० सं ३८३। अन्य उल्लेख : ज० ए० सो० ब० भाग ७, पृष्ट ७३६।

वंशावली—उदयादित्य, नरवर्मन्, यशोवर्मन्, जयवर्मन्, महाकुमार लक्ष्मीवर्मन् के पुत्र महाकुमार हरिश्चन्द्रदेव।

८९— वि० १२३६—भेलसा (भेलसा) प्रस्तर अभिलेख। पं० ६, लिपि प्रचीन नागरी, भाषा संस्कृत। दामोदर नामक व्यक्ति द्वारा छोटे भाई बाल्हन के स्मारक स्थापन करने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९६३, सं० १। फाल्गुण सुदी ३।

९०—वि० २३६—बजरङ्गगढ़ (गुना) जैनमन्दिर में एक मूर्ति पर। पं० १ लि० नागरी, भा० संस्कृत। मूर्त्ति की स्थापना का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १६७५, सं० ६४।

९१— वि० १२३८—चितारा (श्योपुर) प्रस्तर-स्तम्भ। पं० ७, लिपि नागरी भा० संस्कृत। किसी महीपाल द्वारा रुद्र की मूर्ति की स्थापना का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९७३, सं० ५२।

६२— वि० १२४२—भेलसा (भेलसा) मूर्ति-लेख। पं० ५, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। विष्णु-मूर्ति के निर्माण का उल्लेख। मूर्ति अब गूजरी महल संग्रहालय में है।

६३—वि०१२४५—नरेसर (मुरैना) मूर्ति के अधोभाग पर। पं० २, लिपि नागरी, भाषा अशुद्ध संस्कृत। रावल वामदेव का उल्लेख है। इस व्यक्ति ने नरेसर में अनेक प्रतिमायें स्थापित कीं और उनमें प्रतिमाओं के नाम कालिका, वैष्णवी, देवांगना, इन्द्राणी, उमा, जाम्या, निवजा, वारुणी, कौवेरो मघाली, भैरवी आदि लिखकर "वामदेव प्रणमति" लिखा है, परन्तु उन पर तिथि नहीं है। देखिये संख्या ६८० से ६६१) ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ३८। ये सब प्रतिमाएँ गूजरी महल संग्रहालय में हैं।

६४—वि० १२४६—नरेसर (मुरैना) मूर्ति पर। पं० २, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। अजपाल के उल्लेख युक्त वामदेव का दान सम्बन्धी अभिलेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७५, संख्या २३।

६५—वि० १२६७—पिपिलिया नगर (उज्जैन)। लि० नागरी, भाषा सं०। मंडपदुर्ग में दिये गये परमार महाराज अर्जुनवर्मदेव के दान का उल्लेख। भा० सू० सं० ४५७। अन्य उल्लेख : ज० ए० सो० बं० भाग ५, पृष्ठ ३७८।

परमार वंश-वृक्ष—भोज, उसके (ततोभूत्) उदयादित्य हुआ। उसका पुत्र नरवर्मन; उसका पुत्र यशोवर्मन; उसका पुत्र अजयवर्मन; उसका पुत्र सुभटवर्मन; उसका पुत्र अर्जुनवर्मन (जिसने जयसिंह को हराया)।

६६— वि० १२७५—कर्णावद (उज्जैन) कर्णेश्वर मन्दिर में एक प्रस्तर स्तम्भ। पं० ६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। देवपालदेव के शासन-काल में एक दान का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, सं० ३४।

६७—वि० १२७७—कुरैठा (शिवपुरी) ताम्रपत्र। पं० २४, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। प्रतिहार (प्रतीहार) मलयवर्मन द्वारा दान। भा० सू० सं० ४७४, ग्वा० पु० रि० संवत् १६७२, सं० ६४। अन्य उल्लेख : प्रो० आ० स० रि०, वे० स० १६१५-१६, पृ० ५९।

प्रतिहार वंशावली—नट्टुल; उसका पुत्र प्रतापसिंह; उसका पुत्र विग्रह, जो एक म्लेच्छ राजा से लड़ा और गोपगिरि (ग्वालियर) को जीता चाहमान केल्हणदेव की पुत्री लाल्हणदेवी से इसके मलयवर्मन हुआ। सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुदवठ (कुरैठा) ग्राम दान देने का उल्लेख है।

६८—वि० १२८२—सकर्रा (गुना) सती-प्रस्तर। पं० २, लि० नागरी, भा० हिन्दी। केवल तिथि पढ़ी जा सकी है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ८३।

६६—वि० १२८ (१)—सकर्रा (गुना) सती-प्रस्तर। पं० २, लि० नागरी, भाषा हिन्दी अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १६८४, सं० ८२।

१००—वि० १२८३—चन्देरी (गुना) जैनमूर्ति। पं० २, लि० नागरी, भा० हिन्दी (संस्कृत मिश्रित)। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० ४१।

१०१—वि० १२८३—मन्दसौर (मन्दसौर) सुखानन्द के स्थान पर। एक स्तम्भ लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० स्थानीय हिन्दी। सिन्दूर पुता होने से पढ़ा नहीं जा सकता। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७५, सं० ४३।

१०२—वि० १२८६—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर में स्तम्भ लेख। पं० १४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। (धार के परमार) देवपालदेव के राज्यकाल के दान का लेख, ऊदलेश्वर का उल्लेख है। भा० सू० सं० ४८३। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७४, सं० १२१। अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग २०, पृ० ८३।

१०३—वि० १२८८—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर में एक स्तम्भ पर। पं० ४, लि० नागरी, भा० विकृत संस्कृत। नलपुर (वर्तमान नरवर) के एक यात्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७४, सं० ११७।

१०४—वि० १२८६—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर में स्तम्भ लेख। पं० १५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। धार के परमार महाराज देवपाल-देव का उल्लेख है। भा० सू० सं० ५०८; ग्वा० पु० रि० संवत् १६७४, सं० १२०। अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग २०, पृ० ८३।

१०५—वि० १२८९—वामौर (शिवपुरी) मुरायत मन्दिर के द्वार पर। पं० ७, लि० नागरी, भाषा विकृत संस्कृत। भायल स्वामी की सज्जा करने वाले एक यात्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० १००।

१०६—वि० १२ [६] ३—चन्देरी (गुना) जैन मूर्ति पर। पं० २, लि० नागरी, भा० विकृत संस्कृत। भग्न। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७२, सं० ४२।

१०७—वि० १३००—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर में पूर्वी मेहराब पर। पं० ५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। चाहड़ के दान का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ११४।

१०८—वि० १३००—पारगढ़ (शिवपुरी) सिन्ध की एक चट्टान पर शेष-शायी की मूर्ति पर। पं० १, लि० नागरी, भा० संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ८१।

१०९—वि० १३० [०]—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर की महराब पर। पं० ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत। एक यात्री का अस्पष्ट उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ११३।

११०—वि० १३०४—कुरैठा (शिवपुरी) ताम्रपत्र। पं० १६, लि० प्राचीन नागरी। मलयवर्मन के भाई प्रतिहार नरवर्मन द्वारा वत्स नामक गौड़ ब्राह्मण को गुढ़हा नामक ग्राम के दान का उल्लेख है। भा० सू० सं० ५४१; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ६५। अन्य उल्लेख : प्रो० भा० स० रि०, वे० स० १९१५-१६, पृ० ५९। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा बुधवार।

१११—वि० १३०४—भकतर (गुना) सती स्तम्भ। पं० ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। चाहड़ के उल्लेखयुक्त तथा आसल द्वारा उत्कीर्ण। ग्वा० पु० रि० संवत १९७५, सं० ११३।

११२—वि० १३०४—सकर्रा (गुना) सती प्रस्तर। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, संख्या ७८।

११३—वि० १३०४—सकर्रा (गुना) सती प्रस्तर। पं० ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ७९।

११४—वि० १३०४—सकर्रा (गुना) सती प्रस्तर। पं० ४, लिपि नागरी, भा० हिन्दी। कुंअरसिंह का नाम अंकित है। सावन वदी ६, मंगलवार। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ८४।

११५—वि० १३०४—सकर्रा (गुना) सती प्रस्तर। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ८०।

११६—वि० १३०६—कागपुर (भेलसा) देवी के मन्दिर में। पं० ३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। मंगलादेवी की प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख है। चैत्र सुदी १२, ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, सं० ३।

११७—वि० १३११—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर की पूर्वी दीवाल में एक प्रस्तर पर। पं० १२, लि०, प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। मालवा के परमार जयसिंह के उल्लेख युक्त। भा० सू० सं० ५५०; ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, सं० ८। अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग १८, पृष्ठ ३४१ तथा वही भाग २०, पृ० ८४।

११८—वि० १३१३—घुसई (मन्दसौर) जैन मन्दिर। पं० ६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। रामचन्द्र आदि जैनाचार्यों के नाम युक्त। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ११०।

११९—वि० १३१३—सुनज (शिवपुरी) सती-स्तम्भ। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० ३६।

१२०—वि० १३१६—नरवर। (शिवपुरी) जैन मन्दिर की प्रतिमा पर। पं० १, लि० नागरी, भा० संस्कृत। प्रतिमा की प्रतिष्ठा का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १६८२, सं० ४। ज्येष्ठ ५, सोमे।

१२१—वि० १३१६—नरेसर (मुरैना) प्रस्तर स्तम्भ पर। पं० ८, लि० नागरी, भा० संस्कृत। आशय अस्पष्ट है। जो वस्तुपालदेव तथा नलेश्वर का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० १७।

१२२—वि० १३१९—भीमपुर (शिवपुरी) जैन-मन्दिर पर। पं० २३, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। नरवर के जज्वपेल्ल आसलदेव के एक पदाधिकारी जैत्रसिंह द्वारा एक जैन मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। नागदेव द्वारा मूर्ति की प्रतिष्ठा का भी उल्लेख है। भा० सू० सं० ५६२; ग्वा० पु० रि० संवत १९७१, सं० १५। अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग ४२, पृ० २४२।

य (प) रमाडिराज और उसके उत्तराधिकारी चाहड़ का भी उल्लेख आया है।

१२३—वि० १३१९—पचरई (शिवपुरी) सतीस्तम्भ। पं० ८, लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० ३३।

१२४—वि० १३२१—मन्दसौर (मन्दसौर) पं० १४, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट है। दशपुर की एक बावडी का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, सं० ९ तथा संवत् १९७४, सं० ७। भाद्रपद सुदी ५, बृहस्पतिवार।

१२५—वि० १३२३—घुसई (मन्दसौर) जैन-स्तम्भ लेख। पं० १७, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। कार्तिक सुदी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० १०९।

१२६—वि० १३२४—बलीपुर (अमझरा) स्मारक-स्तम्भ। पं० ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। मडंपदुर्ग के राजा (परमार जयसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९७३, सं० ९८। कदाचित् वही है जिसका उल्लेख डफ के तिथि-क्रम के पृष्ठ १९८ पर है।

१२७—वि० १३२६—पठारी (भेलसा) धार के परमार जयसिंहदेव। भा० सू० सं० ५७५। अन्य उल्लेख : ए० इ० भाग ५ में कीलहार्न की सूची सं० २३२।

१२८—वि० १३२७—राई (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० २, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। यज्व (यज्ञ) पाल आसलदेव का उल्लेख है। भा० सू० सं० ५७६, ग्वा० पु० रि० संवत १९७५, सं० ७९, अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग ४७, पृष्ठ २४१; काइन्स आफ मेडीवल इण्डिया, पृ० ९०।

१२९—वि० १३२९—कुलवर (गुना) सती-स्तम्भ। लि० नागरी, भा० संस्कृत। कछवाहा राजपूत सिंहदेव की दो पत्नियाँ कुवलयदेवी तथा कुन्तादेवी के सती होने का उल्लेख। मृत व्यक्ति के भाई देवपालदेव ने स्तम्भ बनवाया। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, पद ४१।

१३०—वि० १३३२—पढ़ावली (मुरैना) प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० प्राचीन नागरी, भाषा विकृत संस्कृत। विक्रमदेव के शासन-काल में एक मंडप के निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९७२, सं० ३२। भाद्र सुदी ६ बुधवार।

१३१—वि० १३३४—घुसई (मन्दसौर) सती-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। राजा गयासिंहदेव के राज्यकाल में कन्त के पुत्र दल्हा की पत्नी के सती होने का उल्लेख है तथा घुसई का प्राचीन नाम घोषवती भी दिया गया है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ११३। वैशाख बदी ६ शुक्रवार।

१३२—वि० १३३६—बडौदी (शिवपुरी) कूप-लेख। पं० २९, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। आसल्लदेव के पुत्र यज्वपाल गोपालदेव नरवर के राजा के समय बावड़ी निर्माण का उल्लेख। भा० सू० सं० ५९७;

ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० २६। अन्य उल्लेख : भा० स० ई०, वार्षिक रिपोर्ट १९२२-२३, पृष्ठ १८७।

यह एक प्रशस्ति है, जिसमें आसल्लदेव के प्रधान मंत्री गुणधर वंशीय छलिया द्वारा विटपत्र (वर्तमान बूढ़ी बडौद) नामक ग्राम में बावड़ी निर्माण का उल्लेख हैं। इसमें नलपुर (नरवर) के जज्वपेल्ल (जयपाल) राजाओं का वंश-वृक्ष दिया हुआ है।

गोपाद्रि (ग्वालियर) के श्री शिव द्वारा लिखित प्रशस्ति।

१३३—वि० १३३८—बंगला (शिवपुरी) स्मारक-स्तम्भ। पं० १६, लि प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। नलपुर के यज्वपाल गोपालदेव का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० ७।

बलुआ (बरुआ) नदी के किनारे नलपुर (नरवर) के राजा गोपालदेव और जेजामुक्ति (बुन्देलखंड) के चन्देल राजा वीरवर्मन के बीच हुए युद्ध का उल्लेख है। इस स्मारक-स्तम्भ पर गोपालदेव की ओर से लड़ने वाले रौतभोजदेव के पौत्र, रौतदेव के वीर पुत्र वन्दनो की वीर गति का उल्लेख है।

१३४—वि० १३३८— बंगला (शिवपुरी) स्मारक-स्तम्भ। पं० ११, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। नलपुर का राजा गोपालदेव का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० ९। शुक्रवार चैत्र सुदी ७

सं० १३३ में उल्लखित युद्ध में हत एक योद्धा का उल्लेख। इसमें गोपालदेव के प्रधान मंत्री (जिसे महाकुमार कहा गया है) ब्रह्मदेव का भी उल्लेख है।

१३५—वि० १३३८—बंगला (शिवपुरी) स्मारक-स्तम्भ। पं० १२ लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। नलपुर के महाराज गोपालदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० १०। शुक्रवार चैत्र सुदी ७।

सं० १३३ में उल्लखित युद्ध में हत एक योद्धा का उल्लेख।

१३६—वि० १३३८—बंगला (शिवपुरी) स्मारक-स्तम्भ। पं० १२, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। नलपुर के गोपालदेव का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० ११। शुक्रवार चैत्र सुदी ७।

संवत १३३ में उल्लखित युद्ध में हत एक योद्धा का उल्लेख।

१३७—वि० १३३८—बंगला (शिवपुरी) स्मारक-स्तम्भ। पं० १४, लिपि प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। भग्न तथा अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० १२। शुक्रवार चैत्र सुदी ७।

१३८—वि० १३३८—बंगला (शिवपुरी) स्मारक-स्तम्भ। पं० १४, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। भग्न तथा स्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० १३। शुक्रवार चैत्र सुदी ७।

१३९—वि० १३३८—बंगला (शिवपुरी) स्मारक-स्तम्भ। पं० ९, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। नलपुर के महाराज गोपालदेव तथा उनके प्रधान मंत्री (महाकुमार) ब्रह्मदेव के शासन-काल में हुए सं० १३३ में उल्लिखित युद्ध का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० ८। शनिवार चैत्र सुदी ७

सं० १३३ से संख्या १३८ तक चैत्र सुदी ७ संवत् १३३८ को शुक्रवार लिखा है, परन्तु इस अभिलेख में उस दिन शनिवार लिखा है। यह या तो भूल से लिखा गया है या यह तिथि दो वारों तक चली है और युद्ध दोनों दिन हुआ है।

१४०—वि० १३३८—नरवर (शिवपुरी) प्रस्तर लेख। पं० २२, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। नलपुर के राजा गोपालदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ९८।

चाहड़ के वंशज नलपुर के राजा गोपालदेव के राज्यकाल में आशादित्य कायस्थ द्वारा एक बावड़ी के निर्माण एवं वृक्ष-रोपण का उल्लेख है।

१४१—वि० १३३९—कचेरी नरवरगढ़ (शिवपुरी) प्रस्तर लेख। पं० २७, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। जज्वपेल्ल गोपालदेव के राज्य काल में गांगदेव द्वारा निर्मित कूप का उल्लेख है। भा० सू० सं० ६०३, ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० ९, अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग ४७; पृष्ठ २४२।

जयपाल नामक वीर का उल्लेख है, जिसे जज्वपेल्ल भी कहा है। इसके नाम से इस वंश का नाम यज्वपाल पड़ा। नरवर का नाम नलगिरि दिया हुआ है।

१४२—वि० १३३९—पचरई (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। चन्देरी देश का उल्लेख है। भग्न तथा अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० ३४।

१४३—वि० १३३—कोतवाल (मुरैना) स्तम्भ-लेख। पं० १५, लि० नागरी, भा० विकृत संस्कृत। भग्न तथा अवाच्य। ग्वा०पु०रि० संवत् १९७२, सं० २४।

यह स्तम्भ सेवाराम नामक वैश्य के घर में लगा हुआ है।

१४४—वि० १३४०—पीपलरावाँ (उज्जैन) भित्ति-लेख। पं० १३ (दो टुकड़ों में) लि० नागरी, भाषा संस्कृत। महाराजा विजय का उल्लेख। आशय स्पष्ट नहीं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ४४।

१४५—वि० १३४०—गन्धावल (उज्जैन) स्मारक-स्तम्भ। पं० ६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। आशय स्पष्ट नहीं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ४०।

१४६—वि० १३४०—नरवर (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० ३, लि० प्राचीन नागरी, भाषा हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, सं० १३।

१४७—वि० १३४०—नरवर (शिवपुरी) जैन-प्रतिमा-लेख। पं० १, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। जैन प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, सं० ५।

१४८—वि० १३४१—सकर्रा (गुना) सती-प्रस्तर। पं० ११, लि० नागरी, भा० हिन्दी। रामदेव के शासन-काल का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ८७१।

शनिवार ज्येष्ठ सुदि ४।

१४९—वि० १३४१—नरवर (शिवपुरी) राममन्दिर के पास कूप-लेख। पं० १५, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। सेवायिक ग्राम निवासी वंसल गोत्र के बनिया राम द्वारा महाराज गोपाल (स्पष्टतः जज्वपेल्लवंशीय) के राज्य में बावड़ी निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, सं० १५।

शिवनाथ द्वारा रचित।

१५०—वि० १३४१—सुरवाया (शिवपुरी) कूप-लेख। पं० २५, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। सरस्वतीपट्टन (सुरवाया) के सारस्वत ब्राह्मण ईश्वर द्वारा कूप-निर्माण का उल्लेख। भा० सू० सं० ६०६; 'गाइड टू सुरवाया' नामक पुस्तक में पृ० २५ पर चित्र सहित उल्लेख। कार्तिक सुदि ५ बुधे। सुरवाया किले के उत्तर की ओर डबिया बावड़ी में मिला था।

१५१—वि० १३४ [१]—सेसई (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० १२, लि० नागरी, भाषा हिंदी। मलयदेव की मृत्यु का तथा सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० २१।

पौष बदि १ सोमवार।

१५२—वि० १३४२—बलारपुर (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० १८, लि० नागरी, भा० संस्कृत। नरवर के गोपालदेव का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० २१।

रन्त, बाघदेव तथा रन्तानी महादे के पुत्र रन्त अर्जुन के युद्ध में मारे जाने तथा उसकी तीन पत्नियों के सती होने का उल्लेख।

जेष्ठ बदि ३ सोमवार।

१५३—वि० १३४२—सकर्रा (गुना) सती-प्रस्तर। पं० ८ लिपि नागरी, भा० हिन्दी। किसी रामदेव का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, सं० ८१।

१५४—वि० १३४२—सकर्रा (गुना) सती-स्तम्भ। लि० नागरी, भा० संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ९०।

१५५—वि० [१] ३४ [३]—तिलोरी (गिर्द) स्तम्भ-लेख। पं० २, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। अपूर्ण। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ४।

१५६—वि० १३४५—ईंदोर (गुना) स्तम्भ-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० संस्कृत। पढ़ा नहीं जा सका। ग्वा०पु०रि० संवत् १९८ , सं० ६।

१५७—वि० १३४५—पचरई (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० १८, लिपि नागरी, भा० संस्कृत। राजा गोपालदेव तथा उसके अधीनस्थ कच्छा रानेजू के पुत्र हंसराज तथा वल्हदेव का उल्लेख है। ग्वा०पु०रि० संवत १९७१, सं० २६।

बैशाख बदि २ शनि।

१५८—वि० १३४ (=)—बढोतर (शिवपुरी) स्मारक-स्तम्भ। पं० १७, लि० नागरी, भा० संस्कृत। श्रीमद्‌गोपाल का उल्लेख है। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ६३।

चैत्र सुदी ८ गुरुवार।

१५९—वि० १३४८—सुरवाया (शिवपुरी) एक तालाब में प्राप्त। पं० ३३, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। नलपुर के राजा गोपाल के पुत्र (यज्वपाल) गणपति के राज्यकाल में ठक्कुर वामन द्वारा एक वाटिका के निर्माण का उल्लेख है। भा० सू० सं० ६२८। अन्य उल्लेख: आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३१६; इ० ए० भाग २२ पृ० ८२ तथा वही, भाग ४७, पृ० २४१।

यमुना किनारे के नगर मथुरा की प्रसंशा है जहाँ से माथुर कायस्थ उत्पन्न हुए (सो) मधर के पुत्र सोममित्र द्वारा रचित सोमराज के पुत्र महाराज द्वारा लिखित तथा माधव के पुत्र देवसिंह द्वारा उत्कीर्ण।

१६०—वि० १३४०—नरवर (शिवपुरी) जैन-प्रतिमा-लेख। प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १६८२, सं० ६।

१६१—वि० १३४८—कोलारस (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० १, लि० नागरी, भा० संस्कृत। एक सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७५, सं० ८२।

१६२—वि० १३४६—ग्वालियर (गिर्द) गू० म० संग्रहालय में रखा हुआ प्रस्तर-लेख। पं० १७, लि० नागरी भा० संस्कृत अशुद्ध। (रणथम्भोर के) माहमान हम्मीरदेव जब शाकम्भर (सांभर) में राज्य कर रहे थे, उस समय लोधाकुल उत्पन्न महता जैतसिंह द्वारा छिभाडा ग्राम में तालाब बनाने का उल्लेख है। भा० सू० सं० ६३३। अन्य उल्लेख: आ० स० इ०, वार्षिक रिपोर्ट १६०३-४ भाग २, पृ० २८६। प्राप्तिस्थान अज्ञात है।

१६३—वि० १३५०—सुरवाया (शिवपुरी) पं० २३, लि० नागरी, भा० संस्कृत। नलपुर के गोपाल के धर्मपुत्र एवं गणपति के भृत्य राणा अधिगदेव द्वारा तालाब, बाग, आदि के निर्माण का उल्लेख है। भा० सू० सं० ६३६। अन्य उल्लेख : आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९०३-४ भाग २, पृ० २८६।

माथुर कायस्थ जयसिंह द्वारा विरचित एवं महाराज द्वारा उत्कीर्ण। यह महाराजसिंह वही है जिसने संख्या १५६ को लिखा था।

१६४—वि० १३५०—पहाड़ो (शिवपुरी) महादेव मन्दिर पर प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० संस्कृत। श्री गणपतिदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० १०२।

१६५—वि० १३५०—बामोर (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। यात्री का उल्लेख: ग्वा० पु० रि० संवत् १६७५ सं० १०१।

१६६—वि० १३५०—पचरई (शिवपुरी) जैन-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७१, सं० ३३।

१६७—वि० १३५० सुखाया (शिवपुरी) कुमार साहसमल तथा उसकी माता सलपणदेवी का उल्लेख। भा० सू० सं० ६३७। गाइड टू सुरवाया में पृ० २८ पर उल्लेख।

१६८—वि० १३५१—मामोन (गुना) स्मारक स्तम्भ। पं० ६, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १६८२, सं० १४।

१६९—वि० १३५१—धनैच (श्योपुर) स्तम्भ-लेख। पं० १४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। दो ब्राह्मणों को भूमिदान; महाराजकुमार श्री सुरहाई देव, महाराज श्री हमीरदेव और श्री विजयपाल देव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १६८८, सं० १७, शुक्रवार चैत्र सुदि १।

१७०—वि० १३५१—बुढेरा (शिवपुरी) स्तम्भ-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० हिन्दी। कीर्तिदुर्ग तथा 'समस्त-राजावली-समलंकृत-परम-भट्टारक' पद्मराज का उल्लेख है। बुरी तरह लिखा गया है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, सं० २३, शके १२१६ उदयसिंह तथा उसके पुत्र (हरि) राज के नाम भी पढ़े जाते हैं। चन्देरी और बुन्देला राजाओं का भी उल्लेख है।

१७१—वि० १३५२—भेसरवास (गुना) सती-प्रस्तर। पं० ८, लि० नागरी, भा० संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७६, सं० ७९।

सोमवार वैशाख वदि ११।

१७२—वि० १३५२—भेसरवास (गुना) सती-प्रस्तर। पं० ८, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। नलपुर के गणपतिदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० १८।

पौष सुदि १ बुधे।

१७३—वि० १३५३—गढेला (श्योपुर) स्मारक स्तम्भ। पं० १४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। किसी भट्टारक कुमारदेव तथा किसी दूसरे जैन का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७३, सं० ५६।

१७४—वि० १३५५—नरवरगढ़ (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० २१, लि० नागरी, भा० संस्कृत। पाल्हदेव कायस्थ द्वारा शंभु का चैत (मन्दिर)

तालाब, बाग आदि के निर्माण का उल्लेख तथा नलपुर के यज्वपाल गणपति से शासन-काल एवं उसके पूर्वजों का उल्लेख है। भा० सू० सं० ६ २; ग्वा० पु० रि० संवत् १६७१, सं० ८। अन्य उल्लेख : आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३१५; इ० ए० भाग २२, पृ० ८१ तथा वही भाग ४७, पृ० २४१।

कार्तिक वदि ५ गुरुवार।

नलपुर का चाहड़, उसका पुत्र नृवर्मन, उसका पुत्र आसल्लदेव हुआ। उसका पुत्र गोपाल हुआ। उसका पुत्र गणपति था, जिसने कीर्तिदुर्ग जीता।

गोपाद्रि के दामोदर के पुत्र लौहड के पुत्र शिव द्वारा रचित, अमरसिंह द्वारा लिखित तथा धनौक द्वारा उत्कीर्ण।

गोपाद्रि का नाम गोपाचल भी आया है।

१७५—वि० १३५६—बलारपुर (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत। नलपुर के गणपतिदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७६, सं० २२।

१७६—वि० १३५६—सुखवासा [रन्दो के पास] (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० ४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। पल्हण के पुत्र कल्हण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० १३।

१७७—वि० १३५७—बलारपुर शिवपुरी सती-प्रस्तर। पं० ९, लि० नागरी, भा० संस्कृत। नलपुर के गणपतिदेव तथा पलासई ग्राम में सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० २३।

१७८—वि० १३६०—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर में प्रस्तर-लेख। पं० ४, लिपि नागरी, भा० संस्कृत। हरिराजदेव का उल्लेख है। भा० सू० सं० ६५४। ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, सं० १०७। अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग २०, पृ० ८४।

यह हरिराजदेव कोई राजा है अथवा अन्य व्यक्ति, कहा नहीं जा सकता।

१७९—वि० १३६२—पचराई (शिवपुरी) झिलमिल बावड़ी के पास। सती प्रस्तर। पं० ५, लिपि नागरी, भा० संस्कृत। भग्न तथा अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० ३०।

१८०—वि० १३६६—उदयपुर (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० ९, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। परमार जयसिंहदेव (जयसिंह चतुर्थ) के राज्य का उल्लेख है। भा० सू० सं० ६६१; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ११६। अन्य उल्लेख : इ० ए० भाग २०, पृ० ८४।

१८१—वि० १३६६—कदवाहा (गुना) भूतेश्वर मन्दिर में प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० संस्कृत। बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के राज्यकाल में एक भूतेश्वर नामक साधु द्वारा शिवलिंग की जलहरी के नव-निर्माण एवं म्लेच्छों से पृथ्वी आक्रांत होने पर घोर तपस्या करने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९९७, सं० ४।

माघ सुदि ११ बृहस्पतिवार।

१८२—वि० १३६ [६]—अकेता (गुना) सती-प्रस्तर। पं० ७, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। अकित ग्राम में एक सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९८६, सं० ७।

१८३—वि० १३७४—पचरई (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० ७, लि० नागरी, भा० हिन्दी। एक सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० ३१।

कार्तिक वदि १ ।

१८४—वि० १३७५—सकर्रा (गुना) सती-स्तम्भ। लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ९२।

१८५—वि० १३७५—सकर्रा (गुना) सती-प्रस्तर। पं० ७ लि० नागरी भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, सं० ८६। चैत्र सुदी १ गुरुवार।

१८६—वि० १३७७—सकर्रा (गुना) सती-प्रस्तर। पं० १६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ८५। माघ वदि ११।

१८७—वि०१३७ [?]—पचरई (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० १०, लि० नागरी, भा० हिन्दी। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० ३५।

१८८—वि० १३८०—उदयपुर (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत। एक यात्री का उल्लेख। भा० सू० सं० ६७८; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ११५ पाठ सहित। ए० इ० भाग ५ की कीलहार्न की सूची सं० २५७। इ० ए० भाग १९, पृ० २८ सं० २८।

१८९—वि० १३८१—कदवाहा (गुना) मन्दिर नं ३ में प्रस्तर-लेख। पं० ५ लि० नागरी, भा० हिन्दी। माधव, केशव आदि कुछ नाम अंकित हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ६२। आषाढ़ सुदि ३।

१९०—वि० १३८०— मितावली (मुरैना) मन्दिर पर भित्ति लेख। पं० २१, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। महाराज देवपालदेव के उल्लेख युक्त मन्दिर-निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९८, सं० १५। ज्येष्ठ सुदि १०।

१९१—वि०[१३८३] पचरई (शिवपुरी) सती-स्तम्भ। पं ७, लिपि नागरी, भा० हिन्दी। एक सती-विवरण। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० ३२।

१९२—वि० १३८४—मक्तर (गुना) सती-स्तम्भ। लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५; सं० ११२।

१९३—वि० १३८४—कदवाहा (गुना) हिन्दू मठ में प्राप्त प्रस्तर-लेख। पं० ६, लिपि नागरी, भा० प्राकृत। आशय स्पष्ट नहीं है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९६, सं० ३ पाठ सहित। शनिवार माघ सुदि १०।

१९४—वि० १३८७—देवकनी (गुना) सती-स्तम्भ। पं० १०, लि० नागरी, भा० संस्कृत। मुहम्मद तुगलक के राज्य-काल में गो-ग्रहण। (गाय के चुराने) के कारण लड़ाई में मारे गये सहजनदेव की दो पत्नियों के सहगमन (सती होने) का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, सं० १२। फाल्गुण कृष्ण १४।

१९५—वि० १३८८—मायापुर (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० ८, लि० नागरी, भाषा संकृत। योगिनी पुराधिपति (दिल्ली) श्री सुलतान पातशाही मुहम्मद (तुगलक) का तथा छत्ताल ग्राम में सती होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि सं० १९७६ सं० १४। पौष वदि १।

१९६—वि० १३९०—धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। पं ५, लिपि नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ७०। चैत्र वदि १५ बृहस्पतिवार।

१९७—वि १३९०—धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। पं० ३, लि० नागरी भा० संस्कृत, चन्द्रदेव और श्री विजय का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ८८। चैत्र सुदी १५।

१९८--वि० १३९०--धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। पं० ३, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ८७। चैत्र सुदि १५ गुरुवार।

१९९--वि० १३९०--धनैच (श्योपुर) जैनमूर्ति-लेख। पं० २, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ८५। चैत्र सुदि १५।

२००--वि० १३९०--धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। पं० २, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० ८६। चैत्र सुदि १५।

२०१--वि० १३९०--धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। पं० २, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं ८४। चैत्र सुदि १५।

२०२--वि० १३९०--धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। पं० २, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ७९। चैत्र सुदि १५।

२०३--वि० १३९०--धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। पं० २ लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु०रि० सं०१९७३ सं० ७९। चैत्र सुदि १५।

२०४--वि० १३९०--धनैच (श्योपुर) जैनमूर्ति-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। कीर्तिदेव का नाम पढ़ा जाता है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं ७७। चैत्र सुदि १५ बृहस्पतिवार।

२०५--वि १३९०--धनैच (श्योपुर) जैन मूर्तिलेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ७५। चैत्र सुदि १५ बृहस्पतिवार।

२०६--वि० १३९०--धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। पं० ४, लि० नागरी भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ७४। चैत्र सुदि १५ बृहस्पतिवार।

२०७--वि० १३९०--धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। पं ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं ६३।

२०८—वि० १३६०—धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० १९७३, सं० ७१।

२०९—वि० १३६०—धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। पं० ३, लिपि नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ७२।

२१०—वि० १३६०—धनैच (श्योपुर) जैन मूर्ति-लेख। सं० २, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं ०७६।

२११—वि० १३६०—विलाव (शिवपुरी) सती-स्तम्भ। पं० ५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु०रि० संवत्१९७१, सं०२३। शाके १२०५।

२१२—वि० १३६२—भिलाया (भेलसा) सती-प्रस्तर। पं० ४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। महाराजाधिराज महमूद सुलतान तुगलक के राज्य काल में सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० २। माघ सुदी १३ मंगलवार।

२१३—वि० १३६३—भिलाया (भेलसा) सती प्रस्तर-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। राजा श्री महमूद सुलतान तुगलक का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० १।

२१४—वि० १३६४—उदयपुर (भेलसा) के दो अभिलेख श्री उदलेश्वर देवता की यात्रा का उल्लेख है। भा० सू० सं० ६९८। अन्य उल्लेख: इ० ए भाग १९, पृ० ३५५, सं० १५४। ए० इ० भाग ५ की कीलहार्न की सूची सं० २६४।

२१५—वि० १३६५—पीपला (उज्जैन) स्तम्भ-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ५४। स्थान का नाम पिपलू दिया है।

२१६—वि० १३९७—सकर्रा (गुना) सती-स्तम्भ। लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ९१।

२१७—वि० १४००—सकर्रा (गुना) सती-स्तम्भ। लिपि नागरी, भा० हिन्दी। मुहम्मद तुगलक तथा एक ब्राह्मण जमींदार की सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ९३।

२१८—वि० १४ [०२]—तिलोरी (गिर्द) सती-प्रस्तर। पं० ७, लि० नागरी, भा० संस्कृत। मिश्रित हिन्दी। श्री गणपतिदेव और तिलोरी ग्राम का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ७।

२१६—वि० १४०३—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर पर स्तम्भ-लेख। पं० १, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० १३५। ज्येष्ठ सुदी १४।

२२०—वि० १४०३—कदवाहा (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ४, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। रन्नोद तथा कदवाहा परगने के गुमाश्ता का नाम अङ्कित है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ६३। फाल्गुन वदि ५।

२२१—वि० १४०३—सकर्रा (गुना) सती प्रस्तर। पं० ८, लिपि नागरी, भा० संस्कृत। सुलतान महमूद के शासन का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं ८८। माघ सुदी ११।

२२२—वि० १४ [१] ६—तिलोरी (गिर्द) सती प्रस्तर। लिपि नागरी, भा० संस्कृत। मिश्रित हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत १९७५, सं० ६।

२२३—वि० १४३४ उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर में प्रस्तर लेख। पं० ४, लिपि नागरी, भा० संस्कृत। यात्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, सं० १२४। चैत्र सुदि ७ बुधवार।

२२४—वि० १४ [३]५—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर में प्रस्तर लेख। पं० २, लिपि नागरी, भाषा विकृत संस्कृत। यात्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० १३०। फाल्गुन सुदि ६।

२२५—वि० १४३७—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर में प्रस्तर लेख। पं० ९, लिपि नागरी, भा० विकृत संस्कृत। यात्री का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० १२७।

२२६—वि० १४४३—महुवन (गुना) सती स्तम्भ। पं० ७, लिपि नागरी, भा० संस्कृत। नष्ट प्राय। ग्वा० पु० रि० संवत १९८२, सं० १०।

२२७—वि० १४४[५]—गुडार (नयागांव) (शिवपुरी) स्तम्भ लेख। पं० १३, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। मुहम्मद गजनी के शासन का उल्लेख है। यह मुहम्मद तुगलक प्रतीत होता है। चन्देरी के गहवरखां (दिलावर) का भी उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० २९।

२२८—वि० १४४६—बरई (गिर्द) जैनमूर्ति लेख। पं० १, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० १।

२२६—वि० १४५०— उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर पर प्रस्तर लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। यात्री का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० १३३। चैत्र वदि १।

२३०—वि० १४५०—कदवाहा (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। पण्डित रामदास देव द्वारा एक गौतम गोत्र के भागौर ब्राह्मण को दान देने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं ६६। वैशाख सुदी ६ गुरुवार।

२३१—वि० १४५१—कदवाहा (गुना) सती प्रस्तर। पं १२, लि० नागरी, भाषा सस्कृत मिश्रित हिन्दी। सुलतान महमूद गजणी (जो सम्भवतः तुगलक के लिये भ्रम से लिखा गया है) के शासन काल में एक चमार सती का उल्लेख है तथा श्री वियोगिनीपुर (दिल्ली) का भी उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ११६।

२३२—वि० १४५१—कदवाहा (गुना) जैन मन्दिर में प्रस्तर लेख। पं० ११, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। नरवर के प्रसिद्ध यज्वपाल चाहड़ के वंश का वर्णन है, तथा मलछन्द्र और साहसमल दो व्यक्तियों का उल्लेख है। किसी कुमारपाल का भी, जिसने बावडी बनवाई है, उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१ सं०६। शुक्रवार मार्गशीर्ष सुदि ११।

२३३—वि० १४५४—बडोखर (मुरैना) प्रस्तर लेख। पं० ४,लि० नागरी भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ५१। ज्येष्ठ वदि।

२३४—वि० १४६[—] कदवाहा (गुना) सती प्रस्तर। पं० ८, लि० नागरी, भा० हिन्दी। दिलावर खां के राज्य में एक अहीर सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ११५।

२३५—वि० १४६ [—] कदवाहा (गुना) में सती प्रस्तर। पं० ७, लिपि नागरी, भा० हिन्दी। दिलावर खाँ के राज्य में रावत कुशल की पत्नी के सती होने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं०५८।

२३६—वि० १४६२—मोहना (गिर्द) सती स्तम्भ, लि० नागरी, भा० संस्कृत। विकृत एवं अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, सं० ११।

२३७—वि० १४[६]५—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर में स्तम्भ लेख। पं० ६, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। यात्री का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० १३२।

२३८—वि० १४६६—कदवाहा (गुना) गढ़ी में प्रस्तर लेख। पं० २,लि० नागरी, भा० हिन्दी। रतनसिंह के पुत्र थिरपाल के नाम का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ५६।

२३९—वि०१४६६—कदवाहा (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ८, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। यात्रियों का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० २५। इस अभिलेख में दूसरी तिथि वि० सं० १४७५ भी दी गई है।

२४०- वि० १४६७—ग्वालियर (गिर्द) महाराज वीरंग (या वीरम) देव का उल्लेख है। भा० सू० सं० ७४५। अन्य उल्लेख ज० ए० सो० बं० भाग ३१, पृ० ४२२ तथा चित्र। माघ सुदी ५ सोमवार।

२४१—वि० १४६८— कदवाहा (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ९+२+४+२, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। यात्रियों के तीन उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० २७। इस अभिलेख में दो तिथियां सं० १४७३ तथा १५०४ भी दी गई हैं।

२४२—वि० १४६८—कदवाहा (गुना) मंदिर नं० ३ में प्रस्तर लेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४ सं० ७०।

२४३—वि० १४७५—उज्जैन (उज्जैन) भर्तृहरि गुफा में प्रस्तर लेख। पं० ३, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा०पु०रि० संवत् १९८३ सं०१३।

२४४—वि० १४७५—जखोदा (गिर्द) सती स्तम्भ। पं० ३, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० १६।

२४५—वि० १४७५ कदवाहा (गुना) गढ़ी में प्रस्तर-लेख। पं० २, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। धनराज तथा उसके पुत्र रतन का नाम अङ्कित है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ५५।

२४६—वि० १४७६—गुडार (शिवपुरी) सती प्रस्तर। पं० ११, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। कादरी खां के शासन काल में चन्देरी जिले के गुडार ग्राम में हुई एक सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६ सं० २७। माघ सुदी १३ रविवार।

२४७—वि० १४७६— कदवाहा (गुना) सती प्रस्तर। पं० ७, लिपि नागरी,

भाषा हिन्दी। भग्न तथा अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ५९।

२४८—वि० १४८५—नडेरी (गुना) सती प्रस्तर। पं० ७, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। गूलर ग्राम में शाह अलीम (दिल्ली के सैयद) के राज्यकाल में एक लुहार सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० २४। बृहस्पति ज्येष्ठ वदि १४।
शके १३५० का भी उल्लेख है।

२४९—वि० १४८५—गुडार (शिवपुरी) सती स्तम्भ। पं० १०, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। मांडू के हुशङ्गशाह और चन्देरी देश का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० २५।

२५०—वि० १४८७—कदवाहा (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ६+४+१+१ लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। यात्रियों का उल्लेख है। हरिहर के पुत्र गङ्गादास का नाम है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० २६। ज्येष्ठ सुदि ७।

सं० १४७४ वि० का भी उल्लेख है।

२५१—वि० १४८७— कदवाहा (गुना) गढ़ी में प्रस्तर लेख। पं० १०, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। हरिहर, गङ्गादास आदि का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ५१। ज्येष्ठ वदि ७ गुरुवार।

हरिहर, गङ्गादास आदि।

२५२—वि० १४८८—ग्वालियर दुर्ग (गिर्द) तिकोनिया तालाब पर भित्तिलेख। पं० २, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। अपठनीय। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ८।

२५३—वि० १४९५—भदेरा, पोहरी जागीर (शिवपुरी) सती प्रस्तर। पं० ६, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ४६। शके १३६० का भी उल्लेख है।

२५४—वि० १४९७—रदेव (श्योपुर) सती स्तम्भ। पं० १०, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ३८। चैत्र सुदि १० रविवार।

२५५—वि० १४९७—ग्वालियर दुर्ग (गिर्द) जैनमूर्ति लेख। महाराजाधिराज राजा श्री डूगरेंद्रदेव (तोमर) के राज्य काल में गोपाचल दुर्ग के

उल्लेख युक्त। भा० सू० सं० ७८५, भाग ३१, पृ० ४२२, पूर्णचन्द्र नाहर, जैन अभिलेख सं० १४२७। वैशाख सुदि ७ शुक्रवार।

२५६—वि० १४९७—ग्वालियर दुर्ग (गिर्द) जैनमूर्ति लेख। पं० १४, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। आदिनाथ की मूर्ति निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४ सं० १९। वैशाख सुदि ७।

२५७—वि० १४९७—ग्वालियर दुर्ग (गिर्द) उरवाही द्वार की ओर की जैन मूर्ति पर लेख। पं० २३, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। देवसेन, यशःकीर्ति, जयकीर्ति आदि जैन आचार्यों के नाम के उल्लेख सहित। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० १८। वैशाख सुदी १।

२५८—वि० १४९९—कदवाहा (गुना) गढ़ी में प्रस्तर लेख। पं० ६, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। केवल अर्जुन नाम वाच्य है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ४८।

२५९—वि० १४९९—कदवाहा (गुना) गढ़ी में प्रस्तर लेख। पं० २, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। सोनपाल, उसके पुत्र जैराज तथा अर्जुन के नाम वाच्य हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ५०।

२६०—वि० १४९९—कदवाहा (गुना) हिन्दू मठ पर प्रस्तर लेख। पं० ३+२, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० २३।

२६१—वि० १५१०—सकर्रा (गुना) सती स्तम्भ। पं० १०, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। मालवे के सुलतान (महमूद) खिलजी का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ८९।

२६२—वि० १५०२—विजरी (शिवपुरी) प्रस्तर लेख। पं० ९, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी संस्कृत मिश्रित। किसी परलोक वासी का स्मृति-चिन्ह। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ९५।

२६३—वि० १५०३—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर में प्रस्तर लेख। पं० ६, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। यात्री उल्लेख। भा० सू० सं० ७९३, ग्वा० पु० रि० ७४, सं० १२५। अन्य उल्लेख ए० इ० भाग ५ की कीलहार्न की सूची २९३। फाल्गुन वदि १० शुक्रवार।

२६४—वि० १५०४—कदवाहा (गुना) गढ़ी में प्रस्तर लेख। पं० ८, लि०

नागरी, भाषा हिन्दी। सुलतान महमूद खिलजी के शासन काल का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ५२। गुरुवार वैशाख सुदी १।

२६५—वि० १५०४—कदवाहा (गुना) गढ़ी में प्रस्तर लेख। पं० १४, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। सुलतान महमूद खिलजी के शासन तथा संवत् १४७३ का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ५३। गुरुवार वैशाख सुदी १।

२६६—वि० १५०४—कदवाहा (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ३, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। रतनसिंह देव तथा एक संवत् का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० १४। वैशाख सुदी ११।

२६७—वि० १५०४—कदवाहा (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ७, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। दो यात्रियों का उल्लेख। वि० सं० १४७९ का भी उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० २४। बृहस्पतिवार वैशाख सुदि ११ तथा माघ वदि ८ बुधवार।

२६८—वि० १५०४—कदवाहा (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ७, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ५७। गुरुवार वैशाख सुदी ११।

२६९—वि० १५०४—कदवाहा (गुना) गढ़ी में प्रस्तर लेख। पं० ३०, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत, १९८४, सं० ४६। बुधवार वैशाख सुदी ११।

२७०—वि० १५०४—कदवाहा (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ३, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत १९९६, सं० २१।

२७१—वि० १५०५—मन्दसौर, (मन्दसौर) प्रस्तर लेख। पं० ११, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, सं० ११।

२७२—वि० १५०५—मन्दसौर (मन्दसौर) प्रस्तर लेख। पं० ८, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। हिन्दू तथा मुसलमान दोनों के लिये एक शपथ का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० १०।

२७३—वि० १५०५—बदरेठा (मुरैना) प्रस्तर लेख। पं० १, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० १३।

२७४—वि० १५०७—हासिलपुर (श्योपुर) सती स्तम्भ। पं० ४, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० १०३। फाल्गुन वदि १०।

२७५—वि० १५(—) टकनेरी (गुना) स्तम्भ लेख। पं० ६, लि० नागरी, भाषा स्थानीय हिन्दी, संस्कृत मिश्रित। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ५९।

२७६—वि० १५१०— ग्वालियर गढ (गिर्द) जैन प्रतिमा पर लेख। पं० ११, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। डूंगरसिंह के राज्यकाल में भक्तों द्वारा मूर्ति की प्रतिष्ठा का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ३२। सोमवार माघ सुदि ८।

२७७—वि० १५१०—ग्वालियर दुर्ग (गिर्द) जैनप्रतिमा लेख। पं० १५, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। गोपाचल पर डूंगरेन्द्रदेव के शासन काल में कर्मसिंह द्वारा चन्द्रप्रभु की मूर्ति की प्रतिष्ठा का विवरण। कुछ भट्टारकों के नाम। भा० सू० सं० ८१४, ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० २१। अन्य उल्लेख ए० इ० भाग ५ की कीलहार्न की सूची संख्या २९४, ज० ए० सो० बं० भाग ३१, पृ० ४२३, पूर्णचन्द्र नाहर, जैन अभिलेख भाग २, संख्या १४२८। सोमवार माघ सुदी ८।

२७८—वि० १५१०—उज्जैन (उज्जैन) स्तम्भ लेख। पं० १०, लि० नागरी, भा० हिन्दी। मालवा के सुलतान महमूद का उल्लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० सं० १९९२ सं० ५५।

२७९—वि० १५१०—उज्जैन (उज्जैन) प्रस्तर लेख पं० १०, लि० नागरी भा० हिन्दी। अभिशाप सम्बन्धी लेख, जैसा कि उस पर बनी हुई गर्दभाकृति से स्पष्ट है। ग्वा० पु० रि सं० १९९१ सं० २८।

इसमें शके १३७४ का भी उल्लेख है।

२८०—वि० १५१४-—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) जैन प्रतिमा, पं० ८। लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। डूंगरसिंह के शासन काल में कुछ भक्तों द्वारा गुहा-मन्दिर बनवाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० सं० १९८४, सं० २५। वैशाख सुदि १० बुध।

२८१—वि० १५१६— ग्वालियर गढ़ (गिर्द) टकसाली दरवाजे के पास। पं० २, लि० नागरी, भा० हिन्दी। डूंगरसिंह का नामोल्लेख। ग्वा० पु० रि० सं० १९८४ सं० १।

२८२—वि० १५१६—भक्तर (गुना) सती स्तम्भ। पं० १२, लि० नागरी, भा० हिन्दी। सुल्तान महमूद के शासनकाल में एक सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० सं० १९७५ सं० १०९।

२८३—वि० १५२१— पिपरसेवा (मुरैना) स्तम्भ लेख पं० १०, लि० नागरी, भा० अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि सं० १९७२ सं० ४३।

२८४—वि० १५२१— सतनवाडा (गिर्द) सती प्रस्तर लेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। सती, उसके पति तथा सतनवाडे का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० सं० १९८० सं० १५। ज्येष्ठ सुदी १५ सोमवासरे।

२८५—वि० १५२१—चन्देरी (गुना) सती स्तम्भ लेख। पं० १५,लि० नागरी, भा० संस्कृत (हिन्दी मिश्रित विकृत) सुलतान महमूद के राज्य में एक सुनार सती होने का विवरण। ग्वा० पु० रि० सं० १९७४ सं० १।

२८६—वि० १५२१— तिलोरी (गिर्द) स्तम्भ लेख। पं० ५, लि० नागरी भा० अशुद्ध संस्कृत एवं हिन्दी। महाराजाधिराज कीर्तिपाल देव तथा तिलोरी का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० सं० १९७५ सं० १२।

२८७—वि० १५२२— ग्वालियर गढ़ (गिर्द) तेली के मन्दिर में प्रस्तर लेख। पं० ३, लि० नागरी भा० हिन्दी। केवल तिथि अंकित है। ग्वा० पु०रि० सं० १९८४, सं० १५। बुधवार भादो वदि ८।

२८८—वि० १५२२—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) उरवाही द्वार की ओर जैन प्रतिमा। पं० १२, लि० नागरी, भा० संस्कृत। कीर्तिसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सं० १९८४ सं० २३। सोमवार माघ सुदी १२।

२८९—वि० १५२२—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) प्रस्तर लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। भग्न। ग्वा० पु० रि० सं० १९८४ सं० १६।

२९०—वि १५२४—मदनखेडी (गुना) सती प्रस्तर लेख। पं० ९, लि० नागरी, भा० संस्कृत। जिला चन्देरी परगना मुंगावली में मदनखेडी स्थान पर सती होने का उल्लेख। मांडू के महमूद खिलजी तथा चन्देरी के शेर खाँ का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० सं० १९७५ सं० ७४।

२९१—वि० १५२५—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) मरी माता की ओर जैन प्रतिमा। पं० ९, लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत) कीर्तिसिंहदेव के शासनकाल में

२९२—वि० १५२५—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) मरीमाता की ओर जैन-प्रतिमा। पं० ९, लि० नागरी भा० संस्कृत (विकृत)। कीर्तिसिंहदेव के शासनकाल में शान्तिनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० २८। बुधवार चैत्र सुदी ७।

२९३—वि० १५२५—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) मरीमाता की ओर जैन-प्रतिमा। पं० १९, लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। कीर्तिसिंह के राज्य में संघाधिपति हेमराज द्वारा युगादिनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा तथा अनेक जैन आचार्यों का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० २६। बुधवार चैत्र सुदी ७।

२९४—वि० १५२५ ग्वालियर गढ़ (गिर्द) जैन-प्रतिमा। पं० ६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। कीर्तिसिंह के राज्यकाल में पार्श्वनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ३४।

२९५—वि० १५२५—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) मरीमाता की ओर जैन-प्रतिमा। पं० १५, लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। कीर्तिसिंहदेव के शासन में एक जैन-प्रतिमा की स्थापना तथा कुछ जैन आचार्यों का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ३०। चैत्र सुदी १५।

२९६—वि० १५५२ – ग्वालियर गढ़ (गिर्द) मरीमाता की ओर जैन-प्रतिमा। पं० ४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। गोपाचल दुर्ग के डूंगरेन्द्रदेव तोमर के पुत्र कीर्तिसिंह के शासन का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ३२। गुरुवार चैत्र सुदी १५।

२९७—वि० १५२५—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) जैन प्रतिमा। पं० १२, लि० नागरी, भा० संस्कृत। कीर्तिसिंहदेव तथा उसके अधिकारी गुणभद्रदेव का उल्लेख। ग्वा० पु०रि० संवत् १९८४, सं० ३३। गुरुवार चैत्र सुदि १५।

२९८—वि०—१५२५—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) कोटेश्वर की ओर जैन-प्रतिमा। पं ५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। कीर्तिसिंहदेव के शासन में कुशलराज की पत्नी द्वारा पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित करने का उल्लेख। ग्वा० पु०रि० संवत् १९८४, सं० ३६। गुरुवार चैत्र सुदी १५।

२९९—वि० १५२५—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) मरीमाता की ओर पार्श्वनाथ-प्रतिमा पर। पं० १४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अवाच्य। ग्वा पु० रि० संवत १९८४, सं० ३८। गुरुवार, चैत्र सुदी १५।

३०० –वि० १५२५—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) जैन-प्रतिमा। पं ७, लि० नागरी, भा० अशुद्ध संस्कृत। ग्वा पु० रि संवत् १६८४, सं० ३५।

३०१—वि० १५२५–ग्वालियर गढ़ (गिर्द) पं० ५, लि० नागरी भा० संस्कृत। विकृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० २७।

३ २—वि० १५२५–ग्वालियर गढ़ (गिर्द) पार्श्वनाथ-प्रतिमा। पं० ९, लि० ागरी, भा० हिन्दी । ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, सं० ३७।

३०३–वि० १५२५—सिहपुर (गुना) बावड़ी में प्रस्तर-लेख। पं० ३६, लि० नागरी, भा० संस्कृत और प्राकृत। मांडू के सुलतान गयासुद्दीन के राज्यकाल में एक कुए के निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १६८१, सं० ३३। बृहस्पतिवार माघ सुदी ५।

३ ४—वि १५२६ माहोली (गुना) सती-स्तम्भ। पं० १, लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० ४०।

३०५–वि० १५२७—तिलोरी (गीर्द) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० अशुद्ध संस्कृत एवं हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७५, सं० ८।

३०६—वि० १५२७—तिलोरी (गिर्द) मन्दिर में स्तम्भ-लेख। पं १, लि० नागरी, भा० अशुद्ध संस्कृत एवं हिन्दी। यात्री-उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ११।

३०७—वि० १५२७—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) कोटेश्वर की ओर प्रतिमा, लेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। डूंगरसिंह का नामोल्लेख तथा जैन मूर्ति की प्रतिष्ठा का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ५०।

३०८—वि० १५२७—नडेरी (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० २६, लि० नागरी, भा० संस्कृत (अशुद्ध) महमूदशाह खिलजी के शासनकाल में हरिसिंहदेव के पुत्र भोवदेव द्वारा कुआ खुदवाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ४६।

३०९—वि १५२७—कदवाहा (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० २, लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत१९६६, सं० २।

३१०—वि० १५२८—पढ़ावली (मुरैना) प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० नागरी,

भा० हिन्दी । कीर्तिसिंहदेव का उल्लेख है। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७२, सं० ३०। वैशाख सुदी ५ बृहस्पतिवार।

३११—वि० १५२९—बरई (गिर्द) जैन-प्रतिमा। कीर्तिसिंहदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० २।

३१२—वि० १५२९—पनिहार (गिर्द) जैन-प्रतिमा। पं० ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। कीर्तिसिंहदेव तथा अनेक जैन साधुओं का नामोल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९७, सं० १। वैशाख सुदी ६।

३१३—वि० १५३१—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) जैन-प्रतिमा। पं० ५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। कीर्तिसिंह के शासनकाल में चम्पा (स्त्री) द्वारा मूर्ति प्रतिष्ठा का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ४१।

३१४—वि० १५३१—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) जैन-प्रतिमा। पं० ८, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अभिलेख संख्या ३१३ का ही दूसरा भाग है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ४२।

३१५—वि० १५३२—बघेर (श्योपुर) भित्ति-लेख। पं० ९, लि० नागरी, भा० हिन्दी। महाराजाधिराज कीर्तिसिंह का उल्लेख है, हरिचन्द्र का बघेर के प्रधान के रूप में और कुछ साधुओं के नामों का उल्लेख है। ग्वा०पु०रि० संवत् १९८८, संख्या १२। बुधवार श्रावण सुदी ५। इसमें शके १३९८ का भी उल्लेख है।

३१६—वि० १५३४—मदनखेड़ी (गुना) सती-प्रस्तर-लेख। पं ११, लि९ नागरी भा० हिन्दी। मांडू के गयासुद्दीन के राज्यकाल में एक सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५ सं०, ७३।

३१७—वि० १५३५—भदेरा (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० ७, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ४५।

३१८—वि० १५३९—नरवरगढ़ (शिवपुरी) भित्ति-लेख। पं० ६, लि० नागरी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० ३९। मंगलवार, ज्येष्ठ बदी ९।

३१९—वि० १५३६—बारा (शिवपुरी) सती-स्तम्भ-लेख। पं० ६, लि०, नागरी, भा० अशुद्ध संस्कृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० ३६। ज्येष्ठ बदी १५।

३२०—वि० १५४०—भौंरासा (भेलसा) स्तम्भ-लेख। पं० २८, लि० नस्ख एवं नागरी, भा० अरबी, फारसी एवं हिन्दी। चन्देरी प्रान्त के शेरखां व मांडू के सुलतान गयासशाह के समय में एक दान तथा शपथ का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९८, सं० ४। बुधवार फागुन वदी ५। इसमें हिजरी सन् ८८८ का उल्लेख है।

इस अभिलेख में दान में हस्तक्षेप न करने की हिन्दुओं को गौ की तथा मुसलमानों को सुअर की शपथ है।

३२१—वि० १५४०—कदवाहा (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० ८, लि० नागरी, भा० हिन्दी। तीन यात्रियों का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० ६।

यात्रियों की तिथि क्रमशः वि० १५४०, १५५१ एवं १५५२ है।

३२२—वि० १५४१—उज्जैन [सिद्धवट] (उज्जैन) प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० प्राचीन नागरी, भा० हिन्दी। सूर्य तथा चन्द्र अंकित हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, सं० १९।

३२३—वि० १५४२—टिकटोली दुमदार (मुरैना) जैन-प्रतिमा। पं० ५, लि० नागरी, भा० संस्कृत मूर्ति-स्थापना का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ८। आषाढ़ सुदी २।

३२४—वि० १५४२—चन्देरी (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० १८, लि० प्राचीन नागरी, भा० हिन्दी। सती का, मालवा के गयासशाह तथा चन्देरी देश का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, सं० २।

३२५—वि० १५४—[३] बड़ोखर (मुरैना) प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ४८। सावन सुदी ३।

३२६—वि० १५४५—बूढ़ी चन्देरी (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० १५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। नसीराबाद (बूढ़ी चन्देरी का नाम) में मांडू के राजाधिराज गयासुद्दीन के राज्यमें एक सतीके पुत्र द्वारा उसके स्मारक के बनवाये जाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९८१, सं० ३। ज्येष्ठ ५।

३२७—वि० १५४५—उदयपुर (भेलसा) भित्ति-लेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। मांडू के गयासशाही, मालवा, उदयपुर, चन्देरी के शेरखाँ

तथा मसजिद बनने और कारीगरों के नाम का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० २४। कार्तिक सुदी २ सोमवार।

चन्देरी के शेरखाँ के सूबे में होने का उल्लेख।

३२८—वि० १५४५—उदयपुर (भेलसा) मोती-द्वार के पास मसजिद पर भित्ति-लेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। जब सुलतान गयासशाही (गयासुद्दीन) मण्डपगढ़ पर राज्य कर रहा था तथा जब शेरखाँ चन्देरी का मुख्तार तथा मालिक अब्दुस्सरा उदयपुर का गुमाश्ता था, तब उदयपुर में मसजिद बनने का उल्लेख है। कुछ सूत्रधारियों (कारीगरों) का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६,सं० ४। कार्तिक सुदी ५ सोमवार।

३२९—वि० १५४५—बूढ़ी राई (शिवपुरी) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० हिन्दी (स्थानीय)। सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ८०।

३३०—वि० १५४५—तिलोरी (गिर्द) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत विकृत तथा हिन्दी। तिथि-उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ९।

३३१—वि० १५४७—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) सासबहू के मन्दिर के सामने स्तम्भ-लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ११। फाल्गुन बदी २।

३३२—वि० १५४७—चन्देरी (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० १७, लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। चिमनखाँ द्वारा प्रवेश द्वार एवं नाम लगवाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० ३८।

३३३—वि० १५४७—उज्जैन (उज्जैन) प्रस्तर-लेख। पं० १५, लि० नागरी, भा० हिन्दी (स्थानीय) ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० १३।

३३४—वि० १५४७—उज्जैन (उण्डासा-उज्जैन) प्रस्तर-लेख। पं० १५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। मालवा के महमूद सुलतान का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ५८।

३३५—वि० १५४८—बड़ोखर (मुरैना) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। सती-दाह का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ४७।

३३६—वि० १५५०— दवाहा (गुना) प्रस्तर-लेख, पं० ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० ७।

३३७—वि० १५५१—ग्यारसपुर (भेलसा) स्तम्भ-लेख। पं० २, लि० नागरी भा० संस्कृत (विकृत)। ब्रह्मचारी धर्मदास का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७५, सं० ९३। कार्तिक सुदी १५ शनिवार।

३३८—वि० १५५१— याना (गुना) कूप-लेख पं० १८, लि० नागरी, भा० अशुद्ध संस्कृत। कुए के निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ५२।

३३९—वि० १५५१—मियाना (गुना) कूप-लेख। पं० १९, लि० नागरी भा० संस्कृत (विकृत) लक्ष्मण द्वारा कुए एवं बाग-निर्माण का उल्लेख। चन्देरी के सूबा आजम शेरखाँ का भी उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ५१।

३४०—वि० १५५१—मियाना (गुना) कूप-लेख। पं० १९, लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। एक ढुंगी राजपूत सरदार लक्ष्मण दुर्गपाल द्वारा कूप-निर्माण का उल्लेख है। मियाना को मायापुर कहा गया है। लक्ष्मण को दुर्जनसाल का पुत्र लिखा है। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७५, सं० ५०।

३४१—वि० १५५२—ग्वालियर दुर्ग (गिर्द) जैन-अभिलेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० विकृत संस्कृत। गोपाचल के महाराज मल्लसिंहदेव के राज्य का अभिलेख है। भा० सू० संख्या ८६५। अन्य उल्लेख पूर्णचन्द्र नाहर जैन-अभिलेख भाग २, सं० १४२९। ज्येष्ठ सुदी ९ सोमवार।

३४२—वि० १५५२—रायरु (गिर्द) सती-स्तम्भ-लेख। लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० १।

३४३— वि० १५५३—किती (भिण्ड) प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० १। कार्तिक सुदी १५।

३४४—वि० १५५४—सकर्रा (गुना) सती-स्तम्भ-लेख। पं० ९, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ७५। कार्तिक सुदी १५।

३४५—वि० १५५५—रखेतरा (गुना) जैन-प्रतिमा। पं० ५, लि० नागरी,

भा० संस्कृत। सुलतान गयासुद्दीन के राज्यकाल में पदचिह्न बनवाने का उल्लेख। ग्वा०।पु० रि० संवत् १९८१, सं० २८। शुक्रवार फाल्गुन सुदी २।

३४६—वि०१५५५—मन्दसौर (मन्दसौर) प्रस्तर-लेख। पं० ९, लि० नागरी, भा० हिन्दी। मुकाबलखाँ तथा एक शपथ का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ९।

३४७—वि०१५५५—मन्दसौर गढ़ (मन्दसौर) भित्तिलेख। पं० ८, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, सं० १२।

३४८—वि० १५५५—मन्दसौर गढ़ (मन्दसौर) भित्ति-लेख। पं० ९, लि० नागरी, भा० हिन्दी। मुकाबलखां का उल्लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, सं० २०।

३४९ वि० १५५७—मन्दसौर गढ़ (मन्दसौर) भित्ति-लेख। पं० ८, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। ठाकुर रामदास का नामोल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, स० १०।

३५०—वि० १५५७—मन्दसौर गढ़ (मन्दसौर) प्रस्तर-लेख। पं ८, लि० नागरी, भा० हिन्दी। ठाकुर रामदास का नामोल्लेख तथा एक शपथ। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ८। फाल्गुन सुदी १३।

३५१—वि० १५६०—पढ़ावली (मुरैना) स्तम्भ-लेख। पं ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। किसी नारायण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९०२, सं० ३५। जेष्ठ सुदी ९, शनिवार।

३५२—वि० १५६०—मिताउली (मुरैना) मूर्तिलेख। पं १, लि० नागरी, भा० हिन्दी। केवल एक शब्द और संवत्। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९८, सं० १२।

३५३—वि० १५६१—मियाना (गुना) सती-प्रस्तर-लेख। पं० १०, लि० नागरी, भा० संस्कृत मिश्रित स्थानीय हिन्दी। सुलतान नसीरशाह के शासन तथा चौधरी वंश की सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ५७।

३५४—वि० १५६२—कदवाहा (गुना) मन्दिर नं० ३ में प्रस्तर-लेख। पं० ४० लि० नागरी, भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ६०।

३५५—वि०—१५६३—मियाना (गुना) सती - प्रस्तर - लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत मिश्रित स्थानीय हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ५८।

३५६—वि० १५६४—डांडे की खिड़की (गिर्द) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० १५। श्रावन सुदि ६।

३५७—वि०१५६४—मियाना (गुना) प्रस्तर-लेख। पं ६, लि० नागरी, भा० संस्कृत मिश्रित स्थानीय हिन्दी। सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ५३।

३५८—वि० १५६४—भौंरासा (भेलसा) सती - स्तम्भ - लेख। पं० ९, लि० नागरी, भा० हिन्दी। सती-दाह का उल्लेख, नाम अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९८, सं० ८।

३५९—वि० १५६५—भदेरा, पोहरी जागीर (शिवपुरी) सती प्रस्तर-लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ४४। चैत्र वदी ५।

१६०—वि० १३६६—पढ़ावली। (मुरैना) स्तम्भ- लेख। पं० ९, लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ३३।

३६१—वि० १५६६—बिजरी (शिवपुरी) सती-प्रस्तर-लेख। पं १०, लि० नागरी, भा० संस्कृत मिश्रित हिन्दी। महमूद नासिरशाही के राज्य में एक सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ६६।

३६२—वि० १५७०—अफजलपुर (मन्दसौर) राम मन्दिर से एक खम्बे पर। पं ११, लि० नागरी, भा० हिन्दी अथवा विकृत संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, सं० १७।

३६३—वि० १५७३—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) तेली के मन्दिर में प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० १४। माघ सुदी १३।

३६४—वि० [१] ५ [७] ३ गुडार (शिवपुरी) सती-स्तम्भ-लेख। पं० ११, लि० नागरी, भा० हिन्दी। सती, चन्देरी के सूबा शेरखां तथा मांडूगढ़ के शासक गयासुद्दीन के शासन का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० २४। कार्तिक सुदी ९।

३६५—वि० १५७७—नडेरी (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० २९. लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। अस्पष्ट। महमूदशाह खिलजी का उल्लेख है। शके १४४२ का भी उल्लेख है।

३६६—वि० १५७८—उदयपुर (भेलसा) कानूनगो की बावड़ी के पास प्रस्तर-लेख। पं० ६, लि० २ पंक्तियाँ नस्ख में तथा ४ नागरी में, भा० अरबी तथा हिन्दी। कुरान का उद्धरण, सिकन्दर लोदी के पुत्र इब्राहीम लोदी का उल्लेख, उदयपुर के चन्देरी देश में होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० २५-२६। मगसर वदी १३ सोमवार।

३६७—वि० १५८ (?)—कदवाहा (गुना) मंदिर नं० ३ में प्रस्तर-लेख। पं० ५ लि० नागरी, भा० हिन्दी। कुछ नाम अंकित हैं। ग्वा० पु० रि० सं० १९८४, सं० ६९।

३६८—वि० १५८०—ग्वालियर गढ़—(गिर्द) मरीमाता की ओर जैन-प्रतिमा-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४. सं० ३१। कार्तिक वदी ९।

३६९—वि० १५८१—पहाड़ो (छोटी) (शिवपुरी) सती-प्रस्तर-लेख। पं० १३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० १०३।

३७०—वि० १९८४—पढ़ावली (मुरेना) प्रस्तर लेख। पं० १४, लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। किसी कवि का उल्लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६ सं० ४१। माघ वदी ४।

३७१—वि० १९८६—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) अस्सी खम्भा पर स्तम्भ-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। किसी सहगजीत का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० १०।

३७२—वि० १(५)८६—उदयपुर (भेलसा) भित्ति-लेख। पं० ८, लि० नागरी भा० हिन्दी। उदयेश्वर (शिव) तथा (गोपाल) देव का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५ सं० २२।

३७३—वि० १५८७—कदवाहा (गुना) मन्दिर नं० ३ में भित्तिलेख। पं०

३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। यात्री का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९८५, सं० ६१।

३७४—वि० १५८८—पढ़ावली (मुरेना) स्तम्भ-लेख। पं० ११, लि० नागरी, भा० संस्कृत (विकृत)। किसी की मृत्यु का उल्लेख। श्लोक अंकित है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ३४। कार्तिक वदी ११।

३७५—वि० १५६०—पढ़ावली (मुरेना) स्तम्भ-लेख। प० ११, लि० नागरी, भा० हिन्दी। भक्तिनाथ जोगी का उल्लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ३६। चैत्र सुदी १२।

३७६—वि० १५(६४)—श्योपुर (श्योपुर) भित्ति-लेख। पं० १५, लि० नागरी भा० हिन्दी। भग्न। ग्वा० पु रि० संवत् १६८८ सं० २१।

३७७—वि० १५६५—पढ़ावली (मुरेना) स्तम्भ-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० हिन्दी। पढ़ावली का उल्लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७२, सं० ३८। चैत्र वदी ११।

३७८—वि० १५६५—पढ़ावली (मुरेना) स्तम्भ-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। कुछ नाम (अस्पष्ट) ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ४०। चैत्र वदी ११।

३७९—वि० १५६५—हासलपुर (श्योपुर) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० २३। फाल्गुन वदी १०।

३८०—वि० १५६६—भुरवदा (श्योपुर) प्रस्तर-लेख। पं० २, लि० नागरी, भा० हिन्दी। गणेश की मढ़ी बनाने वाले कारीगर बहादुरसिंह का नाम। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, सं० १३। ज्येष्ठ सुदी ३।

३८१—वि० १५६८—बड़ोखर (मुरेना) स्तम्भ-लेख। पं० ३ लि० नागरी भाषा हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ४६।

३८२—वि० १५६६—सुभावली (मुरेना) प्रस्तर-लेख। पं० ३ लि० नागरी भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ३, बैशाख सुदी ५। संवत् १७३१ का भी उल्लेख है।)

३८३—वि० १६००—सुन्दरखो (उज्जैन) सती-स्तम्भ-लेख। पं० ५, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। सती का उल्लेख ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ४८।

३८४—वि० १६०१—रतनगढ (मन्दसौर) सती-स्मारक-स्तम्भ-लेख। पं० ४ लि० नागरी, भाषा हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० ४२।

३८५—वि० १६०६—जीरण (मन्दसौर) स्तम्भ-लेख। पं० ७, लि० नागरी, (प्राचीन) भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, सं० २७। भाद्रपद सुदि ४।

३८६—वि० १६१३—कागपुर (भेलसा) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। कागपुर ग्राम का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १६८८, सं० ४। वैशाख सुदी ६।

३८७—वि० १६१३—हासिलपुर (श्योपुर) प्रस्तर-लेख। पं० १८, लि० नागरी भाषा हिन्दी। महाराज भीमसिह के पुत्र लक्ष्मण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० १०४। रविवार माघ सुदी १०।

३८८—वि० १६१३—हासिलपुर (श्योपुर) प्रस्तर-लेख। पं० १४, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७३, सं० २२।

३८९—वि० १६१५—दिनारा (शिवपुरी) तालाब पर प्रस्तर-लेख। पं० १०, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। महाराज वीरसिंहदेव बुन्देला के उल्लेख युक्त।

३९०—वि० १६२१—मितावली (मुरैना) भित्ति-लेख। पं० ५, लि० नागरी भाषा हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९५२, सं० ५४। आषाढ़ सुदी १२।

३९१—वि० १६२१—सुन्दरसी (उज्जैन) सती-स्तम्भ-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ४६।

३९२—वि० १६३६—गजनी खेड़ी (उज्जैन) चामुण्ड देवी के मन्दिर में

भित्ति-लेख। पं० ६, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। अकबर के शासन का तथा नारायणदास एवं हरदास का नामोल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० १०८।

३९३—वि० १६३९—बैराड (पोहरी जागीर) (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० ४, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ४२।

३९४—वि० १६४१—भौंरासा (भेलसा) कूप-लेख। पं० ५, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। बादशाह मोहम्मद अकबर के शासन में कूप-निर्माण का उल्लेख। दो कुल्हाड़ी के चित्र (नीचे)। ग्वा० पु०रि० संवत् १९९२, सं० ६। शुक्रवार वैशाख बदि ५।

३९५—वि० १६४२—कोतवाल (मुरैना) प्रस्तर-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। अकबर का नामोल्लेख है। शेष अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, असाढ़ बदि ५ बृहस्पतिवार।

३९६—वि० १६५ (—) कालका (उज्जैन)। सती-लेख। पं० ५, लि०नागरी, (प्राचीन) भाषा हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, सं० १७।

३९७—वि० १६५१—उज्जैन (अंकपात) उज्जैन-सती-प्रस्तर लेख। पं० १५, लि० नागरी (प्राची०) भा० हिन्दी। अकबर के शासन का उल्लेख। अस्पष्ट। ग्वा०पु रि० संवत् १९८३, स० १८। जेष्ठ बदी ८ मंगलवार।

३९८— वि० १६५२—टकनेरी (गुना) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० विकृत नागरी, भा० हिन्दी स्थानीय। बादशाह अकबर के शासन का उल्लेख तथा तिथि अंशतः वाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ६०।

३९९—वि० १६५४—जीरण (मन्दसौर) प्रस्तर-लेख। पं० १५, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। महारावत भानजी तथा अमरसिंह नामों का उल्लेख। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, सं० ४।

शाके १५१९ का भी उल्लेख है।

४००—वि० १६५४—उतनवाड (शिवपुर) प्रस्तर-लेख। पं० १६, लि०

नागरी, भा० हिन्दी। महाराजाधिराज श्रीराधिकादास [के शासन में गोपाल मन्दिर बनवाये जाने का उल्लेख। मन्दिर को ५१ बीघा जमीन जागीर से लगाई जाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, सं० २८। अश्विन सुदी १०।

शके १७१९ का भी उल्लेख है।

४०१—वि० १६५४—भेलसा (भेलसा) सती-स्तम्भ-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ११७।

४०२—वि० १६५७—उज्जैन (उज्जैन) वापी-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। एक बावड़ी तथा हरिवंश क्षत्रिय के पुत्र हंसराज द्वारा मतंगेश्वर मन्दिर के निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६ सं० ३३। बृहस्पतिवार वैशाख सुदि ८।

४०३—वि० १६५ [८]—कोलारस (शिवपुरी) सती-स्तम्भ-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ८९।

४०४—वि० १६५ [६]—कोलारस (शिवपुरी) सती-प्रस्तर-लेख। पं ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। (म) तिराम की पत्नी के सती होने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९७१, सं० २४। ज्येष्ठ सुदी ५ बृहस्पतिवार।

४०५ वि० १६५६—लश्कर (गिर्द) जयविलास महल में रखी भेलसे की तोप पर लेख। पं० २, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, सं० ११। कार्तिक बदि [९१]।

४०६—वि० १६६२—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर पर प्रस्तर-लेख। पं० ४, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत (विकृत)। यात्री-उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० १२९। ज्येष्ठ सुदि ५।

४०७—वि० १६६८- भदेरा (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० ८, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५ सं० ४७। वैशाख बदी १४।

४०८—वि० १६७२—पुरानी सोइन (श्योपुर) महादेव के मन्दिर पर प्रस्तर-लेख। पं० ११, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३ सं० ३२।

४०६—वि० १६ [७२]—सिलवरा खुर्द (गुना) स्तम्भ-लेख। पं० १०, लि० नागरी, भाषा हिन्दी अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९६३, सं० ७।

४१०—वि० १६ [७] ३—ग्वालियर गढ़ (गिर्द) जैन-मूर्ति। पं० २३, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। भट्टारक श्री भानुकीर्तिदेव, शुभकीर्तिदेव आदि नामों का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ७।

४११—वि० १६७४—रन्नोद (शिवपुरी) स्तम्भ-लेख। पं० १५, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९ सं० ११। सोमवार जेष्ठ सुदी १५।

४१२—वि० १६७४—रन्नोद (शिवपुरी) स्तम्भ-लेख। पं० १०, लि० नागरी, भा० संस्कृत। पृथ्वीचन्द द्वारा मूर्ति प्रतिष्ठित होने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० १०। चैत्र सुदी ५ बृहस्पतिवार।

४१३—वि० १६७४—रन्नोद (शिवपुरी) स्तम्भ-लेख। पं० १५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। जहाँगीर का उल्लेख है। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० १०४।

४१४—वि० १६७४—ढला (शिवपुरी) एक मनुष्य और हाथी की मूर्ति के बीच प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० नागरी (प्राचीन), भा० हिन्दी। बादशाह सलीम (जहांगीर) और वीरसिंह जू देव का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४ सं० १२।

४१५—वि० १६७५—रखेतरा (गुना) आदिनाथ की मूर्ति पर। पं० २, लि० नागरी, भा० हिन्दी। यात्री का उल्लेख। चन्देरी और बिठला का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० २९। शनिवार आषाढ़ वदी ८।

४१६—वि० १६८१—भौंरासा (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० ६, भाषा हिन्दी। मन्दिर-निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ३१।

४१७—वि० १६८२—सिंहपुर (गुना) सती-लेख। पं० १८, लि० नागरी, भा० संस्कृत। श्रीवास्तव कायस्थ स्त्री के सती होने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० ३४।

४१८—वि० १६८३—अचल (अमझरा) प्रस्तर-लेख। पं० ११, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ६२। शके १५४८ का भी उल्लेख है।

संवत् वि० १७०६ एवं १५७० का भी उल्लेख है।

४१९—वि० १६ [८४]—कोलारस (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं. १७, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। शाहजहाँ के राज्यकाल में कुछ जैनों द्वारा मन्दिर की मरम्मत कराने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५ सं०८८।

४२०—वि० १६८४ - उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर की पूर्वी ड्योढ़ी के प्रवेश द्वार पर प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भाषा विकृत संस्कृ०। यात्री-उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० २८।

४२१—वि० १६८४—पुरानी शिवपुरी (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० १२ लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५ सं० ५९। वैशाख सुदी ३।

४२२—वि० १६८५—कोलारस (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० १० लि० नागरी, भा० संस्कृत। मिश्रित हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ८६।

४२३—वि० १६८७—नरवर गढ़ (शिवपुरी) वापी-लेख। लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, सं० १३।

४२४—वि० १६८७—नरवर (शिवपुरी) प्रस्तर लेख। पं० ३०, लि० नागरी, भा० संस्कृत विकृत। नलपुर के सेठ जसवन्त और उसकी पत्नी द्वारा पुण्य कर्म का उल्लेख। शाहजहाँ के शासन का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, सं० १६। बृहस्पतिवार माघ सुदि ६।

४२५—वि० १६८८—महुआ (शिवपुरी) स्तम्भ-लेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। सती-दाह का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० १६।

४२६—वि० १६८८—श्योपुर (श्योपुर) भित्ति-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। दयानाथ जोगी का नमस्कार अंकित। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, सं० २२। भादो।

४२७—वि० १६६०—चन्देरी (गुना) जैन-मूर्ति। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी (संस्कृत विकृत)। ललितकीर्ति धर्मकीर्ति, पद्मकान्ति और उनके शिष्य गुणदास का उल्लेख ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० ४३। माघ सुदि ६ शुक्रवार।

४२८—वि० १६६०—कोलारस (शिवपुरी) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ८, लिपि नागरी, भाषा स्थानीय हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १९७५, सं० ८२।

४२९—वि० १६६०—उदयपुर(भेलसा) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ५, लि० नागरी, भाषा संस्कृत (भ्रष्ट)। गंगो के सती होने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५ सं० ८। कार्तिक सुदि १ मंगलवार।

४३०—वि० १६६२—भेलसा (भेलसा) चरणतीर्थ पर सती-स्तम्भ-लेख। पं० ३, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। सती का वृतान्त। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ११६। सोमवार वैशाख सुदि १५।

४३१—वि० १६६६—कोलारस (शिवपुरी) सती-स्तम्भ-लेख। पं० ४ लि० नागरी, भाषा हिन्दी। सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७८, सं० ९०।

४३२—वि० १६६८—उदयपुर (भेलसा) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ७, लिपि नागरी, भाषा संस्कृत। मलूकचन्द कायस्थ की पत्नी रूपमती के सती होने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७७ सं० ३ तथा संवत् १९८५, सं० २७। चैत्र सुदी १०।

४३३—वि० १६६८—उदयपुर (भेलसा) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ७, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। किसी चौधरी कुटुम्ब में सती होने का उल्लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८० इसी सं० ५। प्रस्तर पर एक-दो पंक्ति का लेख और है। शके १५६३ का भी उल्लेख है।

४३४—वि० १६६९—भेलसा (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० ५, लिपि नागरी भाषा हिन्दी स्थानीय। यात्री विवरण। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० २१। चैत्र सुदि १ सोमवार।

४३५—वि० १७०(०)—सुन्दरसी (उज्जैन) मन्दिर में स्तम्भ-लेख। पं० २६, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, सं० ५२।

४३६–वि० १६८९—नरवर (शिवपुरी) भित्तिलेख। पं०२८, लि०नागरी, भा० हिन्दी। बादशाह शाहजहाँ की अधीनता में राजा अमरसिंह कछवाहा के शासन में घर बनवाये जाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं १७। बृहस्पतिवार माघ सुदि ५।

शके १५५४ का उल्लेख है।

४३७—वि० १७(?)–पगरा (शिवपुरी) सती-स्तम्भ-लेख। लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। हरिकुँअर नामक सती का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९२६, सं० ३६। माघ सुदि १५।

४३८—वि० १७०१—अटेर (भिण्ड) भित्ति-लेख। पं० ४, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। देवगिरि (अटेर किले का प्राचीन नाम) के महाराजाधिराज श्री बहादुरसिंह जू द्वारा किले के निर्माण का प्रारम्भ होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९९, सं० १। फाल्गुन सुदि ३।

इसके अतिरिक्त किले के निर्माण की समाप्ति का भी उल्लेख है, जिसकी तिथि भादों सुदि १५ वि० सं० १७२५ है।

४३९–वि०१७०१–उदयपुर (भेलसा) प्रस्तर-लेख। लिपि नागरी तथा फारसी भाषा संस्कृत तथा फारसी। माथुर कायस्थ जातिके हरिदास के पुत्र दामोदरदास द्वारा कुए के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७७ सं० १। शके १५६६ तथा हिजरी सन् १५०४ का भी उल्लेख है।

४४०—वि० १७०३—सीपरी (शिवपुरी) बाणगंगा पर भित्ति-लेख। पं० १६, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। मन्दिर और मूर्तियों के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० १६। बैशाख सुदि ३।

नोट:—उक्त अभिलेख में एक ही व्यक्ति (मोहनदास सिद्ध) द्वारा २४ तीर्थंकरों की, पार्श्वनाथ की तथा विश्वनाथ महादेव की मूर्तियों की प्रतिष्ठापना का उल्लेख है। यह अभिलेख विशेष 'सांस्कृतिक महत्व का है क्योंकि एक ही व्यक्ति द्वारा दो मतों की मूर्तियों के निर्माण का उल्लेख है।

४४१—वि०१७०३—शिवपुरी (शिवपुरी) बाणगंगा के निकट स्तम्भ लेख। पं० १६, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। मोहनदास तथा अमरसिंह महाराज का उल्लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० १७। बैशाख सुदि ३।

४४२—वि० १७०३—शिवपुरी (शिवपुरी) बाणगंगा के निकट स्तम्भ-लेख। पं० २०, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। मोहनदास द्वारा एक मूर्ति की प्रतिष्ठापना का तथा अमरसिंह कछवाह तथा मोहनसिंह नामक दो व्यक्तियों का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१ सं० १८। वैशाख सुदि तृतीया बुधवार।

४४३—वि० १७०३—शिवपुरी (शिवपुरी) बाणगंगा के निकट स्तम्भ-लेख। पं०, ४ लि० नागरी, भाषा हिन्दी। शाहजहाँ के शासन-काल में महाराज अमर सिंह कछवाहा के साथ में मोहनदास खंडेलवाल के पुत्र नरहरिदास द्वारा किये जाने वाले तुलादान का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९११, सं० १६।

४४४—वि० १७०३—शिवपुरी (शिवपुरी) स्तम्भ-लेख। प० १२, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। ऊपर के अभिलेख का अंश है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० २०।

४४५—वि० १७०३—शिवपुरी (शिवपुरी) स्तम्भ-लेख। पं० १२, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। सिंघई मोहनदास द्वारा मणिकर्णिका नामक तालाब तथा एक मूर्ति के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९१, सं० २१। मोहनदास का वंशवृक्ष—नागराज, हरिदास तथा गंगादास।

४४६—वि० १७०३—शिवपुरी (शिवपुरी) प्रस्तर लेख। पं० ३१, लि० नागरी-भाषा हिन्दी। कुछ मूर्तियों के निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० २२। वैशाख सुदि ३।

मणिकर्णिका तालाब तथा एक मन्दिर के निर्माण का तथा उसमें गुहरिया गोत्र के महाजन मोहनदास विजयवर्गीय खंडेलवाल द्वारा २४ तीर्थकारों पार्श्वनाथ तथा बाणगंगा के महादेव विश्वनाथ की मूर्तियों की प्रतिष्ठापना का उल्लेख है। मोहनदास का वंश वृक्ष उपरोक्त अभिलेख नं० २१ में दिया हुआ है। (ये पुण्य कार्य करने के कारण उसका नाम सिंघई पड़ा) उसने अनेक तीर्थों का भ्रमण किया है और फिर अन्त में शिवपुरी में बस गया। वह अपने आप को उतनगढ़ गुनौरा के महाराज संग्राम का पोतदार बतलाता है।

४४७—वि० १७०३—शिवपुरी (शिवपुरी) जैन-मूर्ति-लेख। पं० २, लि० नागरी, भा० संस्कृत। गंगादास, गिरधरदास तथा उसकी पत्नी

चम्पावती के नाम पदचिन्ह क प्रतिष्ठापित करने वालों के रूप में उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० २३। वैशाख सुदी ३।

४४८—वि० १७०४—उतनवाद (श्योपुर) लक्ष्मीनारायण मन्दिर पर भित्ति-लेख। पं० १९, लि० नागरी, भा० हिन्दी। जब शाहजहाँ सम्राट् था तथा महाराज विठलदास उसके मांडलिक के तब कुँअर महाराजसिंह द्वारा मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८ सं० २७। वैशाख सुदि १५ गुरुवार।

४४९—वि० १७०३—दुबकुण्ड (श्योपुर) प्रस्तर-लेख। पं० ३, लि० नागरी भा० हिन्दी। राजा चेतसिंह का उल्लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १९७३ सं० ४७।

४५०—वि० १७०७—सुन्दरसी (उज्जैन) सती-स्तम्भ। पं० ७, लि० नागरी, भा० हिन्दी। एक सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ४७।

४५१—वि० १७०८—वोड़ा (अमझरा) प्रस्तर-लेख। पं० ९, लि० नागरी, भा० हिन्दी। सम्राट् शाहजहाँ तथा मुरादवख्श का उल्लेख है। तथा राजा नवलसिंह की पत्नी के सती होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० १०२। पौष वदी १२ शनिवार।

४५२—वि० १७०८—सुन्दरसी (उज्जैन) प्रस्तर-लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, सं० ५३।

४५३—वि० १७[१ —श्योपुर (श्योपुर) प्रस्तर-लेख। पं० १८, लि० नागरी भाषा हिन्दी। राजा गोपालदास के पुत्र मनोहरदास द्वारा दान का वर्णन है। जो उसने गया से लौटने पर अनेक गाएँ तथा अपार धन के रूप में दिया था। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ४४। वैशाख बदी १३ सोमवार।

इस अभिलेख से यह भी अंकित है कि बादशाह औरंगजेब राजा गोपालदास की उस वीरता के कारण आदर करता था जो उन्होंने शाहजहां से लड़ते समय दिखाई थी।

४५४—वि० १७१४—कोलारस (शिवपुरी) सती-प्रस्तर। पं० ५ लि० नागरी, भा० संस्कृत मिश्रित हिन्दी। शाहजहां पातशाही के राज्य में एक सती का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ८९।

४५५—वि० १७१७—रन्नोद (शिवपुरी) बावड़ी पर प्रस्तर-लेख। पं० १५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। पातशाही नवरंगशाही (औरंगजेब) के एक सरदार राजा देवीसिंह द्वारा एक कुएं के निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७९, सं० २। ज्येष्ठ शुक्ल १२ सोमवार।

४५६—वि० १७२०—रन्नोद (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० १२, लि० नागरी· भा० हिन्दी। अनेक व्यक्तियों द्वारा (जिनके नाम दिये हैं) एक कुएं के निर्माण का उल्लेख।

४५७—वि० १७२४—चन्देरी (गुना) बावड़ी पर प्रस्तर-लेख। पं० २३, लि० नागरी, भा० संस्कृत। श्री काशीश्वर चक्रवर्ती विक्रमादित्य के पुत्र युवराज मानसिंह द्वारा 'मानसिंहेश्वर" नाम से प्रख्यात एक शिवलिंग की स्थापना के उल्लेख युक्त एक प्रशस्ति। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० २०। माघ सुदी ८ सोमवार।

४५८—वि० १७३३—पठारी (भेलसा) बावड़ी लेख। लि० नागरी, भा० हिन्दी। राजा महाराजाधिराज पिरथीराज देवजू तथा उनके भाई श्रीकुमारसिंह देवजू के काल में बावडी बनाने का उल्लेख है। आ० स० इ० रिपोर्ट बुन्देल खंड तथा मालवा १८७४—१८७७।

शके १५९६ का भी उल्लेख है। तिथि १५ कृष्णपक्ष अगहन सोमवार। औरंगजेब आलमगीरजू के राज्य में तथा महाराज पृथ्वीराज देवजू और उनके भाई श्रीकुमारसिंह देवजू के समय में आलमगीर उर्फ भेलसा परगने के पठारी ग्राम में बिहरी बनाने का लेख है। इसके पास के बाग पर अधिकार प्रदर्शित न करने के लिये हिन्दू को गाय की और मुसलमान को सुअर की सौगन्ध दिलाई गई है।

४५९—वि० १७३७—बडोह (भेलसा) सती-स्तम्भ। पं० ३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। एक स्त्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७४, सं० ९९। भादों सुदी ७ शुक्रवार।

४६०—वि० १७३७—ढाकोनी (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। राजा दुर्गसिंह बुन्देला (समय १७२० = १७४४ वि०) के राज्य काल में चन्देरी की सरकार में स्थित ढाकोनी ग्राम में मन्दिर निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १६८७ सं० ५।

४६१—वि० १७३७—बूढा डोंगर (शिवपुरी) भित्तिलेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। आलमगीर (औरंगजेब) के शासन का उल्लेख है। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० १४।

४६२—वि० १७३८—डोंगर (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख पं० १२, लि० नागरी भा० हिन्दी। औरंगजेब के शासन-काल में संभवतः कुए के निर्माण का उल्लेख है। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १६८५, सं० ५०। आषाढ़ सुदी ३।

४६३—वि० १७३९—श्योपुर (श्योपुर) प्रस्तर-लेख। सं० ८, लि० नागरी, भा० हिन्दी। राजा मनोहरदास के राज्यकाल में एक बावड़ी के निर्माण का उल्लेख है और अन्त में राव लगनपति के हस्ताक्षर हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १६८८, सं० २४। ज्येष्ठ सुदी १३ बुधवार।

४६४—वि० १७४२—मण्डपिया (मन्दसौर) प्रस्तर-स्तम्भ-लेख। पं० ११ लि० नागरी, भा० स्थानीय हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० सं० १६७५, सं० ३९।

४६५—वि० १७४३—ढाकोनी (गुना प्रस्तर-लेख। पं० ६ लि० नागरी, (घसीट) भा० संस्कृत। राजा दुर्गसिंह बुन्देला के राज्यकाल में ढाकोनी में एक मृत लड़की की स्मृति में बावड़ी बनवाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८७, सं० ६।

४६६—वि० १७४३—सुन्दरसी (उज्जैन) सती स्तम्भ। पं० ६, लि०नागरी-भा० हिन्दी। एक सती का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४ सं० ४५।

४६७—वि० १७४७—डोंगर (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० ७ लि० नस्तालिक, भा० फारसी। औरंगजेब के शासनकाल में हातिमखां की देख-रेख में एक मस्जिद तथा एक कुएं के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ४६। वैशाख सुदी ९ मंगलवार।

४६८—वि० १७५१—कोतवाल (मुरेना) भित्ति-लेख। पं० ६ लि० नागरी भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० २७। ज्येष्ठ सुदी ५ सोमवार।

४६६—वि० १७५२—टियोडा (भेलसा) बावड़ी में प्रस्तर-लेख। पं० ११ लि० नागरी भा० हिन्दी। मुकुन्दराम के पौत्र जादोराम के पुत्र श्रीवास्तव कायस्थ आनन्दराय द्वारा बावडी के निर्माण की समाप्ति का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७९, सं० ८। श्रावण सुदी १।

इस बावड़ी के बनाने का प्रारम्भ हिजरी सन् ११०२ में मुकुन्द ने किया था। (देखिये आगे सं० ६०१)

४७०—वि० १७५३—नरवरगढ़ (शिवपुरी) तोप पर लेख। पं० ७, लि० नागरी भा० हिन्दी। जयसिंहजू देव(जयपुर के) की शत्रु संहार तोप का उल्लेख है। भा० सू० सं० १०२४, ग्वा० पु० रि संवत् १९८०, सं० १२ तथा संवत् १९८० पृ० २८।

४७१—वि० १७५३—नरवरगढ़ (शिवपुरी) एक तोप पर। पं० ४, लि० नागरी भा० हिन्दी। राजा जयसिंह जूदेव की फतेजंग नामक तोप का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, सं० १४।

४७२—वि० १७५६—भेलसा (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० ६; लि० नागरी, भा० हिन्दी। आलमगीरपुर में हिरदेराम द्वारा कूप-निर्माण का उल्लेख।

४७३—वि० १७५७— भैंसौदा (मन्दसौर) स्तम्भ-लेख। पं० ९, लि० नागरी भा० हिन्दी। (स्थानीय) नवाब जी मुआवतखाँ का उल्लेख है। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० २। पौष सुदी ६।

४७४—वि० १७५९—बडोह (भेलसा) सती-स्तम्भ। पं० ३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। एक सती का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० १००।

४७५—वि० १७६२—ढला (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० १९ लिपि प्राचीन नागरी, भाषा हिन्दी। महाराजा श्री उदेतसिंह जूदेव के शासन काल में। एक हनुमान की मूर्ति की प्रतिष्ठापना का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, सं० ९।

४७६—वि० १ (७) ६२—खिलवरा खुर्द (गुना) स्मारक-स्तम्भ-लेख ३ पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९, सं० ८।

४७७—वि० १७६४—चन्देरी (गुना) भित्तिलेख। पं० ३८, लि० नागरी, भा० संस्कृत। जगेश्वरी और हनुमान की मूर्ति की स्थापना तथा बहादुर शाह के शासनकाल का एवं सहदेव के पुत्र दुर्जनसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१ सं० ४६। माघ शुक्ल ६ शुक्रवासर।

इसमें शके १६८९ का भी उल्लेख है।

४७८—वि० १७६४—सियारी (भेलसा) सती-प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० नागरी (घसीट) भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, सं० ४।

४७९—वि० [१७]६५—उटनवाड़ (श्योपुर) स्तम्भ-लेख। पं० १३, लि० नागरी भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १९९२ सं० ४३।

४८०—वि० १७६५—चन्देरी (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० अशुद्ध संस्कृत और हिन्दी। खुशीराम नामक साधु की समाधि के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० ११ तथा संवत् १९९०, सं० २।

४८१—वि० १७६५—महुआ (शिवपुरी) स्तम्भ-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। एक सतीके दाह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१ सं० १५।

४८२—वि० १७६७—भाक्तर (गुना) सती-स्तम्भ। पं १२, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ११४।

४८३—वि० १७७१—जावद (मन्दसोर) भिति-लेख। पं० ९, आधुनिक नागरी, भा० स्थानीय हिन्दी। द्वार के निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ४२।

४८४—वि० १७७४—भोरस (उज्जैन) प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। गुसाईं बलबहादुर आदि का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ५४।

४८५—वि० १७७४—सुन्दरसी (उज्जैन) प्रस्तर-स्तम्भ-लेख। पं० ३, लि० नागरी भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, सं० ४९।

४८६—वि० १७७५—मियाना (गुना) रामवाण नामक एक तोप पर लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। ३२ ० की लागत पर तोप के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ६३।

४८७—वि० १७८७—चन्देरी (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० २६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० १० तथा संवत् १९७१, सं० ४४।

संवत् १७६४ का भी उल्लेख है।

आलेख अनेक स्थानों पर भग्न हो गया है।

यह लेख किसी मन्दिर के निर्माण का आलेखन करता प्रतीत होता है तथा बुन्देला राजा दुर्जन सिंह द्वारा हरसिद्ध देवी की मूर्ति-स्थापन का उल्लेख प्रतीत होना है। राजपरिवार का सम्पूर्ण वंश-वृक्ष दिया हुआ है। इसमें श्री दुर्जन सिंह के पूर्वजों तथा वंशजो का उल्लेख है। वंशवृक्ष निम्न प्रकार से है—(१) भैरव के वंश के काशीराज (जो वंश का संस्थापक था) को सम्राट् लिखा गया है। उसका उत्तराधिकारी रामशाही, (३) उसका पौत्र भारतेश (४) उसका पुत्र देवीसिंह (५) उसका पुत्र दुर्गासिंह। (६) उसका पुत्र दुर्जन सिंह, उसका ज्येष्ठ पुत्र मानसिंह, जो युवराज कहा गया है।

फिर कुछ ऐसे नामों की भी सूची है जो सम्भवतः उसी परिवार के व्यक्ति थे। किन्तु उनका ठीक-ठीक सम्बन्ध ज्ञात नहीं होता है। वे निम्न हैं:—

(१) श्री राजसिंह (२) श्री धीरसिंह (३) श्री विष्णुसिंह (४) श्रीबहादुरकुँअर (५) श्रीगोपालसिंह तथा (६) श्री जयसिंह। उसके बाद राजा के एक शुभेच्छु गोरेलाल नाम है जिसने इस लेख को हरसिद्धि के मन्दिर में खुदवाया और जेतसिंह (एक कायस्थ का नाम है जो इसका लेखक प्रतीत होता है।

४८८—वि० १७८२—मक्सी (उज्जैन) पार्श्वनाथ मन्दिर पर भित्ति-लेख पं० १४, लि० नागरी, भा० स्थानीय हिन्दी। अवन्ति में श्री संघ की बैठक और मन्दिर की मरम्मत होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० २६, कार्तिक सुदी ७ बुधवार।

४८६—वि० १७८३– श्योपुर (श्योपुर) भित्तिलेख। पं० ३९, लि० नागरी, भा० संस्कृत एवं हिन्दी। श्योपुर के इन्द्रसिंह का उल्लेख है। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ५९। इसमें शके १६४८ का भी उल्लेख है।

४९०—वि० १७८५–पीपलरावन (उज्जैन) सती स्तम्भ। पं० ११ लि० नागरी भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ४२।

४९१—वि० १७८५- नई सोयन (श्योपुर) प्रस्तर-लेख। पं० १५, लि० नागरी भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ३४।

४९२—वि० १७८६—भौंरासा (भेलसा) सती-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० हिन्दी। सती के द्वार का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ३३। पौषसुदी ११ शनिवार।

४९३—वि० १७९५—बूढ़ी चन्देरी (गुना) मूर्ति-लेख। पं० ४, लि० नागरी भा० हिन्दी। चन्देरी के दुर्जनसिंह बुन्देला तथा एक मूर्ति की स्थापना का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० १। पौष बदी ११।

४९४—वि० १७९९—रदेव (श्योपुर) प्रस्तर-लेख। पं० ३, लि० प्राचीन नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२ सं० ४०। पौष वदी ११।

४९५—वि० १८००- बारा (शिवपुरी) स्तम्भ-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। मुरलीमनोहर के मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८ सं० ३९। वैशाख सुदी ७।

४९६—वि० १८०५—विजयपुर (श्योपुर) स्तम्भ-लेख। पं० ३१, लि० नागरी, भा० हिन्दी। नष्ट हो गया है, केवल महाराजाधिराज गोपालसिंह आदि कुछ नाम ही वाच्य हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, सं० १५। वैशाख सुदी।

शाके १६७० का भी उल्लेख है।

४९७—वि० १८०६–चन्देरी (गुना) एक मूर्ति के अधोभाग पर। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। महाराजा मानसिंह बुंदेला के शासनकाल में नंदी भक्तिन द्वारा राधा-कृष्ण की मूर्तिकी प्रतिष्ठापना का उल्लेख

है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९०, सं० १। बैशाख सुदी १२ शुक्रवार।
शाके १७७१ का भी उल्लेख है।

४९८—वि० १८०६—बारा (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अहमदशाह के शासनकाल में राजा छतरसिंह के राज्य में अर्जुनसिंह की जागीर में बावड़ी के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ४१। जेठ सुदी ३, सोमवार।

४९९—वि० १८१०—ढोडर (श्योपुर) भित्तिलेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। महाराजा गोपालसिंह, श्री दीपचन्द्र, सतीशसिंह का उल्लेख है। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० १४।

५००—वि० १८१०—ढोडर (श्योपुर) भित्ति-लेख। पं० ८, लि० नागरी, भा० हिन्दी। जोरावरसिंह, उम्मेदसिंह आदि कुछ नामों का उल्लेख है। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० १५।

५०१—वि० १८१२—मालगढ़ (भेलसा) कूप-लेख। पं० १२, लि० मोड़ी एवं नागरी, भा० हिन्दी। पेशवा बालाजीराव बाजीराव के शासनकाल में (ल) खमीगंज नगर में पंडित नारोजी भीकाजी द्वारा पण्डित रामजी विसाजी की देख रेख में एक बावड़ी को तोड़कर पूरी तरह पुनर्निमाण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि संवत् १९८९ सं० ५।

शाके १६७७ तथा हिजरी ११६३ का भी उल्लेख है।
यह बावड़ी पहले बहादुरशाह द्वारा बनवाई गई थी। (देखिये सं० ६७२)

५०२—वि० १८१५—बावड़ीपुरा (मुरैना) वापी-लेख। पं० १५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। नवलसिंह का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९७३ सं० १२।

५०३—वि० १८१६—बजरंगगढ़ (गुना) भित्तिलेख। पं० ९, लि० नागरी, भा० हिन्दी। राजकुमार शत्रुसाल द्वारा किले के निरीक्षण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९७५, सं० ६२।

५०४—वि० १८१७—उतनवाड़ (श्योपुर) प्रस्तर-लेख। पं० १२, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, सं० २६। ज्येष्ठ वदी ७।

५०५—वि० १८१८—नागदा (श्योपुर) एक छत्री पर। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। श्योपुर के इन्द्रसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९७३, सं० ४०।
संवत् १८२० का भी उल्लेख है।

५०६ वि० १८२०—सेमलदा (अमझरा) एक छत्री पर। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० १०।

५०७—वि० १८२०—अमझरा (अमझरा) राजेश्वर मन्दिर पर। पं० १५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अमझरा के केसरीसिंह का उल्लेख है। अस्पष्ट। ग्वा०पु० रि० सवत् १९७३, सं० ९४। शके १६८५ का भी उल्लेख है।

५०८—वि० १८२०—अमझरा (अमझरा) रत्नेश्वर मन्दिर पर। पं० १८, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अमझरा के केसरीसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ९३।
शके १६८५ का भी उल्लेख है।

५०९—वि० १८२२—नरवर—मगरोनी की सड़क पर (शिवपुरी) वापी-लेख। पं० १ लि० नागरी, भा० हिन्दी। शाहआलम के शासन-काल में महाराजाधिराज महीपति श्री रामसिंह के छोटे भाई श्री कीर्तिराम द्वारा उस कुऐ के निर्माण का आलेख है जिस पर अभिलेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९६३, स० ९.। वैशाख सुदी ७।
इसमें शके १६८७ का भी उल्लेख है।

५१०—वि० १८२२—अटेर (भिन्ड) एक चबूतरे पर। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। एक भूकम्प द्वारा नष्ट हो जाने पर महाराज परवतसिंह द्वारा उसके पुनर्निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० २। पौष वदी ५ सोमवार।

५११—वि० १८२२—नरवर (शिवपुरी) वापी-लेख। पं० १०३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। श्रीरामसिंह कछवाहे के शासनकाल में एक कूएं के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, सं० ७। वैशाख शुक्ल ७ शनिवासरे।

५१२—वि० १८२३—नरवर (शिवपुरी) योगी की छत्री पर। पं० ६, लि० नागरी, भा० विकृत नागरी। छत्री के निर्माण अथवा मरम्मत का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० ११।

५१३—वि० १८३१—रदेव (श्योपुर) प्रस्तर-लेख। पं० १३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १९८८, सं० १९।

५१४— वि° १८३३—बजरंगगढ़ (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० हिन्दी। राधेगढ़ के बलवन्तसिंह जी का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ६१।

५१५—वि० १८३३—अटेर (भिन्ड) चबूतरे पर। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। महाराज श्री महिन्द्रबख्तसिंह बहादुर की आज्ञानुसार महारानी सिसोदनी के लिये बैठक के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९६९, सं ३। बुधवार ज्येष्ठ सुदी ५।

उस्ताद मुहम्मद, दरोगा सबरजोत व संगतराश नैनमुख का भी उल्लेख है।

५१६—वि० १८३४—नरवरगढ़ (शिवपुरी) बारहदरी का एक स्तम्भ-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० हिन्दी। महाराज रामसिंह कछवाहा के समय में बारादरी के बनाये जाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८१, सं० ३८। माघ सुदी ५।

५१७—वि० १८३६—भौंरासा (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० २३।

५१८—वि० १८३६—रामेश्वर (श्योपुर) प्रस्तर-लेख। पं० १३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, सं० १०८।

५१९—वि० १८३६—कचनार (गुना) स्तम्भ-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। सं० १८४१ में सेठ गोवर्धनदास के काल-कवलित होने तथा उनकी स्मृति-स्वरुप छत्री के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ४८।

इसमें शाके १७०३ का भी उल्लेख है।

५२०—वि० १८३९—गोहद (भिण्ड) भित्तिलेख। पं० ६, लि० नागरी भा० हिन्दी। गोहद के राणा छतरसिंह के शासन-काल में एक बगीचा तथा एक कुआँ बनने का आलेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ३५। चैत्र सुदी ११।

५२१—वि० १८४१—उदयपुर (भेलसा) उदयेश्वर मन्दिर के शिवलिंग पर। पं० १६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। महादजी सिन्धिया के सेनापति खण्डेराव अप्पाजी द्वारा पत्र चढ़वाने का उल्लेख। आ० स० इ० रि० भाग १०,

५२२—वि० १८४३—ट्यौंदा (भेलसा) भित्ति-लेख। पं० १३ लि० नागरी, भा० हिन्दी। आनन्दराय कानूनगो के पौत्र वसन्तराय के पुत्र श्रीवास्तव कायस्थ उमेदाराय द्वारा राम के मन्दिर के निकट एक बावड़ी के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८९, सं: ७। चैत्र वदि ५ बृहस्पतिवार।

५२३—वि० १८४४—भौंरासा (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० १६ और १, लि० नागरी नस्तालिक, भा० हिन्दी फारसी। हिन्दू तथा मुसलमानों के लिये बेगार बन्द किये जाने का उल्लेख सा प्रतीत होता है। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ९। आश्विन वदि १३।

इसमें हिजरी सन् ११६५ का भी उल्लेख है।

५२४ वि०—१८४५—नरवर (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० १५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। महाराज हरिराज के समय में प्रवासियों के साथ सद्-व्यवहार का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० १०। मार्गशीर्ष सुदि ४।

५२५—वि० १८४८—हीरापुरा (श्योपुर) राजा गिरधरदास की छत्री पर। पं० २२, लिपि नागरी, भा० हिन्दी। ग्वा०पु०रि० संवत् १९७३ सं० २४।

५२६—वि० १८५०—विजयपुर (श्योपुर) स्तम्भ-लेख। पं० १६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। एक नायक द्वारा विजयपुर में एक कुआ तथा बाग लगवाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८८ सं०, १४। अधिक वैशाख सुदि ३।

५२७— वि० १८५२—उटनवाड़ (श्योपुर) भित्ति-लेख। पं० १०, लि० नागरी, भा० हिन्दी। श्योपुर के महाराज राधिकादास के शासन में गोपालराम गौड़ द्वारा मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा०पु०रि० संवत् १९९२, सं० ४१। पौष वदि १४।

५२८—वि० १८५५—उज्जैन (उज्जैन) रामघाट पर भित्ति-लेख। पं० ६,

७, लि० नागरी, भा० मराठी। दौलतराव सिंधिया के शासन-काल में बाहुजी तथा लक्ष्मण पटेल द्वारा मन्दिर तथा पिशाचमोचन घाट के सुधारने तथा निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, सं० १ और २।

इसमें शके १७२० का भी उल्लेख है।

५२९—वि० १८५६—नरवर (शिवपुरी) एक छत्री का छत्र। पं० ११, लि० नागरी, भा० हिन्दी। दौलतराव सिंधिया के शासन काल में जब अंबाजी इंगले सूबा थे और विश्वासराव देशमुख थे, छत्री के बनाये जाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, सं० ३७। भाद्रपद वदि ९ बुधवार।

इसमें शके संवत् १७५१ का भी उल्लेख है।

५३०—वि० १८५७—नरवरगढ़ (शिवपुरी) दरवाजे की चौखट पर। पं० १५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। बाजीराव तथा दौलतराव शिन्दे के उल्लेख युक्त एवं सूबा खण्डेराव के द्वारा एक द्वार के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, सं० ७। आश्विन सुदि १० भानुवासर।

५३१—वि० १८५८—उज्जैन (उज्जैन) रामघाट पर यमुना देवी पर। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। यमुना की मूर्ति की प्रतिष्ठापना का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, सं० ५।

५३२—वि० १८५९—उज्जैन (उज्जैन) चौरासी लिंग के ऊपर। पं ४, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। विभिन्न देवताओं के नाम उल्लिखित हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३ सं० ४।

५३३—वि० १८६३—श्योपुर (श्योपुर) राधावल्लभ मन्दिर में भित्ति-लेख। पं० १९, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। राधावल्लभ की मूर्ति की प्रतिष्ठापना का उल्लेख है। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ४२।

इसमें शके १७२८ का भी उल्लेख है।

५३४—वि० १८६३ [?]—घुसई (मन्दसौर) प्रस्तर-लेख। पं० १३, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। एक तालाब के निर्माण का उल्लेख है। शेष अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ११२।

५३५—वि० १८६४—करहिया (गिर्द ग्वालियर) मकरध्वज मीनार के

निकट स्तम्भ-लेख। पं० १८ लि० नागरी, भा० हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १९९०. स० ६।

५३६—वि० १८६५—तुमेन (गुना) सती-स्तम्भ। पं० १३, लि० नागरी, भा० हिन्दी। राघोगढ़ के दुर्जनसाल खीची का उल्लेख तथा एक सती के दाहकर्म और छत्री के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९७५, सं० ६८।

इसमें संवत १८६७, शके १७३० तथा हिजरी सन १२१८ का भी उल्लेख है।

५३७—वि० १८६८—कोतवाल (मुरैना) प्रस्तर-लेख। पं० २०, लि० नागरी, भा० हिन्दी। जयाजीराव शिन्दे के शासनकाल में हरिसिद्ध देवी के मंदिर के निर्माण का उल्लेख है। दिनकरराव सूबा थे। ग्वा० पु० रि० संवत १९७२, सं० २६। पौष वदि ८।

५३८—वि० १८७५—उदयगिरि (भेलसा) गुहा नं० २० के पास भित्ति-लेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० हिन्दी। अध्यात्म पर एक दोहा लिखा है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८५, सं० ६।

५३९—वि० १८७७—अमरकोट (शाजापुर) प्रस्तर-लेख। पं० ३६, लि० नागरी, भा० हिन्दी। दौलतराव सिन्धिया के काल में राम की प्रतिमा स्थापित होने का उल्लेख है। दाताओं तथा कारीगरों के नाम भी उल्लिखित हैं। ग्वा० पु० रि० संवत १९८६, सं० ३८। ज्येष्ठ सुदि १५ सोमवार।

इसमें शके संवत १७६३ का भी उल्लेख है।

५४० वि० १८७८—उदयगिरि (भेलसा) गुहा नं० २० के पास प्रस्तर-लेख। पं० १, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। कई अंक अंकित हैं। ग्वा० पु० रि० संवत १९८५. सं० ४। कुआर सुदी ४ बुधवार।

५४१ वि० १८७९—हासिलपुर (श्योपुर) सती छत्री के पास स्तम्भ। पं० २३, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। महाराज दौलतराव शिन्दे का उल्लेख तथा सती-स्तम्भ के निर्माण का वृत्तान्त। ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, सं० १०२। वैशाख सुदि गुरुवार।

५४२—वि० १८८०—नरवर (शिवपुरी) सती-स्मारक। पं० ८, लि० नागरी,

भाषा हिन्दी। सुन्दरदास की दो पत्नियों, लाडौदे एवं सरुपदे के सती होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १६७१, सं० १४। श्रावण सुदि १३ मंगलवार।

शके १७४५ का भी उल्लेख है।

५४३—वि० १८८१—उज्जैन (उज्जैन) सिद्धवट में प्रस्तर-लेख। पं० ९, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। इन्दौर के महाजन किशनलाल द्वारा महाराज दौलतराव सिंधिया के शासनकाल में नीलकण्ठेश्वर की प्रतिमा के प्रतिष्ठापन तथा विनायक घाट और छत्री के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, सं० २४। वैशाख सुदि ७ बुधवार।

इसमें शके १७७६ का भी उल्लेख है।

५४४—वि० १८८१—उज्जैन [सिद्धवट] (उज्जैन) वट के नीचे। पं० ५. लि० प्राचीन नागरी, भाषा हिन्दी। कुछ महाजनों के नामोल्लेख हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, सं० २१। वैशाख सुदि ७ बुधवार।

५४५—वि० १८८२—भौरासा (भेलसा) स्तम्भ-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० स्थानीय हिन्दी। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७४, सं० २६। आषाढ बदि ३।

५४६—वि० १८८७—उज्जैन (उज्जैन) गंगाघाट पर भित्ति-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० संस्कृत। महादेव किबे के पुत्र गणेश द्वारा गंगाघाट के निर्माण तथा शम्भू लिंग एवं एक उमा की प्रतिमा की प्रतिष्ठापना का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, सं० १२। सोमवार ज्येष्ठ सुदि ५ बुधवार।

इसमें शके १७५२ का भी उल्लेख है।

५४७—वि० १८८९—श्योपुर (श्योपुर) रपट पर। पं० ११, लि० नागरी भाषा हिन्दी। महाराज जनकोजीराव शिंदे के शासनकाल में जयसिंह भान सूर्यवंशी पटेल था, तब इस पुल के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, सं० २०। चैत्र सुदि १३ मंगलवार।

५४८—वि० १८९३—भेलसा (भेलसा) रामघाट के निकट धर्मशाला पर भित्ति-लेख। पं० २०, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। दामोदर के पुत्र आनन्दराम द्वारा एक मन्दिर के निर्माण तथा उसमें अनन्तेश्वर के

नाम से शिवमूर्ति की प्रतिष्ठापना का तथा एक बाग और दो धर्मशाला बनवाने का आलेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, सं० २। वैशाख सुदि १२ शुक्रवार।

५४९—वि० १८९७—हासिलपुर (श्योपुर) सीताराम मन्दिर के पास प्रस्तर-लेख। पं० ६, लि० नागरी भा० हिन्दी। अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, सं० १०१। वैशाख वदि १२ शुक्रवार।

५५०—वि० १९००— रजौद (अमझरा) प्रस्तर-लेख। पं० २, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। महाराव श्री बख्तावरसिंह जी द्वारा रजोद पर रणछोड़ जी एवं रुक्मिणी की मूर्तियों की प्रतिष्ठापना का उल्लेख है। गुरु, रामकृष्ण के नाम भी उल्लिखित हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० १०४। वैशाख सुदि ८।

इसमें शके १७७१ का भी आलेख है।

गुप्त संवत् युक्त अभिलेख

५५१ गु०—८२—उदयगिरि (भेलसा) गुहा-लेख। पं० २, लि० गुप्त, भाषा संस्कृत। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल का उल्लेख है। भा० सू० सं० १२६०; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ७८। अन्य उल्लेखः कनिंघम, भिलसा टोप्स, पृ० १५० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५०; फ्लीट गुप्त अभिलेख भाग ३, पृ० २५।

सनकानिक वंश के चन्द्रगुप्त द्वितीय के मांडलिक, छगलग के पौत्र विष्णुदास के पुत्र के दान का उल्लेख है।

५५२—गु० १०६—उदयगिर (भेलसा) जैन गुहा लेख। पं० ८, लि० गुप्त, भा० संस्कृत। गुप्त सम्राट (कुमार गुप्त) के शासन काल में शंकर द्वारा पार्श्वनाथ की मूर्ति की प्रतिष्ठा का उल्लेख। भा० सू० सं० १२६५; ग्वा० पु० रि. संवत् १९७४, सं ८०। अन्य उल्लेखः आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ४४; इ० ए० भाग ११, पृ० ३०९; फ्लीटः गुप्त अभिलेख भाग ३, पृ० २५८।

५५३—गु० ११६—तुमेन (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० ६, लि० गुप्त, भा० संस्कृत। कुमारगुप्त के शासन काल से एक मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। भा० सू० सं० १२६९; ग्वा०पु०रि० संवत् १९७५; सं०, ६५, अन्य उल्लेखः इ० ए० भाग ४९, पृ० ११४; ए० इ० भाग २६, पृ० ११५ चित्र।

इसमें तुम्यवन (तुमेन; और बटोदक) बदोह १ का उल्लेख है। यह तुमेन का एक मस्जिद के खंडहर में प्राप्त हुआ है। इस अभिलेख का ऐतहासिक महत्व यह है कि उसमें घटोत्कच गुप्त का स्पष्ट उल्लेख है। इसके पूर्व घटोत्कच गुप्त का उल्लेख केवल दो स्थलों पर मिलता था, एक तो बसाढ की एक मुद्रा पर जिसमें लिखा है 'श्री घटोत्कच गुप्तस्य' और सेन्टपीटर्सबर्ग के संग्रह से सुरक्षित एक मुद्रा में जिसमें कुमारदित्य विरुद दिया हुआ है। इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि घटोत्कच गुप्त सम्भवतः कुमार गुप्त के पुत्र अथवा छोटे भाई हैं जो उनके शासन काल में प्रान्त के अधिपति थे।

हिजरी सन् युक्त अभिलेख

५५४—हि० ७११—चन्देरी (गुना) भित्ति-लेख। पं० ४, लि० सुल्स, फारसी। दिल्ली के अलाउद्दीन के शासनकाल में मुहम्मदशाह के समय में मसजिद निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० सवत् १९८१, सं०१०।

५५५—हि०७३७तथा७३९—उदयपुर (भेलसा) प्रस्तर लेख। भा० फारसी। अभिलेख में मुहम्मद तुगलक के काल में उदयेश्वर मन्दिर के कुछ भाग को तोड़कर मस्जिद बनाने का उल्लेख; आ० स० इ० रिपोर्ट भाग १०, बुन्देलखण्ड तथा मालवा पृ० ६८।

५५६—हि० ७९५—चन्देरी (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नस्ख, भा० फारसी। फीरोजशाह के पुत्र मोहम्मदशाह के शासनकाल में मस्जिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८१, सं० ८।

५५७—हि० ८१८—चन्देरी (गुना) प्रस्तर लेख। शहरपनाह के दिल्ली दरवाजे पर फारसी के एक अभिलेख में उक्त द्वार के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, पारा १९।

५५८—हि० ८२८—चन्देरी (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० ३, लि० नस्ख, भा० फारसी। मालवा के हुशंगशाह के शासनकाल में मकबरे के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० ६।

५५९—हि० ८३६—सिंघपुर (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ११, लि० नस्ख, भा० फारसी। मांडू के हुशंगशाह के शासनकाल में १० वीं को तालाव के निर्माण की समाप्ति का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० ३५।

५६० — हि० ८४५ -- पुरानी शिवपुरी (शिवपुरी) जामा मस्जिद। पं० ३, लि० नस्तालीक भा० फारसी। मालवे के मोहम्मदशाह खिलजी के राज्य में मस्जिद बनाये जाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ५६।

५६१ — हि० ८६२ — भेलसा (भेलसा) मस्जिद पर लेख। मालवे के महमूद प्रथम खिलजी के उल्लेख युक्त। आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३४।

५६२ — हि० ८९० — चन्देरी (गुना) बत्तोसी बावड़ी में फारसी में एक लेख है जिससे ज्ञात होता है कि वह माण्डू के गयासशाह खिलजी के राज्यकाल में बनी थी।

५६३ — हि० ८९३ — भेलसा (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० १, लि० नस्ख, भा० फारसी। तिथि का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ११४।

५६४ — हि० ८९४ — उदयपुर (भेलसा) भित्ति-लेख। पं० ३, लि० नस्ख, भा० फारसी। माण्डू के मुहम्मदशाह खिलजी के समय में मस्जिद निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८५ सं० २८।

५६५ — हि० ९०२ — चन्देरी (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० नस्ख, भा० फारसी। सिकंदरशाह लोदी के पुत्र इब्राहीमशाह लोदी के शासन काल में एक बावड़ी के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १९८६ सं० १३।

५६६ — हि० ९११ — पवाया (गिर्द) प्रस्तर-लेख। पं० १०, लि० नस्ख, भा० फारसी। सिकन्दर लोदी के शासन काल में सफदरखाँ वजीर की आज्ञानुसार असकन्दराबाद किले के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, सं० ७।

५६७ — हि० ९१२ — नरवर गढ़ (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। लि० नस्ख, भा० फारसी। सिकन्दरशाह लोदी के हिजरी ९१२ की विजय के उपलक्ष में एक मसजिद के निर्माण का उल्लेख है। कुछ भाग पर कुरान का पाठ है तथा कुछ अस्पष्ट है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, सं० १५ ए। पुराने हिन्दू मंदिरों के कुछ स्तंभों पर पाँच लेख और हैं।

५६८—हि० ९१८—चन्देरी (गुना) प्रस्तर लेख। पं० ५, लि० नस्ख, भा० फारसी। मांडू के सुल्तान महमूदशाह खिलजी के समय में एक तालाब के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० ३४।

५६९—हि० ९३८—आंतरी (गिर्द) भित्ति लेख। पं० ८, लि० नस्ख भाषा फारसी। हुमायूं के शासनकाल में यारमोहम्मद खां द्वारा इस मसजिद की मरम्मत का वृतान्त है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, सं० १३१।

५७०—हि० ९५६—उदयपुर (भेलसा) चदुआ द्वार के पास मसजिद पर भित्ति लेख। पं० ९ लि० नस्तालीक भा० फारसी। इस्लामशाह सूरी के शासनकाल में चंगेजखां के सूबात के समय में मसू खां द्वारा मसजिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ३२।

५७१—हि० ९६०—नरवर (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख पं० १०, लि० नस्ख और नस्तालीक भा० अरबी तथा फारसी। अरबी में लिखा हुआ भाग केवल कुरान और हदीस का उद्धरण मात्र है। फारसी में लिखे भाग पर दिलावर खां (जो अदिलशाह का प्रतिनिधि था) द्वारा एक मस्जिद के निर्माण का उल्लेख है तथा अन्य नाम भी उद्धृत है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, सं० २।

५७२—हि० ९६०—नरवरगढ़ (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख। पं० १०, लि० नस्ख और नस्तालीक, भा० अरबी और फारसी। कुरान के उद्धरण तथा मुहम्मदशाह आदिल के शासन काल में दिलावरखाँ की आज्ञानुसार मस्जिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८१ सं० ४४। अन्य उल्लेख: इ० ए० भाग ५६, पृ० १०१।

५७३—हि० ९६२—नरवरगढ़ (शिवपुरी) भित्ति-लेख। पं० ५, लि० नस्ख, भा० अरबी और फारसी। कुरान के उद्धरण तथा शमशेरखाँ (नरवर के सूबा) की आज्ञा से मस्जिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सं० १९८१, सं० ४३।

५७४—हि० ९८९—उज्जैन (उज्जैन) प्रस्तर-लेख। पं० १०, लि, नस्ख और नस्तालीक, भा० अरबी और फारसी। कुरान की आयतें तथा अकबर महान के शासन काल में एक सराय के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८१, सं० ४६, इ० ए० भाग ५६। अन्य उल्लेख: इ० ए० भाग ५६।

५७५—हि० ६८७—भेलसा (भेलसा) मस्जिद पर। अकबर के उल्लेख युक्त। आ० स० इ० रि० भाग १० पृ० ३५।

५७६—हि० ९९२—भौंरासा (भेलसा) प्रस्तर लेख। पं० १०, लि० विकृत नस्तालीक, भा० फारसी। अकबर के शासन काल में एक कुए तथा एक मसजिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९२, सं० ७।

५७७—हि० ६९८—पुरानो शिवपुरी (शिवपुरी) प्रस्तर-लेख पं० २ लि० नस्तालीक. भा० फारसी। शाह और चिश्ती वंशों का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५ सं० ५५।

५७८—हि० १००३—भौंरासा (भेलसा) भित्ति-लेख। पं० १०, लि. नस्ख, भा० अरबी या फारसी। अकबर के शासन काल में हसनखाँ द्वारा किले का निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ३।

५७९—हि० १००८—ग्वालियर (गिर्द) मुहम्मद गौस के मकबरे में स्तम्भ-लेख। पं० ६, लि० नस्तालीक भा० फारसी। मुहम्मद मासूम (जो अकबर के साथ दक्षिण के अभियान में गया था) का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, सं० १३७।

५८०—हि० १००८ व १००९—कालियादेह महल में दालान के खम्भे पर (उज्जैन) अकबर के उज्जैन तथा उसकी आज्ञा से दालान बनाने का उल्लेख है। विक्रम स्मृति ग्रन्थ, पृ० ४८४।

५८१—हि० १०४०—शिवपुरी (पुरानी शिवपुरी) स्तम्भ लेख। पं० ७, लि० नस्ख, भा० फारसी। रामदास द्वारा परगना शिवपुरी, सरकार नरवर तथा सूबा मालवे के जागीरदारों को चेतावनी दी गई है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ५७।

इस अभिलेख से शब्द 'शिवपुरी' है न कि सीपरी।

५८२—हि० १०४०—रन्नौद (शिवपुरी) रेलिंग पर। पं० १३, लि० नस्ख भा० अरबी, अबुलफजल की मृत्यु का उल्लेख है। अपूर्ण। ग्वा० पु० रि० संवत १९८५, सं ५१।

५८३—हि० १०५०—रन्नौद (शिवपुरी) भित्ति-लेख। पं० ५ लि० नस्तालीक,

भा० फ़ारसी। शाहजहां के शासन काल में एक मसजिद के निर्माण का उल्लेख है, ग्वा० पु० रि० संवत १९७९, सं० ८।

५८४—हि० १०५०—भौंरासा (भेलसा) भित्ति-लेख पं० १३, लि० नस्ख, भा० अरबी और फारसी। बादशाह शाहजहां के उल्लेख युक्त धार्मिक पाठ है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२. सं० ११।

५८५—हि० १०५४—उदयपुर (भेलसा) चन्देरी दरवाजे के पास मस्जिद में प्रस्तर-लेख। पं० ३, लि० नस्तालीक भा० फारसी। शाहजहां के शासन काल में परगना उदयपुर के अलावख्श द्वारा मसजिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० २९।

५८६—हि० १०५४—उदयपुर (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नस्तालीक, भा० फारसी। शाहजहाँ के शासनकाल में अलावख्श द्वारा मस्जिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ३०।

५८७—हि० १०६८—ग्वालियर (गिर्द) खान्दारखां की मसजिद के महराब पर। पं० २+२ लि० नस्तालीक, भा० फारसी। शाहजहां के शासनकाल में खान्दारखां के लड़के नासिरीखां द्वारा मसजिद के मिर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० १२८ तथा १२९।

५८८—हि० १०७०—जौरा अलापुर (मुरैना) भित्ति-लेख। पं० १०, लि० नस्ख. भा० अरबी। औरङ्गजेब का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० ६ तथा ७।

५८९—हि० १०७२—नूराबाद (मुरैना) भित्ति लेख, पं० ३, लि० नस्तालीक, भा० फारसी। औरंगजेब के समय से मसजिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६. सं० ४।

५९०—हि० १०७३—रन्नोद (शिवपुरी) कूप-लेख। पं० ४, लि० नस्तालीक, भा० फारसी। औरंगजेब का तथा एक कुए के निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० सं० १९७९ सं० ५।

५९१—हि० १०७४—रन्नोद (शिवपुरी) वापी-लेख। पं० ७ लि० नस्तालीक भा० फारसी। औरंगजेब के शासन काल में एक कुए के निर्माण का उल्लेख है, जब इब्राहीमहुसेन फौजदार था। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० ४।

५९२—हि० १०८२—कयामपुर (मन्दसौर) भित्ति-लेख। पं० २ लि० नस्तालीक भा० फारसी। औरंगजेब के शासनकाल में मस्जिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, सं० ०।

५९३—हि० १०९४—चन्देरी (गुना) प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० नस्तालीक, भा० अरबी तथा फारसी। औरंगजेब के शासन काल में मकबरे के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० १३।

५९४—हि० १०९४—भौंरासा (भेलसा) भित्ति-लेख। पं० ४, लि० नस्ख, भा० फारसी एवं अरबी। कलमा तथा औरंगजेब शाही का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९२, सं० २७।

५९५—हि० १०९५—भौंरासा (भेलसा) प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० नस्ख (विकृत) भा० अरबी एवं फारसी। औरंगजेब के शासन काल में एक मसजिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० २५।

५९६—हि० १०९६—सावरखेड़ा (मन्दसौर) भित्ति-लेख। पं० ४ लि० नस्तालीक, भा० फारसी। मस्जिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, सं० २२।

५९७—हि० १०९७—भौंरासा (भेलसा) भित्ति-लेख। पं० ६, लि० नस्ख, भा० अरबी अंतिम पंक्ति फारसी में। औरंगजेब के शासन काल में नवाब इस्लामखाँ की आज्ञा से मस्जिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० २१।

५९८—हि० १०९८—रन्नोद (शिवपुरी) पं० ३, लि० नस्तालीक, भा० फारसी। औरंगजेब के शासन काल में किसी जहव्वुर द्वारा दरवाजए नूरेदिल के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९ सं० ७।

५९९—हि० १००२—भौंरासा (भेलसा) प्रस्तर-लेख (वापी पर) पं० ३, लि० नस्तालीक, भा० फारसी। इस्लामखाँ के मकबरे के अहाते में एक कुए के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९२, सं० २४।

६००—हि० १००२—चन्देरी (गुना) भित्ति-लेख। पं० ६, लि० नस्तालीक,

भा० फारसी। औरंगजेब के शासन काल में आजमखाँ द्वारा एक कुआ एक बाग तथा एक मसजिद बनवाये जाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८०, सं० १७।

६०१—हि० ११०२—टियोडा (भेलसा) वापी-लेख। पं० १०, लि० नस्तालीक, भा० फारसी। औरंगजेब के शासन काल में टनोडा (त्योंडा) ग्राम-वासियों के लाभ के लिये जादोराय के पिता मुकन्दराम द्वारा एक बावड़ी के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८९, सं० ९।
यह वही बावड़ी है, जिसे संवत् १७५२ में जादोराय के पुत्र आनन्द राय ने पूरा किया और जिसका उल्लेख अभि० सं० ४६६ में है।

६०२—हि० ११११—चन्देरी (गुना) भित्ति-लेख। पं० ४-५-४ लि० नस्तालीक, भा० फारसी। दुर्जनसिंह बुन्देला द्वारा एक बाग के प्रदान किये जाने का तथा आलमगीर के शासन काल में एक मसजिद और एक कुए के निर्माण का तथा एक मकबरे बनवाये जाने का उल्लेख है। आलमगीर के शासन के ४५ वें वर्ष का भी उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८१, स० १५।

६०३—हि० ११२१—नाहरगढ़ (मन्दसौर) पं० ४, लि० नस्तालीक भा० फारसी, अब्दुलरहमान द्वारा मस्जिद के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत १९७०, सं० १८, १९।

६०४—हि० ११६५—गोहद (भिण्ड) प्रस्तर लेख। पं० ४, लि० नस्तालीक भा० फारसी। राणा छतरसिंह के शासन काल में एक कुआ तथा बगीचा बनने का आलेख है। किसी शासक के २३ वें वर्ष का भी उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८५, सं० ३६।

६०५—हि० १२२६—भरासा (भेलसा) प्रस्तर लेख। पं० ६, लि० नस्तालीक, भा० फारसी। ईदगाह की मरम्मत का आलेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९२ सं० २६।

६०६—हि० १२३२—चन्देरी (गुना) ईसाई मकबरे पर। पं० ४, लि० नस्तालीक, भा० फारसी। किसी यूनिस की मृत्यु का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१ सं० ७।

६०७—हि० १२८०—नरवर (शिवपुरी) भित्ति-लेख। पं० ३, लि० विकृत

नस्तालोक, भाषा फारसी तथा अरबी। शाहआलम द्वितीय के शासन काल में हिम्मत खाँ के पुत्र मोहम्मद खाँ द्वारा मस्जिद की नींव डालने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७१, सं० १२।

तिथि रहित अभिलेख–जिनमें ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम का उल्लेख है। जिलों के अनुसार।

(प्राप्ति स्थान भी अकारादि क्रम से दिये गये हैं)

अमझरा

६०८ सुबन्धु–बाघ-गुहा-ताम्र-पत्र। पं० १२, लि० गुप्त, भाषा संस्कृत। माहिष्मती (वर्तमान ओंकार मान्धाता) के राजा सुबन्धु द्वारा बौद्ध भिक्षुओं के पालन तथा बुद्ध पूजा के लिये दसिलकपल्ली ग्राम के दान का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९८५, सं० १। अन्य उल्लेखविक्रम स्मृति ग्रंथ, पृष्ठ ६४९ तथा चित्र, इण्डियन हिस्टोरिकलक्वार्टर्ली, भाग २१, पृष्ठ ७९। तिथि में केवल श्रावण मास रह गया है।

यद्यपि इसमें संवत् नष्ट हो गया है, फिर भी इससे माहिष्मती के राजा सुबन्धु का समय ज्ञात है। बड़वानी राज्य में गुप्त संवत् १६० का एक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है जो इसी सुबन्धु की माहिष्मती में जारी किया है। बड़वानी ताम्रपत्र के संवत् को कुछ विद्वान् गुप्त संवत मानते हैं और कुछ कलचुरी संवत् मानते हैं। इस प्रकार यह एक लिखित प्रमाण मिला है जिससे यह सिद्ध होता है कि बाघ के कुछ गुहा-मंडप सुबन्धु के समय विद्यमान थे। यह ताम्र-पत्र बाघ की गुहा नं० २ की सफाई करते समय संवत १९८५ में प्राप्त हुआ है और अब गूजरी महल संग्रहालय में सुरक्षित है।

उज्जैन

६०९–उदयादित्य–उज्जैन–प्रस्तर लेख। पं० २८, और एक सर्पबन्ध, लि० नागरी, भा० संस्कृत। इसमें महाकाल एवं उदयादित्य देव की प्रशंसा है। नागरी की वर्णमाला एवं व्याकरण सम्बन्धी नियम दिये गये हैं। ग्वा०पु० रि० संवत् १९७४, सं० २०। इसको सर्पबन्ध अथवा नाग-कृपाणिका भी कहते हैं।

६१०—जयवर्मदेव—उज्जैन ताम्रपत्र। पं० १६, लि० प्रा० नागरी, भाषा संस्कृत। वर्धमानपुर से परमार जयवर्मदेव द्वारा प्रचलित किया गया ताम्र पत्र। भा० सू० संवत १६५९। अन्य उ०: इ० ए० भाग० १६, पृष्ठ ३५० ए० इ० भाग ५ की कीलहार्न की सूची सं० ५२।

वंशवृक्ष—उदयादित्य, नरवर्मन, यशोवर्मन, जयवर्मन।

५११—नारायण—उज्जैन प्रस्तर लेख। पं० २०, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। यह एक बड़े अभिलेख का अंश है। जिसमें महाकाल एवं राजा नारायण तथा एक सन्यासी का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९५ सं० १।

इस अभिलेख की लिपि लगभग दसवीं शताब्दी की नागरी है। अन्य किसी प्रकार से इसके काल का अनुमान नहीं किया जा सकता।

६१२—निर्वाण नारायण—उज्जैन—प्रस्तर-लेख। पं० १४, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। निर्वाण नारायण (नरवर्मदेव परमार की उपाधि—दे० अ० स० ६५४) का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९२ सं० ५२। अन्य उल्लेख: नागरी प्रचारिणी पत्रिका (नवीन संस्करण) भाग १६ पृष्ठ ८७-८९ चित्र।

इस अभिलेख में अयोध्या के बाग, सरयू नदी, हिमालय तथा मलय पर्वत आदि की विजयों का वर्णन है। नाम केवल निर्वाण नारायण का है। किसी बड़े अभिलेख का अंश है।

६१३—परमार (वंश)—उज्जैन (उण्डासा) स्तम्भ-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। केवल परमार पढ़ा जाता है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९२, सं० ५६।

६१४—सिंहदेव—कमेड—विष्णुमूर्ति पर। पं० १, लि० नागरी, भाषा हिन्दी। अलीसाह के पुत्र सिंहदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९१, सं० २५।

६१५—देवीसिंह—उज्जैन (सिद्धवट)—प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। श्री राजा देवीसिंह जी देव तथा श्री राजा भजनसिंह जी देव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८३, सं० २३।

गिद

६१६—मिहिरकुल—ग्वालियर दुर्ग—शिलालेख। पं० ९ लि० गुप्त भा० संस्कृत। पशुपति के भक्त मिहिरकुल के शासन के १५ वें वर्ष मात्रिचेट द्वारा गोप-पर्वत पर सूर्यमन्दिर के निर्माण का उल्लेख। भा० सू० सं० १८६९ तथा २१०९, ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० ४३। अन्य उल्लेख जे० ए० सो० भाग ३०, पृष्ठ २६७, फ्लीटः गुप्त अभिलेख भाग ३, पृष्ठ १६२।

६१७—डूँगर सिंह—ग्वालियर दुर्ग। मूर्ति-लेख। पं० २१, लि० नागरी, भा० संस्कृत। उरवाई द्वार पर एक जैन तीर्थंकर की मूर्ति पर। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, सं० २०।

६१८—रामदेव—ग्वालियर दुर्ग—प्रस्तर-लेख। पं० ६+७=१३, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। अभिलेख दो द्वार-प्रस्तरों पर केवल आंशिक रूप से प्राप्त है। विशाख (स्वामी कार्तिकेय) के मन्दिर एवं आनन्दपुर के वाइल्लभट्ट एवं प्रतिहार रामदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ४३ व ४४।

६१९—कीर्तिपालदेव—तिलोरी। स्तम्भलेख। पं० ३०, लि० नागरी भा० संस्कृत। कीर्तिपाल देव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० २।

तिलोरी के स्तम्भ पर ही चार लेख हैं। संख्या १५५ पर संवत् १३४३ पढ़ा जाता है।

६२०—कीर्त्तिपालदेव—तिलोरी। स्तम्भ-लेख। पं० १, लि० नागरी, भा० संस्कृत। ऊपर लिखे स्तम्भ पर ही 'कीर्ति (पा) लदेवः, लिखा हुआ है। ग्वा० पु० रि० संवत १९७५, सं० ३।

६२१—श्री चन्द्र—ग्वालियर दुर्ग। जैन मूर्ति-लेख। पं० १ लि० नागरी, भा० संस्कृत पाठ=श्री चन्द्र (१) निकस्य। ग्वा० पु० रि० संवत १९८४ सं० ६।

६२२—तोमर—ग्वालियर दुर्ग। प्रस्तर-लेख। पं० २ लि० नागरी, भा० संस्कृत। एक तोमर योद्धा का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, सं० ६।

६२३—सबलसिंह—ग्वालियर दुर्ग। प्रस्तर-लेख। तेली के मन्दिर में है। पं० १, लि० नागरी, भा० हिन्दी। केवल राय सबलसिंह का नाम वाच्य है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४ सं० १७।

६२४ वहद—ग्वालियर (गूजरी महल संग्रहालय) प्रस्तर-लेख। पं० ८, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। विष्णु मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। निर्माता का नाम पा नहीं जाता है तथा अन्य वणिकों का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, सं० १। इस अभिलेख का प्राप्तिस्थान अज्ञात है।

६२५—शिवनन्दी—पवाया—मूर्तिलेख। पं० ६, लि० ब्राह्मी, भा० संस्कृत। यह अभिलेख स्वामि शिवनन्दी के राज्य के चौथे वर्ष में स्थापित मणिभद्र यक्ष की प्रतिमा के अधोभाग पर अंकित है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट सन् १९१५-१६।

इस अभिलेख की लिपि ई० प्रथम शताब्दी की मानते हैं! डा० जायसवाल शिवनन्दी का समय ई० प्रथम शताब्दी मानते हैं। "स्वामी' के विरुद का प्रयोग प्रकट करता है कि वह सम्राट् था। जायसवाल के मतानुसार वह अपने राज्य के चौथे वर्ष बाद कनिष्क से पराजित हुआ।

वह मूर्ति जिस पर यह अभिलेख है अब गूजरी महल संग्रहालय में है।

६२६—मिहिरभोज—सागर ताल—प्रस्तर लेख। पं० १७, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। मिहिरभोज प्रतिहार द्वारा नरकद्विप (विष्णु) के अन्तःपुर के निर्माण का उल्लेख। भा० सू० सं० १६६३। अन्य उल्लेख: आ० स० इ० वार्षिक रिपोट १९०३, ४. पृ० २८० तथा चित्र, ए० इ० भाग १८, पृ० १०७।

प्रतिहार वंश की उत्पत्ति—मेघनाद से युद्ध करते समय लक्ष्मण ने 'प्रतिहरण' किया अतएव वे 'प्रतिहार' कहलाये। उनसे चले वंश का नाम प्रतिहार पड़ा। नागभट जिसने बलच म्लेच्छों को हराया, उसके भाई का पुत्र कक्कुक या काकुस्थ, उसका छोटा भाई देवराव, उसका पुत्र वत्सराज जिसने भण्डिकुल से साम्राज्य छीना उसका पुत्र नागभट जिसने आन्ध्र, सैन्धव विदर्भ और कलिंग के राजाओं को जीता, चक्रायुध पर विजय पायी तथा वगाधिपति को नष्ट कर दिया एवं आनर्त मालव किरात, तुरुष्क, वत्स तथा मत्स आदि राजाओं

के गिरिदुर्ग छीन लिये। उसका पुत्र राम, उसका पुत्र मिहिरभोज जिसने वंग को हराया।

बालादित्य द्वारा विरचित।
देखिये पीछे सं० ८,९ तथा ६१८।

गुना

६२७—हरिराज प्रतिहार—कदवाहा, (हिन्दू मठ के अवशेष में प्राप्त) प्रस्तर-लेख। पं २९, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। गुरु धर्मशिव एवं प्रतिहार वंश के महाराज हरिराज का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९६८ सं० ६।

यह एक बहुत बड़े अभिलेख का अंशमात्र है। यह उन साधुओं के सम्बन्धित ज्ञात होता है जिनका उल्लेख रन्नोद के सं० ७५ के अभिलेख में है। इसमें जिस रणिपद्र का उल्लेख है वह रन्नोद के लेख का रणिपद्र रन्नोद) ही है। पुरन्दर गुरु ने रणिपद्र में तपस्या की थी, इसी परम्परा के धर्मशिव नामक साधु का उल्लेख है जिसने हरिराज को शिष्य बनाया। कदवाहा का यह मठ इन्हीं साधुओं का ज्ञात होता है। अभिलेख क्रमांक ६३३ तथा ३४ में प्रतिहारों की इस शाखा का वंश वृक्ष आया है। लिपि को देखते हुये यह अभिलेख ११ वीं शताब्दी विक्रमी के लगभग का ज्ञात होता है।

६२८—भीम—कदवाहा - प्रस्तर-लेख, हिन्दू मठ में प्राप्त। पं० २३, लि० नागरी, भा० संस्कृत। इसमें भी शैव साधुओं की परम्परा दी हुई है, परन्तु नाम ईश्वर शिव' का है। भीम भूप का भी उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० ३०। इस लेख का भीम भूप प्रतिहार वंश का राजा ज्ञात होता है।

६२९—पतंगेश—कदवाहा पं० ३८, लि० नागरी प्राचीन भा० संस्कृत। पतंगेश नामक साधु द्वारा शिव मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। आ० स० रि० वा० रि० १९३०-४, पृ० २०७। इसका प्राप्ति स्थल अज्ञात एवं सन्दिग्ध है।

श्री कदम्बगुहा निवासी मुनियों की प्रशंसा है, विशेषतः पतंगेश को। शिव मन्दिर की कैलाश से उपमा दी गई है, सुशिखरम् सर्वतः सुन्दरम् इन्द्रधामधवलम् कैलाशशैलोपमम्।

६३०—कीर्तिराज—कदवाहा प्रस्तर-लेख। हिन्दू मठ में प्राप्त। पं० ३२, लि०

प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। प्रतिहार रणपाल, वत्सराज, स्वर्णपाल, कीर्तिराज एवं उसके भाई उत्तम का उल्लेख है। ग्वा०पु०रि० संवत १९९६, सं० ३१,

इस अभिलेख के ऊपर दो पंक्तियाँ और हैं जिनमें बल्लाल देव और जैत्रवर्मन का उल्लेख है। संवत् और मास नष्ट हो गये हैं केवल बृहस्पतिवार शुक्ल पक्ष ७ दिखाई देते हैं।

मूल अभिलेख की लिपि १२ वीं शताब्दी विक्रमी की ज्ञात होती है और ये दो पक्तियाँ एक दो शताब्दी बाद की।

६३१—जयंतवर्मन या जैत्रवर्मन—कदवाहा। शिव मन्दिर पर भित्ति-लेख। पं० ३४ लि० नागरी भा० संस्कृत। एक राजा गोपाल के अतिरिक्त जयंतवर्मन (जिसे जैत्रवर्मन भी लिखा है) का उल्लेख है, जो ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० ३२।

इस अभिलेख में १६२६ का भी उल्लेख है, जो सम्भवतः विक्रमी संवत्सर का है।

६३२—अभयपाल—चन्देरी प्रस्तर लेख। पं० ८, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। महाराज हरिराज से लेकर अभयपाल तक प्रतिहार राजाओं का वंश वृक्ष दिया हुआ है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९७, सं० ३।

इस अभिलेख की लिपि १२ वीं शताब्दी की ज्ञात होती है, इसमें हरिराज, भीम, रणपाल वत्सराज तथा अभयपाल के नाम दिये हैं।

६३३—जैत्रवर्मन—चन्देरी प्रस्तर-लेख। पं० ३२, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। प्रतिहार वंशावली दी हुई है। ग्वा० सू० सं० २१०७ गाइड टु चन्देरी पृष्ठ ८ इसके अनुसार प्रतिहार वंशावली-नीलकंठ हरिराज, भीमदेव रणपाल, वत्सराज, स्वर्णपाल, कीर्तिपाल, अभयपाल, गोविन्दराज, राजराज, बीरराज जैत्रवर्मन। कीर्तिपाल और कीर्तिदुर्ग, कीर्ति सागर तथा कीर्ति स्मारक मन्दिर के निर्माण का उल्लेख।

६३४—मुहम्मदशाह—चन्देरी=कूप लेख। पं० ७, लि० नस्ख भा० फारसी। मांडू के महमूद शाह खिलजी के शासन काल में एक मसजिद बनवाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० १२।

मास रमजान, वर्ष अवाच्य है।

६३५—मुहम्मद—चन्देरी कूप लेख। पं० १२, लि० नक्श भा० फारसी। मांडू के सुलतान मुहम्मद का उल्लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० ११।

६३६—मुहम्मद— चन्देरी। कूप-लेख। पं० २०, लि० नागरी, भा० संस्कृत। माण्डू के सुलतान मोहम्मद के काल में कुछ जैनों द्वारा बावड़ी बनवाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१. सं० १२।

६३७—चिमन खाँ— चन्देरी। प्रस्तर-लेख। पं० ९ लि० नस्ख, भा० फारसी। चिमन खाँ द्वारा बाग लगाये जाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१ सं० ३९।

चिमनखां का एक तिथियुक्त अभिलेख क्रमांक ३३२ सं० १५४७ विक्रमी का है।

६३८—औरंगजेब— चन्देरी-भित्तिलेख। पं० ३, लि० नस्तालिक, भा० फारसी। औरङ्गजेब के शासनकाल के ७ वे वर्ष में बावड़ी का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, सं० ३।

६३९—गयासखां खिलजी—चन्देरी। ईदगाह पर। पं० ७ लि० नस्ख, भा०, फारसी। सुलतान ग्यासखाँ खिलजी के शासनकाल में शेरखां द्वारा ईदगाह बनवाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० १२६।

६४०—विक्रमाजीतखीची—चाचोडा। समाधि लेख। पं० ८, लि० नागरो, भा० हिंदी। गुगौर के खीची वंश के महाराज लालसिंह के पौत्र महाराज धीरजसिंह जी के पुत्र श्री विक्रमाजीतसिंह खीची द्वारा गुसाई भीमगिरि की समाधि बनाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० ९।

६४१—बहादुरशाह—बारी। कूप लेख। पं० ११, लि० नस्तालीक, भा० फारसी। बहादुरशाह द्वारा, जिसने कालपी पर जीत का झण्डा फहराया, और लौटते समय तफरीहन चन्देरी आया उसके द्वारा बावड़ी बनवाने का उल्लेख हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९३, सं० ३।

६४२—कीरसिंह— मामौन। स्तम्भ-लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत। कीरसिंह और वीरदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, सं० १३।

६४३—मुहम्मद खिलजी—चन्देरी कूप लेख। पं० २६, लि० नागरी, भा० संस्कृत अस्पष्ट है। मालवे के मोहम्मद खिलजो अथवा उसके पुत्र के काल में बावड़ी के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० २६।

भिण्ड

६४४—भदौरिया—अटेर। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। [.....] देव भदौरिया द्वारा कूप निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९८६, सं० ५। बुधवार, मार्ग सुदी १०।

भेलसा

६४५ चन्द्रगुप्त द्वितीय—उदयगिरि-गुहालेख। पं० ५ लि० गुप्त, भा० संस्कृत। कौत्स गोत्रीस शाव वीरसे द्वारा शिव गुहा के निर्माण का उल्लेख है। भा० सू० सं० १५४१ ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, सं० ७९। अन्य उल्लेख: आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५१; इ० ए० भाग ११, पृ० ३१२; फ्लीट: गुप्त अभिलेख ३५।

संधिविग्रहिक शाव, जो वीरसेन भी कहलाता था और जो शब्द, अर्थ न्याय और लोक का ज्ञाता पाटिलपुत्र का रहनेवाला था, वह इस देश में राजा के साथ स्वयं आया और भगवान शिव की भक्ति से प्रेरित होकर उसने यह गुहा बनवाई। चन्द्रगुप्त को पराक्रम के मूल्य से खरीदकर अन्य राजाओं को दासत्व की शृंखला में बाँधने वाला लिखा है।

६४६—महासामन्त सोमपाल—उदयगिरि अमृत-गुहा से एक खम्भे पर। पं० ३, लि० नागरी भा० विकृत संस्कृत। महासामन्त सोमपाल का उल्लेख है ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, सं० ८३।

६४७—चाहिल—उदयगिरि = अमृतगुहा में एक खम्भे पर। पं० २ लि० नागरी भा० संस्कृत विकृत। महासामन्त सोमपाल का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९७४ सं ८३।

६४८—दामोदर जयदेव राजपुत्र—उदयगिरि। अमृत गुहा में स्तम्भ लेख। पं० २, लि० नागरी भा० संस्कृत। दामोदर जयदेव राजपुत्र का उल्लेख ग्वा० पु० रि० संवत १९७२, सं० ८५।

६४९—उदयादित्य—उदयपुर = (उदयेश्वर मन्दिर की पूर्वी महराव पर) स्तम्भ लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० संस्कृत। उदयादित्य द्वारा उदयपुर नगर की स्थापना तथा उदयेश्वर मन्दिर एवं उदय समुद्र झील के निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९७१, सं० १११।

६५०—उदयादित्य—उदयपुर (चदुआ) गेट के पास (प्राप्त) पं०

२४ लि० नागरी, भा० संस्कृत। विष्णु मन्दिर के निर्माण के उल्लेख के साथ मालवा के परमारों का बिस्तृत वंश-वृक्ष दिया हुआ है। भा० सू० सं० १६५७; ग्वा० पु रि० संवत् १९७४, सं० १०२। अन्य उल्लेख: ए० ई० भाग १, पृ० २२२।

इस प्रशस्ति के अनुसार परमार वंश-वृक्ष—उपेन्द्रराज, उसका पुत्र वैरिसिंह प्रथम, उसका पुत्र सीयक, उसका पुत्र वाक्पति प्रथम, उसका पुत्र वैरिसिंह वज्रट (द्वितीय), उसका पुत्र श्री हर्ष जिसने राष्ट्रकूट राजा खोट्टिग को हराया, उसका पुत्र वाक्पति द्वितीय जिसने त्रिपुरि के युवराज द्वितीय को हराया, उसका छोटा भाई सिन्धुराज, उसका पुत्र भोजराज और फिर उदयादित्य।

अर्बुद पर्वत (आबू) पर जब विश्वामित्र ने वशिष्ठ मुनि की गौ छीन ली तब उन्होंने अग्नि कुण्ड से एक वीर उत्पन्न किया, जिसने शत्रु का संहार कर गौ लौटा ली। वशिष्ठ ने उसे "परमार" राजाओं का पति होने का वरदान दिया है। उसी परमार के वंश में उपेन्द्र हुआ। (पं० ५, ६ ७ का भाव) (इस अभिलेख को 'उदयपुर प्रशास्ति' कहते हैं।)

६५१—उदयादित्य—उदयपुर (चढुआ द्वार के पास एक ढीमर के मकान में मिले एक प्रस्तर-खण्ड पर) पं० २७, लि० नागरी, भाषा संस्कृत। इस अभिलेख में परमार राजाओं का वंश-वृक्ष उदयादित्य तक दिया हुआ है। उदयादित्य के हाथ से डाहिल अर्थात् चेदि के राजा (डाहिलाधीश) के संहार का उल्लेख है तथा नेमक वंश के दामोदर द्वारा मन्दिर बनवाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८९, सं० १६।

यह अभिलेख ऊपर के अभिलेख क्रमांक ६५२ का आगेका भाग है।

६५२—नरवर्मदेव—उदयपुर, बीजा मण्डल मस्जिद में एक स्तम्भ-लेख। पं० २६, लि० नागरी भा० संस्कृत। चर्चिकादेवी और परमार नरवर्मदेव उपनाम निर्वाणनारायण का उल्लेख है। भा० सू० सं० १६५८; ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, सं० ५६। अन्य उल्लेख:प्रा० रि० ए० सो० वे० स० १९१३—१४, पृ० ५९।

६५३—तत्रवाल गौडान्वय—उदयपुर (उदयेश्वर मन्दिर पर) पं० २ लि० नागरी, भा० संस्कृत। तत्रपाल गौडान्वय का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, स० ११९।

६५४—देवराज—उदयपुर (उदयेश्वर मन्दिर का प्रस्तर-लेख) पं० १, लि० नागरी भा० हिन्दी। किसी दान का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८५, सं० १०।

६५५—देवराज—(गंडवंशीय) उदयपुर (बीजामंडल मस्जिद में प्रस्तर-लेख) पं० ४, लि० नागरी भा० संस्कृत। गंडवंशीय राज्य देवराज का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७० सं० २।

६५६—भर्तृसिंह—उदयपुर (बीजामंडल मसजिद पर स्तम्भ-लेख) पं० ३ लि० नागरी भा० संस्कृत। राजा श्री भर्तृसिंह का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, सं० ४।

६५७ राजा सूर्यसेन—उदयपुर (बीजामंडल मस्जिद पर) स्तम्भ-लेख, प० २६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। राजा सूर्यसेन तथा ठाकुर श्री माधव तथा चन्द्रिका देवी का उलेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७० सं० १।

६५८—वैरिसिंह—उदयपुर-प्रस्तर लेख। पं० १३, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। खंडित एवं आंशिक रामेश्वर चण्डी, (से) वादित्य और वैरिसिंह का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, सं० १०।

६५९—चामुण्डराज—ग्यारसपुर—हिण्डोला तोरण के निकट खुदाई से प्राप्त प्रस्तर लेख। पं० २, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। आंशिक रूप में प्राप्त है।

'श्रीमच्चामुण्डराज" के 'पादपद्मोपजीवो' महादेव एवं दुर्गादित्य का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० २,

६६०—महेन्द्रपाल—ग्यारसपुर—हिण्डोला तोरण के निकट खुदाई में प्राप्त प्रस्तर लेख। पं० ३८ लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। आंशिक रूप में प्राप्त लेख है इसमें शिवगण, चामुण्डराज, महेन्द्र या महेन्द्रपाल का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८९, सं० १ तथा चित्र सं० ५।

सूत्रधार साहिल द्वारा अङ्कित।

लिपि-शास्त्र से १० वीं सदी का ज्ञात होता है।

६६१—जयत्सेन—पठारी—सप्त मातृकाओं की मूर्ति के पास। पं० ९, लि० गुप्त, भा० संस्कृत। 'विषयेश्वर महाराज जयत्सेनस्य" 'उल्लेख है'

'भगवत्यो मातरः' भी है। केवल 'शुक्ल दिवसे त्रयोदश्यां' लिखा है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, सं० १५।

६६२—भागभद्र—बेसनगर। खामबाबा स्तम्भ-लेख। पं० ७, लि० ब्राह्मी, भा० प्राकृत। देवाधिदेव वासुदेव को गरुड़ध्वज तक्षशिला निवासी दिय के पुत्र भागवत हेलियोदौर जो महाराज अन्तलिकित के यवन (ग्रीक) राजदूत होकर विदिशा के महाराज कासी के पुत्र प्रजापालक भागभद्र के समीप, उनके राज्यकाल के १४ वें वर्ष में आया था। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ६६। अन्य उल्लेखः ज० रा० ए० सो १९०९ पृ० १०५३; आ० सि० इ० वार्षिक रिपोर्ट सन् १९१३—१४ पृ० १८६; इ० ए० भाग १०, लूडर की सूची सं० ६६९।

इस स्तम्भ लेख के नीचे दो पंक्तियाँ और दी हुई हैं जिनमें स्वर्ग प्राप्त करने की तीन अमृत पद = दम, त्याग एवं प्रमाद बतलाये गये हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४ सं० ६७।

६६३—भागवत—बेसनगर - स्तम्भ - लेख। पं० ७, लि० ब्राह्मी, भा० प्राकृत। गौतमी पुत्र भागवत द्वारा वासुदेव के प्रासादोत्तम (श्रेष्ठ मन्दिर) में महाराज भागवत के बारहवें वर्ष में गरुड़ध्वज बनवाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ७० तथा संवत् १९८४, सं० १२८। अन्य उल्लेख: इ० ए० भाग १०, कीलहार्न की सूची सं० ६६९; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट सन् १९१३ - १४ पृ० १९०, भाग २३ पृ० १४४।

६६४—विश्वमित्र—बेसनगर। मुद्रालेख। पं० १ लि० ब्राह्मी, भा० संस्कृत। महाराज श्री विश्वामित्रस्य स्वामिनः का उल्लेख। भा० सू० सं० १८०७। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९१३-१४।

६६५—नृसिंह—मासेर। प्रस्तर-लेख। पं० ९+११ = २०, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। कलचुरि राजा को पराजित करने वाले शुल्की वंश के राजा नृसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८७, सं० १ व २।

लिपि विज्ञान की दृष्टि से यह दसवीं शताब्दी का लेख ज्ञात होता है। इसमें शुल्क वंश का वंशवृक्ष दिया हुआ है। भारद्वाज, उसका पुत्र श्री नृसिंह (इसे कृष्णराज के अधीन तथा कलचुरि राजाओं का विजेता लिखा है) उसका पुत्र केसरी या गुणाढ्य था। लाटराज तथा

एक कछवाहा राजा का इसके हाथ हारा जाना भी लिखा है। मुंज तथा चन्च (परमार) का तथा हूणों का भी उल्लेख है।

६६६—श्रीचन्द्र—भेलसा (दंडनायक) प्रस्तर-लेख। पं० १२, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। खंडित है, यह किसी राजा की प्रशस्ति है और "कार्गितेय दण्डनायक श्री चन्द्रेण "लिखा है। ग्वा० पु० रि० संवत् २०००, सं० २।

लिपि लगभग १२ वीं शताब्दी की है। रचयिता पं० श्री द्वित्रय है।

६६७—लाभदेव—भेलसा (पुतली घाट से लायी गयी, अब डाक बंगले में रखी शेषशायी की मूर्ति पर) पं० २, लि० नागरी, भा० संस्कृत। गौडान्वय श्री लाभदेव का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६ सं० ३।

६६८—रहमतुल्ला—भेलसा (मकबरे पर) पं० १, लि० नक्श, भा० फारसी। राजाओं के राजा रहमतउल्ला का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, सं० ११३।

६६९-शाहजहाँ—भौरासा (विन्दी वाली मस्जिद पर) पं० ९, लि नस्तालिक, भाषा फारसी। बादशाह शाहजहाँ के शासन-काल में मसजिद आदि बनवाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९९२, सं० १०।

६७०-औरंगजेब—मालगढ़ (बावड़ी में) पं० ११, लि० नस्तालिक, भा० फारसी। आलमशाह के लड़के बहादुरशाह द्वारा आलमगीर के शासन के चौथे साल में बावड़ी बनाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९८१, सं० ६।

बहादुरशाह कदाचित् औरंगजेब की ओर से शासक था और उसकी सीमा चन्देरी से कालपी तक थी। यह वही बावड़ी है जिसे पीछे नारोजी भिकाजी ने सं० १८१२ में दुबारा बनवाई, देखिये सं० ५०१।

मन्दसौर

६७१-पद्मसिंह—खोड़-प्रस्तर-लेख। पं० २०, लि० प्राचीन नागरी, भाषा संस्कृत। पद्मसिंह तथा तेजसिंह राजा एवं कुछ वणिकों के नाम आये हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ३७।

६७२–राजसिंह––जाट-ताम्रपत्र। लि० नागरी, भा० हिन्दी। महाराज राजसिंह द्वारा एक तिवारी ब्राह्मण को ३१ बीघे जमीन दान देने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १६८६, सं० १६ तथा पृष्ठ २०।

६७३–राणा जगतसिंह–जीरण (पंचमुखी महादेव मन्दिर में) पं० ६, लिपि नागरी भा० हिन्दी। राणा जगतसिंह तथा महादेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ७।

६७४–बदनसिंह—थूर-प्रस्तरलेख। पं० १६, लिपि नागरी, भाषा हिंदी। गैता के बदनसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ६।

६७५–रावत देवीसिंह–बिचोर-चीरे पर। पं० १६, लिपि नागरी, भाषा हिन्दी। श्री रावत देवीसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १६८६, सं० १८।

६७६—दौलतराव– भेसोदा प्रस्तर लेख)। पं० ३० लि० नागरी, भा० हिन्दी। महाराज दौलतराव शिन्दे का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १६७४, सं० ३।

६७७—दत्तसिंह—माकनगंज-प्रस्तर-लेख। पं० १४ लि० ७ या ८ वीं शताब्दी की प्राचीन नगरी, भा० संस्कृत। दत्तसिंह और उसके पुत्र गोपसिंह के नाम सहित मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत १९८६, सं० २०।

६७८ – यशोधर्मन—सौंदनी-स्तम्भ-लेख। पं० ९, लि० ब्राह्मी, भा० संस्कृत। मिसिर कुल द्वारा पादपद्म अर्चित कराने वाले यशोधर्मन की प्रशस्ति है। भा० सू० सं० १८७०; ग्वा० पु० रि० संवत १९७६ सं० २८। अन्य उल्लेखः इ. ए भाग १५, पृ० २६६। फ्लोटः गुप्त लेख, भाग ३, पृष्ठ १४६; ज० बो० ब्रा० रा० ए० सो० भाग २२ पृष्ठ १८८; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट सन् १९२२-२३ पृष्ठ १८५–१८७।

इस प्रशस्ति में यशोधर्मन की राज्य-सीमा लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) के महेन्द्र पर्वत तक, पश्चिमी समुद्र तथा हिमालय तक थी और उसके राज्य में वे प्रदेश भी थे जो गुप्तों और हूणों के अधीन भी नहीं रहे।

वासुल द्वारा रचित प्रशस्ति कक्कुल द्वारा उत्कीर्ण की गई।

६७९—यशोधर्मन—सौंदनी। स्तम्भ-लेख। पं० ९, लि० ब्राह्मी, भा० संस्कृत। ऊपर के अभिलेख युक्त, एक दूसरा स्तम्भ भी मन्दसौर में प्राप्त हुआ है जो खंडित है। फ्लीटः गुप्त लेख, भाग ३, पृष्ठ १४९। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० २६।

मुरैना

६८०से६९१ तक—रावल वामदेव-नरेसर। यह १२ अभिलेख नरेसर की मूर्तियों पर लिखे हुए हैं। पहिले मूर्ति का नाम और फिर 'वामदेव प्रणपति" लिखा है। जैसे "स्त्री देवी वैष्णवी रावल वम्वदेव प्रणमती" आदि। यह ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० २५ से ३३ तथा ३५ और ३६ पर उल्लिखित है। पीछे संवत् १२४५ का सं० ६३ अभिलेख देखिये।

६९२-पृथ्वीसिंह चौहान—मितावली। प्रस्तर-लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। पृथ्वीसिंह चौहान की प्रशंसा है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२ सं० ५०।

६९३-थानसिंह चौहान—मितावली। गोल मन्दिर का प्रस्तर लेख। पं० ६, लि० नागरी, भा० संस्कृत। थानसिंह चौहान का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ४७।

६९४-हमीरदेव चौहान—मितावली। प्रस्तर-लेख। पं० २. लि० नागरी, भा० हिन्दी। हमीरदेव का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९८, सं० ७।

६९५-कीर्तिसिंह—मितावली। प्रस्तर-लेख। पं० २, लि० नागरी भा० संस्कृत। महाराज कीर्तिसिंह देव तथा रामसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९८, सं० ११।

६९६—रामसिंह—मितावली। स्तम्भ लेख। पं० १५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। सूर्यस्तोत्र का एक पद तथा महाराज रायसिंह का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९०, सं० १४।

६९७—रायसिंह—मितावली। भित्तिलेख। पं० ७, लि० नागरी भा०, संस्कृत। सूर्य-स्तोत्र का एक पद तथा महाराज रायसिंह का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ४६।

६९८—वत्सराज—मितावली। भित्तिलेख। पं० २, लि० नागरी भा० हिन्दी। (१) देव के पुत्र वत्सराज का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, सं० ५१।

शिवपुरी

६९९—शाहजहाँ—करैरा। प्रस्तर-लेख। पं० २, लि० नक्श, भा० फारसी। शाहजहाँ के शासन-काल में सैयद सालार द्वारा मसजिद बनवाने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ६७।

७००—कर्णाटजाति—तेरही। स्तभ-लेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। कर्णाटों के विरुद्ध युद्ध में एक योद्धा के मरने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० १०७।

७०१—वत्सराज—महुआ। स्तम्भ-लेख। पं० ४ लि० कुटिल, भा० संस्कृत। शिव मन्दिर के निर्माण का उल्लेख तथा उदित के पुत्र वत्सराज का उल्लेख है। भा० सू० सं० २१०८; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१ सं० २८। लगभग सातवीं शताब्दी का अभिलेख।

वंशावली - आर्यभास व्याघ्रभएड, नागवर्धन, तेजोवर्धन, उदित और उसका पुत्र वत्सराज।

कान्यकुब्ज (कन्नौज) के ईपाणभट्ट द्वारा रचित, रविनाग द्वारा उत्कीर्ण।

७०२—अवन्तिवर्मन—रन्नोद। खोखई मठ में प्रस्तर लेख। पं० ६४. लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। कुछ शैव साधुओं का उल्लेख है और मत्तमयूरवासी अवन्ति अथवा अवन्तवर्मन राजा का भी उल्लेख है। भा० सू० सं० १८७२; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१ सं० २५। अन्य उल्लेख: ए. इ. भाग १. पृ० ३५४; आ० स० इ० रि० भा० २ पृ० ३०५ पर कनिंघम ने इसका अशुद्ध आशय दिया है।

शिवजी ने एक बार ब्रह्मा को प्रसन्न किया, जिसके परिणामस्वरूप मुनियों का वंश चला। इसमें कदम्बगुहा वासी एक मुनि उनके शंखमठिकाधिपति नामक मुनीन्द्र हुए फिर तेरम्बिपाल हुए, फिर आमर्दक तीर्थनाथ, उसके बाद पुरन्दर हुए। जब राजा अवन्ति या अवन्तिवर्मन ने पुरन्दर के यशोगान को सुना और उसे शैवमत की दीक्षा लेने की इच्छा हुई तो उसने पुरन्दर को अपने राज्य में लाने का संकल्प किया। वह उपेन्द्रपुर गया और मुनि को ले आया तथा शैवमत की दीक्षा लेली। पुरन्दर ने राजा के नगर मत्तमयूर में एक मठ की स्थापना की और दूसरे मठ की स्थापना रणिपद्र (रन्नोद) में की। इस मुनिवंश में फिर कवचशिव हुए। उनके शिष्य सदाशिव और उनके उत्तराधिकारी हृदयेश हुए, जिनके शिष्य व्योमशिव (व्योम शम्भु या व्योमेश)।

इन तपस्वी व्योमेश ने रणिपद्र को अपूर्व गौरव प्रदान किया, मठ का पुननिर्माण कराया, मन्दिर बनवाया और तालाब बनवाया। इसमें उक्त वापी (तालाब) के पास पेड़ लगाने का निषेध है। मठ में खाट पर सोने या मठ में रात्रि के समय स्त्री को रहने देने का निषेध है।

अभिलेख को रुद्र ने पत्थर लिखा जेज्जक ने खोदा, देवदत्त ने रचा और उसके पुत्र हरदत्त ने पत्थर पर लिखा। (वर्णित)।

इस अभिलेख का 'तेरम्बि' वर्तमान तेरही और 'कदम्बगुहा' कदवाहा है।

७०३—औरंगजेब—रन्नोद। कूप-लेख। पं० १, लि० नागरी, भा० हिन्दी। औरंगजेब का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० ६।

७०४—आसल्लदेव—नरवर। एक कुँजड़े के घर में मिला प्रस्तर-लेख। पं० १८, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। पत्थर कटा मिल गया है परन्तु उत्कीर्णक ने अधूरा ही खोदा है और कुछ भाग उखड़ भी गया है। जज्वपेलि वंश का वंश-वृक्ष आसल्लदेव तक दिया है। और जिसके पिता नृवर्मन ने धार के दम्भो राजा से चौथ वसूल की थी। गोपाचल दुर्ग के इक माथुर कायस्थ वंश के भुवनपाल, वासुदेव और दामोदर भुवनपाल धारा के राजा का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, सं० १।

७०५—औरंगजेब—नरवर। शाही मसजिद में प्रस्तर-लेख। पं० ३. लि० नक्श. भा० फारसी। औरंगजेब के शासन में अहमदखां द्वारा मसजिद के के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० १००।

७०६—शाहआलम—नरवर। ईदगाह में प्रस्तर-लेख। पं० ३ लि० नक्श, भा० फारसी। शाहआलम के राज्य में ईदगाह बनाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ९६।

७०७—रामदास—पुरानी शिवपुरी। स्तम्भ-लेख। पं० १८, लि० नागरी, भा० हिन्दी। हुकुम फरमातु श्री पति साही' इन शब्दों से अभिलेख प्रारम्भ होता है और रामदास का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० ५८।

इसके साथ हिजरी सन् १०५० का संख्या ५८१ का अभिलेख भी दृष्टव्य है, जो इसी स्तम्भ पर ऊपर है। उस समय ऐसे आदेश दो भाषाओं में फारसी और हिन्दी में लिखे जाते थे, ऐसा ज्ञात होता है।

श्योपुर

७०८—नागवर्मन—हासिलपुर। स्तम्भ-लेख। पं० १३, लि० गुप्त, भा० संस्कृत। नागवर्मन के राज्यकाल का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० २१।

तिथि रहित ब्राह्मी गुप्त एवं शालि लिपियों के लेख।

गिर्द

७०९—पवाया—प्रतिमा-लेख। पं० २, लि० ब्राह्मी, भा० संस्कृत। पाठ "१ देयधर्म २ रा [ज्य] [दद्धा] देवस्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१ सं०, २।

७१०—पवाया—ईंट पर लेख। पं० २, लि० गुप्त, भा० संस्कृत। कारीगर या दाता गंगादत्त के पुत्र सोमदत्त का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९०, सं० २।

७११—पवाया—मूर्ति-लेख। पं० २, लि० गुप्त, भा० संस्कृत। पाठ-नमोभगवते वि[—] म [प्र] तिम स्थापित भगव (तो) ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० ३१।

७१२—पवाया—मूर्ति-लेख। पं० २, लि० गुप्त, भा० संस्कृत। पाठ १ देयधर्म २ देवस्य ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० ३२।

भेलसा

७१३—उदयगिर—गुहा नं० ६ की छतपर। पं० १, लि० गुप्त, भा० अज्ञात। कारीगर का नाम। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, सं० ९।

७१४—उदयगिर—गुहा नं० १ की छत पर। पं० ६, लि० गुप्त, भा० संस्कृत। सि [शि] [वा] दित्य नामक व्यक्ति का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, सं० ५।

७१५—बेसनगर—बौद्ध स्तूप की वेदिका के उष्णीष-प्रस्तर पर। पं० १, लि० गुप्त ब्राह्मी, भा० प्राकृत। पाठ-असमाय दानं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ११९ तथा संवत् १९७४ सं० ७।

७१६—बेसनगर—बौद्ध स्तूप की वेदिका के उष्णीषप्रस्तर पर। पं० १, लि० ब्राह्मी भा० प्राकृत। पाठ [वत या वध] मानस भिखुनो सोमदास भिखनो दानं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० १२० तथा १९७४ सं० ७२। अन्य उल्लेख: ए० इ० भाग ५

७१७—बेसनगर—बौद्ध स्तूप की वेदिका-स्तम्भ पर। पं० १, लि० ब्राह्मी, भा० प्राकृत। पाठ-धर्मगिरिनो भिखनो दा [न] ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० १२२ तथा संवत् १९७४ सं० ७४। लूडर्स लिस्ट सं० ६७३ [इ० ए० भाग १०] आ० स० इ० रि० १० पृ० ३९।

७१८—बेसनगर—बौद्ध स्तूप की वेदिका की सूची पर। पं० १, लि० ब्राह्मी भा० प्राकृत। पाठ - समिकाय दानं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४ सं० १२३ तथा संवत् १२७४, सं० ७५।

७१९—बेसनगर—बौद्ध स्तूप की वेदिका पर। पं० १, लि० ब्राह्मी भा० प्राकृत। पाठ - नदिकाय प्रवजित [ता] य दानं। ग्वा. पु. रि० संवत् १९८४ सं० १२४ तथा संवत् १९७४ सं० ७६। लूडर्स लिस्ट सं० ६७४ (इ० ए० भाग १०) आ० स० इ० रि०भाग १० पृ० ३९।

७२०—बेसनगर—बौद्ध स्तूप की वेदिका की सूची पर। पं० १, लि० ब्राह्मी, भा० प्राकृत। पाठ-असदेवस दानं। ग्वा०पु०रि० संवत् १९८४, सं०१२१।

७२१—बेसनगर—बौद्ध स्तूप की वेदिका के खंड पर। पं० १, लि० ब्राह्मी, भा० प्राकृत। पाठ 'पातमानस भिखुनो कुमुद सच भिखनो दानम्। आ० स० इ० रि०, भाग १०, पृ० ३८।

७२२—बेसनगर—बौद्ध स्तूप की वेदिका के स्तंभ पर। पं. १, लि. ब्राह्मी। अजामित्र के दान का उल्लेख। आ. स. इ. रि भाग १० पृ. ३९, लूडर्स लिस्ट सं. ६७२ ६७१)।

७२३—भेलसा—प्रस्तर-लेख। पं० ६, लि. गुप्त, भा० संस्कृत। प्रस्तर दोनों ओर से टूटा हुआ है, पानी की टंकी की नींव में मिला है। किसी तालाव का वर्णन है जो अनेक वृक्षराजि से शोभित था तथा पक्षियों के कलरव से गुञ्जित था। ग्वा० पु० रि० संवत् २००० सं० १।

—०—

मन्दसौर

७२४—सौंदनी—यशोधर्मन के खंभे पर पं० १, लि० गुप्त, भा० संस्कृत। एक दान का उल्लेख है। ग्वा. पु. रि. संवत् १९७९ सं० ३०।

शिवपुरी

७२५ सेसई—स्मारक-स्तम्भ। पं० ३. लि० गुप्त, भा० संस्कृत। कुछ ब्राह्मण युवकों का किसी युद्ध में मारे जाने और उनकी माता के दुख में जल मरने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० ३७।

शेष तिथि रहित अभिलेखों में से कुछ महत्त्वपूर्ण

जिलों के अनुसार

उज्जैन

७२६—उज्जैन—प्रस्तर-लेख पं० ४ लि० नागरी भा० संस्कृत। बहुत बड़े लेख का एक अंश मात्र है। छन्दों के संख्या सूचक अंक २७३ से ज्ञात होता है कि पूरी प्रशस्ति में इससे अधिक छंद थे। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, सं० ४७ (पाठ) तथा संवत् १९९२ संख्या ५४। अन्य उल्लेख, नागरी प्रचारिणी पत्रिका (नवीन संस्करण) भाग १६ पृ० ८७—८६ (चित्र)।

७२७—उज्जैन—प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० संस्कृत। बड़े लेख का एक अंश मात्र। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, सं० ५३। अन्य उल्लेख ना० प्र० पत्रिका (नवीन संस्करण) भाग १६ पृष्ठ ८७—८६ (चित्र)।

७२८—भैरोगढ़—भैरव मन्दिर में प्रस्तर लेख। पं० ६ लि० नागरी भा० हिन्दी। श्री महाराज भेरुजी, श्री गिरधर हरजी और काशी विश्वनाथ जो के नाम वाक्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, सं० २५।

७२९—गजनी खेडी—स्तम्भ-लेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० संस्कृत। पंडित उद्धव का, एवं केशव द्वारा चामुन्डदेवी की प्रशंसा का अंकन है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, सं० १०७।

७३०—गजनीखेडी—चामुन्ड देवी के मन्दिर में स्तम्भ-लेख। पं० ४, लि०

नागरी, भा० संस्कृत। चामुन्डदेवी की वन्दना। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३ सं० १०६।

७३१—गन्धावल—सती-स्तम्भ-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० हिन्दी। हेमलता के सती होने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ४१।

गिर्द

७३२—अमरौल—सती-स्तम्भ-लेख। पं० १२, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। केवल वल्लनदेव तथा रुपकुंअर के नाम वाच्य। सम्भवतः वे सती तथा उसके पति हैं। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९९, सं० ५।

७३३—ग्वालियर गढ़—लक्ष्मण द्वार तथा चतुर्भुज मन्दिर के बीच भित्ति-लेख। पं० ६० लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत। गणेश स्तुति प्रायः अवाच्य। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ४।

७३४—चैत—स्तम्भ लेख, पं० ५, लि० प्राचीन नागरी, भा० संस्कृत पद्मसेन के शिष्य वृषभसेन द्वारा मूर्ति स्थापना का उल्लेख। पं० कनकसेन तथा उनके शिष्य विजयसेन का उल्लेख। कुछ नाम अस्पष्ट शुक्रवार फाल्गुन बदि २। साल गायब है. ग्वा० पु० रि० संवत् १९९०, सं० ५।

गुना

७३५—कदवाहा गढ़—प्रस्तर-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० प्राकृत। किसी बड़े अभिलेख का अंश है। कदवाहा एवं जिला चन्देरी का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, सं० ५।

७३६—कदवाहा गढ़—प्रस्तर-लेख। पं० १, लि० नागरी, भा० हिन्दी। शिवभक्त यात्री मंजुदेव का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत १९९६ सं० १८।

७३७—नाडेरी—सती-लेख। पं० ५, लि० नागरी, भा० संस्कृत, सती का उल्लेख। वि० सं० ६६। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८?, सं० २५।

अक्षरों के लिखने के ढंग से आलेख अलग ५. ६ शताब्दी पुराना लगता है। इस पर खुदे हुए दृश्य से यह ज्ञात होता है कि यह स्मारक उस आदमी का है जो सिंह द्वारा मारा गया।

७३८–बजरंगगढ़—स्तम्भ-लेख। पं० ७, लि० नागरी, भा० संस्कृत। ईश्वर नामक व्यक्ति द्वारा विष्णु-मन्दिर-निर्माण का उल्लेख। लिपि से लगभग १० वीं शताब्दी का प्रतीत होता है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, सं० ६६।

भेलसा

७३९—अमेरा—प्रस्तर-लेख। पं० ४, लि० नागरी, भा० संस्कृत। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत १९८०, सं० २।

संवत् ११५१ के सं० ५७ के अभिलेख वाले पत्थर पर ही यह पंक्तियां अंकित हैं और अक्षरों को देखते हुए समकालीन ज्ञात होती है।

७४०—उदयपुर—उदयेश्वर मन्दिर में भित्ति लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० हिन्दी (स्थानीय)। एक दंड व्यवस्था सम्बन्धी आलेख। एक गधा तथा एक स्त्री अंकित हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० १७।

७४१_ उदयपुर—बीजामंडल प्रस्तर-लेख। पं० ८, लि० ११ वीं सदी के लगभग की नागरी, भा० संस्कृत। सूर्य की भावात्मक प्रसंशा। अधूरा। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७७, सं० ४।

७४२ _ग्यारसपुर—बुद्ध-मूर्ति-लेख। पं० १, लि० प्राचीन नागरी भा० संस्कृत। तथागत बुद्ध का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संस्कृत १९९२, सं० ३५।

७४३—भेलसा—प्रस्तर-लेख। पं० १८, लि० १० वीं शती की नागरी, भा० अंशतः प्राकृत एवं अंशतः संस्कृत। भाईल्लस्वामी (भिलास्मि) सूर्य जिनके नाम पर भेलसे का नाम पड़ा, की प्रशंसा। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, सं० २५।

७४४—भेलसा_मूर्ति-लेख। पं० २, लि० नागरी, भा० संस्कृत विकृत श्री वलदेव १ द्वारा मूर्ति निर्माण का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, सं० २।

७४५_भेलसा_बीजा मंडल में स्तम्भ-लेख। पं० २, लि० नागरी, भा० संस्कृत। रत्नसिंह यात्री का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० सं० १९७४, सं० ६१ व ६२।

७४६—भेलसा—बीजा मंडल संवत् स्तम्भ-लेख। पं० ३, लि० नागरी, भा० संस्कृत देवपति नामक यात्री का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, सं० ६३ (मसजिद)

७४७—भेलसा—गन्धी दरवाजे के सामने स्तम्भ-लेख। पं० ३, लि० नस्तालिक भा० फारसी। कोलियों से बेगार न लेने की शाही का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, सं० ११५। जनश्रुति यह है कि यह आज्ञा आलमगीर ने खुदवाई है।

भिन्ड

७४८—इटौरा—स्तम्भ-लेख। पं० ४ लि० नागरी, भा० हिन्दी। खुजराहा और लारस खेड़ी के बीच संजीवनी बूटी होने का उल्लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५ सं० ६।

मन्दसौर

७४९—खोड— स्तम्भ-लेख। पं० १३, लि० नागरी भा० हिन्दी। इसमें सूर्य, चन्द्र तथा गाय को अपने बछड़े को चाटते हुए आकृतियाँ है। लेखन भौंडा अथवा अस्पष्ट। प्रतीत होता है मानो किसी भूमि के दान का तथा उसके छीनने के विरुद्ध शपथों का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, सं० ३६।

७५०—ठकुराई— सती स्तम्भ-लेख। पं० ४ लि० नागरी, भा० हिन्दी। अर्जुन नामक ब्राह्मण की इन्द्रदेवी नामक पत्नी के सती होने का उल्लेख। स्मारक गोपसुत उपाध्याय ने बनवाया। ज्येष्ठ सुदि , १ ६ वि० ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, सं० २२।

———

परिशिष्ट १

प्राप्ति-स्थान अकारादि क्रम से

नाम-स्थल	जिला	प्राप्त हुए अभिलेख की संख्या
अकेला	गुना	१८२.
अचल	अमझरा	४१८.
अटेर	भिन्ड	४३८, ५१०, ५१५, ६४४.
अफजलपुर	मन्दसौर	३६२.
अमझरा	अमझरा	५०७, ५०८.
अमरकोट	शाजापुर	५३८.
अमेरा	भेलसा	५७.
ईंदौर	गुना	५, ७, ६४, १५६
उज्जैन	उज्जैन	२१, २२, २५, ३५, ६८, ६९, ७०, २४२, २७८, २७९, ३२२, ३३३, ३३४, ३९७, ४०२ ५२८, ५३१, ५४२, ५४४, ५५६ ५७४ ५८७, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३ ६१५.
उदयगिरि	भेलसा	३८, ५३८, ५४० ५५१, ५५२, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ७१३, ७१४.
उदयपुर	भेलसा	४३, ५१, ८२, ८३, ८६, १०२ १०३, १०४, १०७, १०९, ११७, १८०, १८८, २१४ २१९, २२३, २२४, २२५, २२९, २३७, २६३, ३२७, ३३८, ३६६, ३७२, ४०६ ४२०, ४२९, ४३२, ४३३, ४३९. ५२१ ५५५, ५६४, ५७०, ५८५ ५८६, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२ ६५३ ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ७४०, ७४१.
उटनबाद	श्योपुर	४००, ४४८, ४७९, ५०४, ५२७.
कचनार	गुना	५१९.

परिशिष्ट २

मूल स्थानों से हटे हुए अभिलेखों के
वर्तमान सुरक्षा स्थान

इण्डियन म्यूजियम,	कलकत्ता	६१६
इण्डिया ऑफिस,	लन्दन	२१
गूजरीमहल संग्रहालय,	ग्वालियर	१, २, ३, ११, २३, ३२, ३५ ३७ ४६, ५४, ५७, ६२, ६६, ९३, ६४, ९७, ११०, १२२, १२४, १३०, १३२, १४०, १४१, १५०, १६२, १६३, १७३, ३०२ ३०८, ४७२, ५५३, ५५९, ५६५, ५६६, ५६८, ५७२, ६०८, ६११, ६१८, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३० ६३२, ६३३, ६३४, ६५०, ६५१, ६६०, ६६३, ६६५, ६७१, ६८०, ६९१, ७०४, ७०८, ७१०, ७१६. ७१७, ७१८, ७१९, ७२, ७२१, ७२२, ७२३, ७२५, ७४२.

नरवर (मालवा) के जागीरदार साहब के पास—२२.

प्रान्तीय संग्रहालय लखनऊ—६१.

भास्कर रामचन्द्र भालेरावजी (ग्वालियर) के पास—३९.

भेलसा डाक बँगला संग्रहालय, भेलसा—८९, ६६६ ६६७, ७४३.

महाकाल संग्रहालय, उज्जैन—६१, २७८ ३३४, ५७४, ६१४.

मिस वी० फीलोज ग्वालियर के पास—४

रॉयल एशियाटिक सोसायटी लन्दन—६८, ७०, ६१०.

सूर्यनारायणजी व्यास, उज्जैन के पास—६१२, ७२६, ७२७.

—०:०—

परिशिष्ट ३

भौगोलिक नाम

→←

—०॥०—

परिशिष्ट ४

प्रसिद्ध राजवंशों के अभिलेख

औलिकर ४, ६७८, ६७६

कच्छपघात २०, ५४, ५५, ५६, ६१, ६५, १२९, ४४१, ४४२, ४४३, ५०९, ५११ ५१६, ६६५.

कलचुरि ६६५.

गुप्त १, २, ३, ३८, ५५१, ५५२, ५५३, ६४५-

गुहिलपुत्र (गुहिलोत) २६, २७, २८, २९, ३०, ३१.

चंदेल ५४, १३३, १३९.

चाहमान २७, चौहान ६९२, ६६३, ६९४, खींची चौहान ५३६, ६४०.

चौलुक्य ६६, ८२, ८६.

जज्जपेल्ल १२२, १२८, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३९, १४०, १४१, १४९, १५२ १५७, १५८, १५९, १६३, १६४, १७२, १७४, १७५, १७७, २२२, ७०२.

तोमर २५५, २७६, २७७, २८०, २८१, २८६, २९१, २६२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २६८, ३०७, ३१०, ३११, ३१२ ३१५, ६१७, ६२०, ६२२.

नाग ६२५,

परमार २१, २२, २५, ३५, ४२, ५१, ५७, ६८, ७०, ७५, ७८, ८८, ९५, ६६, १०२, १०४, ११७, १२६, १२७, १८०, ६०९, ६१०, ६१२, ६१३, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५५.

पेशवा ५०१, ५३०.

प्रतिहार ६, ८, ९, ४६, ९७, ११०, ६१८, ६२६

——

परिशिष्ट ५

व्यक्तियों के नाम

[अ = अज्ञात, रा = राजा, नि = निर्माण-कर्ता, शा = शासक, दा = दाता, ले = लेखक, उ = उत्कीर्णक, क = कवि, स = सती, जै = जैनाचार्य, या = यात्री]

———

ग्वालियर राज्य के अभिलेख : परिशिष्ट ६
ग्वालियर-राज्य
का
भूचित्र
स्थलों के प्राचीन नामों सहित
आकर